kanwhizztimes
@kanwhizztimes lucknow
@kanwhizztimes
www.kanwhizztimes.com

कैनविज टाइम्स

सिर्फ सच

❑ वर्ष-11 ❑ अंक-91 ❑ मंगलवार, 03 मई 2022 ❑ नगर संस्करण ❑ लखनऊ से प्रकाशित ❑ मूल्य- ₹ 3.00 ❑ पृष्ठ-12

राज्य सभा उनके जिन्दगी का नया अध्याय है। वह समाज सेवा कार्य जारी रखेंगे।

जंतर-मंतर की सभा से शुरु हुआ सफर आज राज्य सभा तक पहुंचा है। इसके लिए वह अरविंद केजरीवाल को धन्यवाद देते हैं। आप मुखिया ने उन्हें देश की सबसे बड़ी पंचायत में जाकर लोगों से जुड़ने और जनता के मुद्दे उठाने का मौका दिया। वह इस दायित्व की जिम्मेदारी पूर्वक निर्वहन करेंगे।

राघव चड्ढा

'काला साड़ी' गीत को मिले 50 लाख से ज्यादा व्यूज 12

पाकिस्तानी सिंगर के आरोप के बाद कनिका ने दिया जवाब, अपने गाने बूहे बारियाँ को बताया ओरिजिनल गाना 12

बधाई/सूचना

ईद-उल-फ़ित्र के मौके पर सभी सुधी पाठकों, विज्ञापनदाताओं, अभिकर्ताओं और शुभेच्छुओं को हार्दिक बधाई। इस अवसर पर कैनविज टाइम्स कार्यालय में 03 मई 2022 को अवकाश रहेगा, अतः अगला अंक 05 मई 2022 को प्रकाशित होगा।

प्रधान संपादक

संक्षेप

उपराष्ट्रपति ने ईद-उल-फितर की बधाई दी

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू ने ईद-उल-फितर की पूर्व संध्या पर देशवासियों को बधाई देते हुए सभी के जीवन में शांति, सौहार्द्ध और उल्लास की कामना की है। उपराष्ट्रपति नायडू ने सोमवार को जारी अपने शुभकामना संदेश में कहा, ल्ईद-उल-फितरके शुभ अवसर पर मैं अपने देशवासियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूं। उन्होंने कहा कि रमज़ान के पवित्र माह के पूरा होने के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला ईद-उल-फितर का त्यौहार ईश्वर के प्रति सच्ची श्रद्धा, परोपकार और आभार व्यक्त करने का उत्सव है। नायडू ने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि यह त्यौहार उदारता की भावना को सुदृढ़ करेगा और लोगों को एक-दूसरे के करीब लाएगा तथा उनको मित्रता, भाईचारे, प्रेम और आपसी सम्मान के सूत्र से जोड़ेगा।उपराष्ट्रपति ने कहा कि ईद-उल-फितर के इस त्यौहार से जुड़े पवित्र और महान आदर्शों से हमारे जीवन में शांति, सौहार्द्ध और उल्लास आएगा।

बलवंत सिंह राजोआना की फांसी को उम्रकैद में बदलने पर दो महीने में फैसला ले केंद्रः सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को निर्देश दिया है कि वह पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री बेअंत सिंह की हत्या के दोषी बलवंत सिंह राजोआना की फांसी को उम्रकैद में बदलने पर दो महीने में फैसला ले। जस्टिस यूयू ललित की अध्यक्षता वाली बेंच ने ये आदेश दिया। पहले की सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार ने कहा था कि राजोआना की फांसी को उम्रकैद में बदलने की मांग पर राष्ट्रपति को फैसला लेना है। 25 जनवरी, 2021 को सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार ने कहा था कि इस मामले का दूरगामी असर हो सकता है। केंद्र सरकार ने इस पर विचार करने के लिए और समय देने की मांग की थी। राजोआना करीब 26 सालों से जेल में है। 04 दिसंबर, 2020 को सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार से पूछा था कि वो राजोआना की सजा माफी का प्रस्ताव राष्ट्रपति के पास कब भेजेगी। चीफ जस्टिस ने कहा था कि केंद्र की यह दलील समझ से परे है।

तीन मई को एक साथ तीन पर्व पड़ने पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बेहद गंभीर

ईद व अक्षय तृतीया पर सड़कों पर ना हो कोई आयोजन : योगी

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। तीन मई को एक साथ तीन पर्व पड़ने पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी बेहद गंभीर है। अक्षय तृतीय, ईद तथा परशुराम जयंती के दौरान मंगलवार को मुख्यमंत्री योगी ने अफसरों को प्रदेश में किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना पर सख्ती करने का निर्देश दिया है। टीम-09 के साथ समीक्षा बैठक के दौरान मुख्यमंत्री ने अफसरों को सभी धर्मगुरुओं से वार्ता का निर्देश देने के साथ ही कहा है कि अफसर देखें कि कहीं पर भी सड़क रोककर धार्मिक आयोजन ना हो। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि तीन मई को ईद, परशुराम जयंती और अक्षय तृतीया का पावन पर्व है। प्रदेश में वर्तमान परिवेश को देखते हुए पुलिस तथा प्रशासन को अतिरिक्त संवेदनशील रहना होगा। हर एक पर्व शांति और सौहार्द के बीच सम्पन्न हो इसके लिए स्थानीय जरूरतों के अनुसार सभी जरूरी प्रयास करें। उन्होंने कहा कि धार्मिक कार्यक्रम, पूजा-पाठ आदि निर्धारित स्थान पर ही हों। सभी जगह धर्मगुरुओं से संवाद बना कर सुनिश्चित करें कि सड़क मार्ग तथा यातायात बाधित कर कोई धार्मिक आयोजन ● शेष पेज 11 पर

❑ अफसर देखें कि कहीं पर भी सड़क रोककर धार्मिक आयोजन ना हो

❑ प्रदेश में वर्तमान परिवेश को देखते हुए पुलिस तथा प्रशासन को अतिरिक्त संवेदनशील रहना होगा

सीएम आज आ रहे हैं उत्तराखंड

देहरादून। यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मंगलवार को यमकेश्वर आएंगे। प्रोटोकाल विभाग से मिली जानकारी के अनुसार योगी दोपहर सवा दो बजे जौलीग्रांट हवाई अड्डे पर पहुंचेंगे। जहां ● शेष पेज 11 पर

सीएम ने ईद की दी बधाई, बोले- कोरोना संक्रमण के चलते बरतें सावधानी

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। यूपी की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ईद-उल-फ़ित्र के अवसर पर प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। मुख्यमंत्री ने लोगों से कोरोना संक्रमण के मद्देनजर सभी सावधानियां बरतते हुए ईद-उल-फ़ित्र मनाने की अपील की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि ईद-उल-फ़ित्र का त्यौहार खुशी और मेल-मिलाप का सन्देश लेकर आता है। खुशियों का यह त्यौहार सामाजिक एकता को मजबूत करने के साथ ही आपसी भाईचारे की भावना को बढ़ाता है। यह पर्व अमन-चैन और सौहार्द का संदेश देता है। सीएम योगी ने कहा कि ईद के पर्व पर सभी को सद्भाव और सामाजिक सौहार्द को और सुदृढ़ करने का संकल्प लेना चाहिए। उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने अक्षय तृतीया, परशुराम जयंती तथा ईद उल फितर के अवसर पर प्रदेशवासियों को अपनी शुभकामनाएं की दी हैं। राज्यपाल ने कहा है कि भगवान परशुराम हमें बहादुरी और ईमानदारी का संदेश देते हैं। ईद उल फितर पर शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह दिन समाज के भले के लिए सामूहिक सद्भाव, लगाव और सबको साथ लेकर चलने की भावना को बढ़ाएगा। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने ईद की मुबारकबाद देते हुए सभी के सुख-समृद्धि की कामना की है। उन्होंने कहा है कि ईद परस्पर, सद्भाव, सौहार्द और मिलन का पर्व है। उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष सतीश महाना ने भगवान परशुराम जयन्ती, अक्षय तृतीया एवं ईद-उल-फितर के पूर्व संध्या पर प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं देते हुए उनके सुख एवं समृद्धि की कामना की है। सतीश महाना ने कहा कि अक्षय तृतीया के सर्व सिद्धयोग तिथि पर भगवान परशुराम की जयन्ती मनायी जाती है। भगवान परशुराम के बताये ● शेष पेज 11 पर

स्थानीय आतंकवादियों की संख्या में कमी आने से

विदेशी आतंकवादी ठिकाने से बाहर आने को हुए मजबूर : डीपी पांडे

एजेंसी

श्रीनगर। श्रीनगर स्थित सेना की 15वीं कोर के जनरल ऑफिसर कमांडिंग (जीओसी) लेफ्टिनेंट जनरल डीपी पांडे ने सोमवार को कहा कि स्थानीय आतंकवादियों की संख्या में काफी कमी आने के कारण विदेशी आतंकवादी अपने ठिकाने से बाहर आने को मजबूर हो गये हैं और इसीलिए सुरक्षा बल इन तक पहुंचने में सक्षम हो रहे हैं।

श्रीनगर में 15 कोर मुख्यालय में आयोजित एक समारोह के दौरान लेफ्टिनेंट जनरल डीपी पांडे ने कहा कि इससे पहले अधिकांश विदेशी आतंकवादी चुप थे। उन्होंने कहा कि अभी तक सुरक्षा बलों के खिलाफ अभियानों में विदेशी आतंकवादी स्थानीय युवाओं को सबसे आगे रख रहे थे। उन्होंने कहा कि स्थानीय आतंकवादियों की संख्या अब काफी कम हो गई है, इसलिए विदेशी आतंकवादी अब अपने ठिकाने से बाहर आने के लिए मजबूर हो रहे हैं। यही वजह है कि हम उनके साथ संपर्क स्थापित करके उन्हें मार गिराने में सक्षम हो रहे हैं। एक सवाल के जवाब में डीपी पांडे ने कहा कि हाल ही में श्रीनगर में मारे गए दो विदेशी आतंकवादियों के वैध आधार कार्ड मिले हैं। उन्होंने कहा कि अगर कोई विदेशी आतंकवादी एक वैध आधार कार्ड के साथ लाइव गनफाइट के दौरान बाहर आता है, तो उसे चुनौती देना मुश्किल है। उन्होंने कहा कि धीरे-धीरे हम इस चुनौती से पार पा लेंगे। उन्होंने कहा कि 'जोश टॉक्स' नामक कार्यक्रम का उद्देश्य कश्मीरी युवाओं की प्रतिभा को उजागर करना है, जिनके पास दुनिया को बताने के लिए महान कहानियां हैं। इन कहानियों को दुनिया को बताने की जरूरत है क्योंकि ये लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

❑ श्रीनगर में 15 कोर मुख्यालय में आयोजित एक समारोह के दौरान लेफ्टिनेंट जनरल डीपी पांडे ने कहा कि इससे पहले अधिकांश विदेशी आतंकवादी चुप थे

घुसपैठ के बारे में जीओसी पांडेय ने कहा कि इस साल अब तक घुसपैठ की सिर्फ एक कोशिश की गई थी जिसे सतर्क जवानों ने नाकाम कर दिया। उन्होंने कहा कि हालांकि कुछ हल्के प्रयास किए गए थे लेकिन इस साल नियंत्रण रेखा के पार से कोई बड़ी घुसपैठ की सूचना नहीं मिली है। उन्होंने इसका श्रेय नियंत्रण रेखा पर सेना के मजबूत घुसपैठ रोधी ग्रिड को दिया। एक सवाल के जवाब में जीओसी ने कहा कि यह सच है कि दुनिया के अन्य हिस्सों में उपयोग किए जा रहे कुछ उपकरण आतंकवादी इस्तेमाल कर रहे हैं जो यहां बरामद भी हुए हैं। जीओसी पांडे ने कहा कि यह कोई बड़ी चुनौती नहीं है और हम इसे ● शेष पेज 11 पर

कृषि क्षेत्र में ड्रोन के उपयोग से बढ़ेगी किसानों की आय : तोमर

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि कृषि क्षेत्र में ड्रोन के उपयोग से किसानों की आय बढ़ेगी, उन्हें सहूलियत होगी। तोमर ने सोमवार को दिल्ली में आयोजित ड्रोन सम्मेलन का शुभारंभ करते हुए कहा कि सरकार किसानों की सुविधा, लागत घटाने व आय बढ़ाने के लिए ड्रोन उपयोग को बढ़ावा दे रही है। इसके लिए ड्रोन खरीदने में विभिन्न वर्गों को छूट प्रदान की गई है। उन्होंने कहा कि व्यक्तिगत तौर पर ड्रोन खरीद के लिए भी वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए दिशा-निर्देश जारी कर दिए गए हैं। जिसके अंतर्गत अनुसूचित जाति- जनजाति, लघु और सीमांत, महिलाओं एवं पूर्वोत्तर राज्यों के किसानों के लिए ड्रोन की खरीद के लिए ड्रोन लागत का 50 प्रतिशत या अधिकतम 5 लाख रुपये की सहायता दी जाएगी। अन्य किसानों को 40 प्रतिशत अथवा अधिकतम 4 लाख रु. की सहायता दी जाएगी। ड्रोन से कृषि सेवाएं प्रदान करने के लिए किसान सहकारी समिति व ग्रामीण उद्यमियों के तहत मौजूदा व नए कस्टम हायरिंग केंद्रों (सीएचसी) द्वारा ड्रोन खरीद के लिए ड्रोन व इसके संबंधित पुर्जों की मूल लागत के 40 फीसदी की दर से या 4 लाख रु. तक, जो भी कम हो, वित्तीय सहायता दी जाएगी। उन्होंने कहा कि केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय देशभर में कृषि को बढ़ावा देने के लिए कई स्कीमों के माध्यम से राज्य सरकारों को सहायता-सुविधा प्रदान कर रहा है और विभिन्न कृषि कार्यों से जुड़े ● शेष पेज 11 पर

प्रधानमंत्री के सलाहकार बने पूर्व पेट्रोलियम सचिव तरुण कपूर

नई दिल्ली। पूर्व पेट्रोलियम सचिव तरुण कपूर को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सलाहकार नियुक्त किया गया है। इसके अलावा दो अन्य अधिकारियों को प्रधानमंत्री कार्यालय में अतिरिक्त सचिव नियुक्त किया गया है। कार्मिक मंत्रालय ने सोमवार को जारी एक आदेश में कहा कि कैबिनेट की नियुक्ति समिति (एसीसी) ने प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) में प्रधानमंत्री के सलाहकार के रूप में तरुण कपूर की नियुक्ति को मंजूरी दे दी है। उनकी नियुक्ति भारत सरकार के सचिव के पद और वेतनमान पर दो साल की अवधि या अगले आदेश तक के लिए हुई है। कपूर हिमाचल प्रदेश कैडर के 1987-बैच के आईएएस अधिकारी हैं। वह पिछले साल 30 नवंबर को पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के सचिव के रूप में सेवानिवृत्त हुए थे। कार्मिक मंत्रालय ने इसके साथ ही मध्य प्रदेश कैडर के 1994 बैच के आईएएस अधिकारी हरि रंजन राव और बिहार कैडर के 1994 बैच के आईएएस अधिकारी आतिश चंद्र को पीएमओ में अतिरिक्त सचिव नियुक्त किया है।

वैधता को चुनौती वाली याचिका पर जवाब के लिए सरकार ने समय मांगा

एजेंसी

नई दिल्ली, । राजद्रोह के मामले में लगने वाली भारतीय दंड संहिता की धारा 124ए की वैधता को चुनौती देने वाली याचिका पर जवाब के लिए सरकार ने सुप्रीम कोर्ट से समय मांगा। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले को 5 मई को अंतिम सुनवाई के लिए लिस्ट किया है। केंद्र के आवेदन में कहा गया है कि जवाब तैयार है, उसे सक्षम अधिकारी की सहमति के बाद दाखिल किया जाएगा। 27 अप्रैल को कोर्ट ने केंद्र सरकार को एक हफ्ते में जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया था। 15 जुलाई 2021 को सुनवाई के दौरान चीफ जस्टिस एनवी रमना ने केंद्र सरकार से पूछा था कि क्या आजादी के 75 साल बाद भी राजद्रोह जैसे क़ानून की ज़रूरत है। चीफ जस्टिस ने कहा था कि कभी महात्मा गांधी, तिलक जैसे स्वतंत्रता सेनानियों की आवाज़ दबाने के लिए ब्रिटिश सत्ता इस क़ानून का इस्तेमाल करती थी। क्या आजादी के 75 साल बाद भी राजद्रोह कानून की जरूरत है। सुनवाई के दौरान चीफ जस्टिस ने कहा था कि राजद्रोह में दोषी साबित होने वालों की संख्या बहुत कम है। लेकिन अगर पुलिस या सरकार चाहे तो इसके जरिये किसी को भी फंसा सकती है। इन सब पर विचार करने की जरूरत है। याचिका सेना के रिटायर्ड मेजर जनरल एस जी बोम्बतकरे ने दायर की है। सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार की ओर से अटार्नी जनरल केके वेणुगोपाल ने कहा था कि राजद्रोह कानून वापस नहीं लिया जाना चाहिए। बल्कि कोर्ट चाहे तो नए सख्त दिशा-निर्देश जारी कर सकता है ताकि राष्ट्रीय हित में ही इस कानून का इस्तेमाल हो। बता दें कि पिछले 12 जुलाई 2021 को राजद्रोह के कानून के खिलाफ मणिपुर के पत्रकार किशोरचंद्र वांगखेमचा और छत्तीसगढ़ के पत्रकार कन्हैयालाल शुक्ल की ओर से दायर याचिकाओं पर सुनवाई के दौरान अटार्नी जनरल केके वेणुगोपाल और सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने जवाब दाखिल करने के लिए समय देने की मांग की थी। याचिकाकर्ता की ओर से वकील तनिमा किशोर ने कहा है कि भारतीय दंड संहिता की धारा 124ए संविधान की धारा 19 का उल्लंघन करती है। यह धारा सभी नागरिकों ● शेष पेज 11 पर

15 जुलाई 2021 को सुनवाई के दौरान चीफ जस्टिस एनवी रमना ने केंद्र सरकार से पूछा था

लाउडस्पीकर विवाद में नया ट्विस्ट

राज ठाकरे आज नहीं करेंगे महाआरती

एजेंसी

मुंबई। एमएनएस चीफ राज ठाकरे ने ईद के दिन होने वाले महाआरती के कार्यक्रम को रद्द कर दिया है। ठाकरे ने सोशल मीडिया में लिखा कि कल ईद होने कि वजह से मनसे कार्यकर्ताओं को महाआरती नहीं करने का आदेश दिया जाता है। इस बीच राज ठाकरे के अयोध्या जाने की चर्चा जोर पर है। मुंबई के विभिन्न हिस्सों में सोमवार सुबह बड़े पोस्टर-बैनर लगाए गए हैं, जिनमें अयोध्या चलो का नारा दिया गया है। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना ने कार्यकर्ताओं से 5 जून को अयोध्या चलने का आह्वान किया है। उस दिन राज भी अयोध्या जाएंगे। हालांकि, राज के अयोध्या दौरे को लेकर मनसे ने कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया है। औरंगाबाद पुलिस के सूत्रों ने बताया कि, मामले की जांच के लिए एक डीसीपी स्तर के अधिकारी को लगाया गया है। इसके बाद लीगल टीम से सलाह ली जाएगी। ये देखा जाएगा कि जिन 16 शर्तो को इस रैली के आयोजक से पालन करने को कहा गया था, उसका उल्लघंन हुआ है या नही।

गृह मंत्री दिलीप वालसे पाटिल ने आज इस मुद्दे को लेकर एक हाई लेवल मीटिंग भी बुलाई है। मीटिंग में राज के उस अल्टीमेटम पर ● शेष पेज 11 पर

❑ अब मुंबई में मनसे ने लगाए अयोध्या चलो के पोस्टर

नवनीत राणा और विधायक पति को नहीं मिल पाई बेल, दो दिन और काटनी होगी जेल

मुंबई। मुंबई की सत्र न्यायालय ने सोमवार को सांसद नवनीत राणा और उनके विधायक पति रवि राणा की जमानत याचिका को बुधवार तक के लिए टाल दिया है। राणा दंपत्ति को अगले दो दिन जेल में ही बिताने होंगे। राणा दंपत्ति पर दो समुदायों के बीच नफरत पैदा करने जैसे कई आरोप हैं। नवनीत राणा और उनके पति पर मातोश्री के सामने हनुमान चालीसा पढ़ने का ऐलान कर राजनीति करने का आरोप है। आरोप है कि राणा दंपत्ति ने ये ऐलान इसलिए किया ताकि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री और शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे को हिंदुत्व की याद दिला सके। सांसद नवनीत राणा फिलहाल भायखला स्थित महिला जेल में बंद हैं जबकि उनके विधायक पति को नवी मुंबई स्थित तलोजा जेल में रखा गया है। राणा दंपत्ति की तरफ से कोर्ट में पेश हुए वरिष्ठ वकील अबद पोंडा और रिजवान मर्चेंट ने कोर्ट में पुलिस के दावों के खिलाफ दलील रखी कि उनके क्लाइंट की नफरत फैलाने की कोई मंशा नहीं थी। उन्होंने कहा कि हर नागरिक को शांतिप्रिय ढंग से सरकार के खिलाफ आवाज उठाने का अधिकार● शेष पेज 11 पर

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे सैन्य संघर्ष के बारे में कहा

यूक्रेन संघर्ष में कोई पक्ष विजेता नहीं सभी को होगा नुकसान

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे सैन्य संघर्ष के बारे में कहा कि इस युद्ध में कोई भी पक्ष विजेता नहीं हो सकता। इससे सभी का नुकसान होगा और भारत शांति का पक्षधर है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जर्मन चांसलर ओलाफ शोल्ज के साथ सोमवार को एक साझा प्रेसवार्ता में कहा कि यूक्रेन में संघर्ष को समाप्त करने का एक मात्र रास्ता बातचीत है। यूक्रेन के घटनाक्रम से विश्व बाजार में विभिन्न वस्तुओं की कीमतों में इजाफा हुआ है। इसका सबसे खराब असर विकासशील देशों पर पड़ेगा। उन्होंने कहा, यूक्रेन संघर्ष से उत्पन्न उथल-पुथल के कारण तेल की कीमतें आसमान छू रही हैं, विश्व में खाद्यान और उर्वरकों की कमी हो रही है। इससे विश्व के हर परिवार पर बोझ पड़ा है। विकासशील और गरीब देशों पर इसका और खराब असर पड़ेगा। प्रधानमंत्री मोदी ने पहली बार यूक्रेन के घटनाक्रम को 'युद्ध' की संज्ञा दी। हालांकि उन्होंने इस संबंध में रूस का नाम नहीं लिया और ना ही उसकी आलोचना की। दूसरी ओर जर्मन चांसलर ने युद्ध के लिए रूस पर दोषारोपण करते हुए इसके खिलाफ लोकतांत्रिक देशों की लामबंदी पर जोर दिया। साथ ही उन्होंने कहा, ल्मैं व्लादिमीर पुतिन से अपनी अपील दोहराता हूं, इस मूर्खतापूर्ण हत्याओं को खत्म करो, यूक्रेन से अपने सैनिकों को हटाओ।

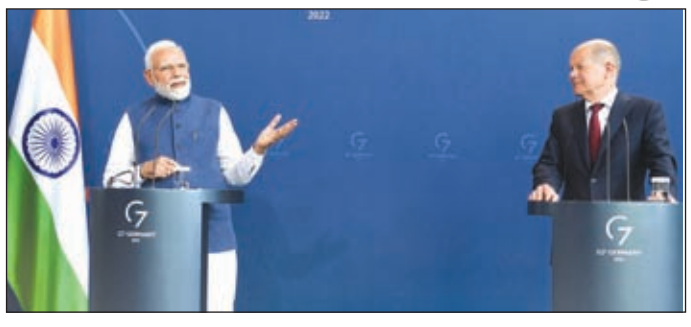

प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि कोरोना महामारी के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था ने फिर तेजी पकड़ ली है। दुनिया में आर्थिक वृद्धि की बहाली के लिए भारत एक प्रमुख स्तंभ साबित होगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि यूक्रेन के घटनाक्रम से प्रभावित होने वाले देशों को भारत ने तेल की आपूर्ति की है तथा आर्थिक सहायता मुहैया कराई है।

उन्होंने कहा कि हाल के भू-राजनीतिक घटनाक्रम से दुनिया में शांति और स्थायित्व पर विपरीत असर पड़ा है। इससे यह बात भी साबित हुई है कि दुनिया के विभिन्न देश किस तरह एक-दूसरे पर निर्भर हैं।

प्रधानमंत्री और जर्मन चांसलर की बातचीत के बाद ● शेष पेज 11 पर

❑ हाल के भू-राजनीतिक घटनाक्रम से दुनिया में शांति और स्थायित्व पर विपरीत असर पड़ा है

दिव्यांगजनों का सहारा बनी योगी सरकार मिलेगी मोटराईज्ड ट्राईसाईकिल

पांच साल में सरकार ने दिव्यांगजनों के अनुदान में तीन गुने से अधिक का किया इजाफा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। दिव्यांगजनों के लिए सहारा बनी उत्तर प्रदेश की योगी सरकार अगले दो वर्षों में प्रत्येक लोकसभा क्षेत्र के सौ दिव्यांगजनों को मोटराईज्ड ट्राईसाईकिल देकर उनकी दिनचर्या को आसान बनाएगी। वित्तीय वर्ष 2021-22 में शुरू की गयी मोटराईज्ड ट्राईसाईकिल योजना के तहत 1500 से अधिक की स्वीकृति दी जा चुकी है। राज्य सरकार के एक प्रवक्ता ने सोमवार को यहां बताया कि कृत्रिम अंग खरीदने पर दिव्यांगजनों को अनुदान की दर में पहले ही इजाफा कर चुकी प्रदेश सरकार आगामी दो सालों में प्रति लाभार्थी अनुदान को बढ़ाकर 15,000 रूपये (प्रस्तावित) करने जा रही है। इसके अलावा दिव्यांगजनों के कल्याणार्थ पालनहार और पेंशन योजना भी प्रस्तावित है। प्रवक्ता ने बताया कि विकास के साथ ही योगी सरकार सामाजिक सुरक्षा के लिए संकल्पित है। राष्ट्रीय व राज्य-स्तरीय योजनाओं के सफल क्रियान्वयन का ही नतीजा है कि प्रदेश की आबादी के बड़े वर्ग का जीवन स्तर आसान हुआ है। इन पांच सालों में सरकार ने दिव्यांगजनों के

उत्थान और उनकी जिंदगी को आसान बनाने की दिशा में नयी योजनाएं शुरू की हैं तो पुरानी स्कीमों में मिलने वाली सुविधाओं में खासा सुधार कर धनराशि में इजाफा किया है। दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग की योजनाओं का उद्देश्य ही दिव्यांगजनों के लिए समावेशी समाज का निर्माण करना है ताकि उनका सामाजिक व आर्थिक पुनर्वास किया जा सके। 11 लाख से अधिक दिव्यांगजनों को मिल रहा 1000 रुपये अनुदान सरकारी प्रवक्ता के अनुसार दिव्यांगजन भरण पोषण अनुदान योजना के तहत मिलने वाले अनुदान में तीन गुने से अधिक वृद्धि कर योगी सरकार ने दिव्यांगजनों को बड़ी राहत दी है। मार्च 2017 के पहले अनुदान राशि महज 300 रुपये थी। सरकार ने इसे बढ़ाकर पहले 500 रुपये और दिसम्बर 2021 में फिर इजाफा कर इसे 1000 कर दिया है। इसी का नतीजा है कि लाभार्थी संख्या 2016-17 में जो 8 लाख 75 हजार 992 थी, वह 2021-22 में बढ़ कर 11 लाख 26 हजार 670 हो गई।

इसी क्रम में कृत्रिम अंग एवं सहायक उपकरण योजना के अनुदान में योगी सरकार ने भारी इजाफा कर फरवरी 2019 में 800 से 10,000 कर दिया। वर्ष 2029 में कुल लाभार्थी 27 हजार 887 थे, जो 2021-22 में बढ़कर 42 हजार 184 हो गये। पिछले 5 वर्षों में कुल लाभार्थियों की संख्या 2 लाख 56 हजार 165 थी। अगले दो वर्षों में प्रति लाभार्थी अनुदान को बढ़ा कर 15,000 रुपया किया जाना प्रस्तावित है। प्रवक्ता ने बताया कि योगी सरकार ने शादी-विवाह प्रोत्साहन पुरस्कार योजना की पुरस्कार राशि में भी डेढ़ गुने से अधिक की बढ़ोत्तरी की है। जून 2017 के पहले पति-पत्नी दोनों दिव्यांग होने पर पर पुरस्कार राशि 20,000 रुपये मिलती थी। भाजपा सरकार ने जून 2017 के बाद इसे बढ़ाकर 35,000 कर दिया। इसी तरह दिव्यांगजनों को जुलाई 2017 से पहले केवल उत्तर प्रदेश में निःशुल्क बस यात्रा की सुविधा थी। जुलाई 2017 के बाद इसे अंतिम गंतव्य स्थल तक बढ़ा दिया गया, चाहे वह राज्य की सीमा से बाहर ही क्यों न हो।

उन्होंने बताया कि दिव्यांगजनों को हाथ से चलने वाले ट्राईसाईकिल से आ रही परेशानियों को देखते हुए योगी सरकार ने वर्ष 2021-22 में मोटराईज्ड ट्राईसाइकिल योजना की शुरुआत की थी। इसके तहत 1507 स्वीकृति दी गयी। सरकार ने निर्णय लिया है कि आगामी दो वर्षों में प्रदेश के प्रत्येक लोक सभा क्षेत्र में 100 दिव्यांगजन को मोटराईज्ड ट्राईसाईकिल उपलब्ध कराएगी। दिव्यांगजनों के कल्याण के लिए दो महत्वपूर्ण योजनाएं और भी प्रस्तावित हैं। इनमें प्रस्तावित पालनहार योजना के तहत सरकार गरीबी रेखा के नीचे (बीपीएल) के दिव्यांगजन को अधिकतम 18 वर्ष की आयु तक पालन पोषण करेगी, जबकि लोक कल्याण संकल्प पत्र के वादे के अनुरूप प्रस्तावित दिव्यांग पेंशन योजना के तहत अनुदान की दर 1000 रुपये प्रति माह से बढ़ा कर 1500 रुपये प्रतिमाह प्रति व्यक्ति किया जाएगा।

ऊर्ज़ा मंत्री के निर्देश- त्योहारों पर प्रदेश भर में हो निर्बाध विद्युत आपूर्ति

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश के क्रम में उत्तर प्रदेश के ऊर्ज़ा एवं अतिरिक्त ऊर्ज़ा स्रोत मंत्री ए.के. शर्मा ने सभी अधिकारियों को निर्देश दिये हैं कि आगामी त्योहार अक्षय तृतीया, परशुराम जयंती व ईद पर बिजली आपूर्ति सुचारू रूप से बनी रहे। सभी क्षेत्रों को निर्धारित शिड्यूल के अनुरूप बिजली मिले, इसकी व्यवस्था सुनिश्चित होनी चाहिए। उन्होंने अधिकारियों से कहा है कि त्योहारों पर अनावश्यक बिजली कटौती न हो और ट्रिपिंग, लोकल फाल्ट व खराब ट्रांसफार्मर के कारण आपूर्ति बाधित न हो, इसके लिए प्रिवेंटिव मेंटिनेंस कार्य युद्धस्तर पर किये जाये और इसकी सघन मॉनीटरिंग की जाये, जिससे कि प्रदेश में विद्युत की सुचारू व्यवस्था बनी रहे। ऊर्ज़ा मंत्री एके शर्मा ने सोमवार को शक्ति भवन में पावर कारपोरेशन के उच्चाधिकारियों के साथ बैठक कर सुचारू विद्युत व्यवस्था के लिए आवश्यक निर्देश दिये हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार एवं मुख्यमंत्री की भी मंशा है कि जनता को अनावश्यक विद्युत आपूर्ति सम्बंधी समस्याओं का सामना न करना पड़े, इसके लिए पूरे प्रदेश की विद्युत व्यवस्था सुचारू रूप से कार्य करे, इस पर लगातार योजनाबद्ध तरीके से कार्य किया जाय। उन्होंने कहा कि बिजली बचाने के लिए लाइन हानियों को अधिक से अधिक कम करने के प्रयास किये जाएं। साथ ही राजस्व हानियों को भी लक्ष्य के अनुरूप कम करने के लिए सार्थक प्रयास किये जाएं और इसके लिए उपभोक्ताओं से लगातार संवाद स्थापित कर उन्हें बिजली बिल समय से जमा करने के लिए प्रेरित भी किया जाये। मंत्री ने निर्देशित किया कि वितरण एवं ट्रांसमिशन से जुड़े सभी अधिकारी व कर्मचारी वर्तमान समय की चुनौतियों को देखते हुए जनता की सेवा के लिए छुट्टियों के दौरान व समस्या होने पर रात्रि में भी कार्य करें और 24*7 अपने मोबाइल फोन चालू रखें, जिससे कि उनका उपभोक्ताओं एवं जन-प्रतिनिधियों से सम्पर्क बना रहे। उन्होंने कहा कि ट्रिपिंग, लोकल फाल्ट तथा खराब ट्रांसफार्मर व जर्जर लटकते हुए तारों एवं पोलों को समय से ठीक किया जाये और इनके प्रिवेंटिव मेंटिनेंस हेतु युद्धस्तर पर कार्य किया जाये। सभी ट्रांसफार्मर, फीडरों एवं उपकेन्द्रों का लोड एवं आपूर्ति की भी प्रतिदिन जांच की जाये तथा लोड बढ़ने पर समय से इनकी क्षमतावृद्धि की जाये, जिससे कि इन्हें फूंकने से बचाया जा सके और निर्बाध विद्युत आपूर्ति की सुचारू व्यवस्था में भी रुकावट पैदा न हो। इन समस्त कार्यों के लिए इनसे सम्बंधित उपकरणों की पर्याप्त उपलब्धता स्थानीय स्तर पर सुनिश्चित हो, इसकी भी चिन्ता की जाये। बैठक में प्रमुख सचिव ऊर्ज़ा एवं चेयरमैन यूपीपीसीएल एम देवराज, प्रबंध निदेशक यूपीपीसीएल पंकज कुमार, प्रबंध निदेशक ट्रांसमिशन एवं वितरण पी गुरू प्रसाद के साथ सभी निदेशक एवं अन्य उच्चाधिकारी उपस्थित थे।

जल शक्ति मंत्री सात मई से तीन दिन मुरादाबाद में करेंगे प्रवास

एजेंसी

मुरादाबाद। मुरादाबाद मंडल के प्रभारी मंत्री व उत्तर प्रदेश सरकार में जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह 7 मई को मुरादाबाद पहुंचेंगे और 3 दिन जिले में प्रवास करके 9 मई को मुरादाबाद से रवाना हो जाएंगे। इससे पहले कई प्रोजेक्ट का स्थलीय निरीक्षण भी करेंगे। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व कैबिनेट मंत्री स्वतंत्र देव सिंह 7 मई को यहां पहुंच कर सबसे पहले शासन की प्राथमिकता वाले कार्यों की जानकारी लेंगे। इसके बाद वह सुबह 10 बजे से दोपहर डेढ़ बजे तक छजलैट ब्लाक के शाहपुर मुराकपुर में चैपाल का आयोजन करेंगे। पंचायत भवन, शौचालय, स्कूल चलो अभियान योजना की हकीकत जानेंगे। मुख्यमंत्री प्रधानमंत्री आवास की प्रगति का निरीक्षण भी करेंगे। उसी दिन शाम को 4 बजे से 6 बजे के बीच वह मंडी समिति में गेहूं क्रय केंद्र का निरीक्षण करेंगे। नगर निगम के अतंर्गत किसी मलिन

बस्ती का निरीक्षण करेंगे। 8 मई को सुबह 10 बजे से कोविड कमांड कंट्रोल सेंटर के इंतजाम देखेंगे और फिर 11 बजे से सर्किट हाउस में विभागीय अफसरों के साथ विकास कार्यों और अपराध की समीक्षा करेंगे। इसके बाद कुंदरकी के गो आश्रय स्थल का निरीक्षण करेंगे। बिलारी के ग्राम हरौरा में जल जीवन मिशन का स्थलीय निरीक्षण करेंगे। 9 मई को जिला अस्पताल में निरीक्षण करने के बाद पंचायत भवन में विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को प्रतीक चिन्हों प्रशस्ति पत्रों का वितरण करेंगे।

डीएम पहुंचे प्राथमिक विद्यालय, गायब प्रधानाध्यापक व सहायक अध्यापक निलम्बित

एजेंसी

मऊ। जिलाधिकारी अरुण कुमार ने शिक्षा क्षेत्र रतनपुरा के प्राथमिक विद्यालय मऊ कुबेर का आकस्मिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान विद्यालय के प्रधानाध्यापक मृत्युंजय सिंह एवं सहायक अध्यापक राहुल सिंह को बिना किसी पूर्व सूचना के अनुपस्थित पाए जाने पर इन्हें तत्काल प्रभाव से निलम्बित करने के निर्देश दिए।

विद्यालय में कार्यरत दो शिक्षामित्र राजकुमारी चौहान एवं सुनीता कुमारी चौहान उपस्थित थी। विद्यालय में कुल नामांकित 159 छात्रों के सापेक्ष मात्र 12 छात्र उपस्थित पाए गए। जिलाधिकारी ने विद्यालय परिसर में स्थित रसोईघर एवं शौचालय का भी निरीक्षण किया एवं बच्चों से मध्यान्ह भोजन के बारे में भी जानकारी ली, जो

मीनू के हिसाब से नहीं बना था। रसोईघर के निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने वहां रखे दाल, चावल, आटा, तेल एवं मसालों को भी देखा जिसकी स्थिति संतोषजनक थी। शौचालयों में ताले बंद थे जो कई दिनों से उपयोग में नहीं लाया जा रहा था। विद्यालय परिसर में ही आंगनवाड़ी केंद्र बंद पड़ा मिला। जिस पर नाराजगी दर्शाते हुए जिलाधिकारी ने सीडीपीओ को वहां पर तैनात कार्यकत्री एवं सहायिका के खिलाफ कार्रवाई करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान तहसीलदार सदर संजीव कुमार यादव उपस्थित रहे।

छह सदस्य प्रतिनिधि मंडल ने उपमुख्यमंत्री को सौंपा ज्ञापन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। यूपी वर्किंग जर्नलिस्ट यूनियन की ओर से शिव शरण सिंह के नेतृत्व में प्रदेश के उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक को उनके आवास पर मुलाकात कर उन्हें मुख्यमंत्री को संबोधित 12 सूत्रीय मांगों का ज्ञापन सौंपा गया। श्रमिक दिवस के अवसर पर प्रेस क्लब में आईएफडब्ल्यूजे एवं यूपी वर्किंग जर्नलिस्ट यूनियन की विचार गोष्ठी में पत्रकारों की विभिन्न मांगों से संबंधित 12 सूत्रीय प्रस्तावों को पास किया गया और मुख्यमंत्री को भेजे जाने वाले इस ज्ञापन को उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक को सौंपा गया है। यूनियन के ज्ञापन में राज्य सरकार से मांग की गई है कि अखबारों में मजीठिया वेज बोर्ड की सिफारिशों को लागू करने के लिए सरकार त्रिपक्षीय समिति का गठन करे। पीजीआई में मान्यता प्राप्त पत्रकारों की तरह है 1973 के शासनादेश के दायरे में आने वाले सभी श्रमजीवी पत्रकारों को राज्य कर्मियों के समान निशुल्क चिकित्सा सुविधा प्रदान की जाए। सरकार 1973 के शासनादेश के तहत प्रदेश के सभी श्रमजीवी पत्रकारों को राज्यकर्मियों की तरह है चिकित्सा कार्ड उपलब्ध कराकर उनके निशुल्क इलाज की सुविधा मुहैया कराए। उत्तर प्रदेश मान्यता प्राप्त संवाददाता समिति का तुरंत गठन हो। पूर्व की भांति हमारे संगठन सहित अन्य पत्रकार संगठनों को भी प्रतिनिधित्व दिया जाए। प्रेस काउंसिल भंग कर प्रेस मीडिया काउंसिल का गठन किया जाए और इसके तहत इलेक्ट्रॉनिक एवं पोर्टल के पत्रकारों को भी रखा जाए। सूचना विभाग द्वारा डेस्क कर्मियों संपादक से प्रूफरीडर तक मिलने वाली प्रेस मान्यता बहाल की जाए एवं इस श्रेणी की नई मान्यताएं भी जारी की जाएं। पत्रकारों के उत्पीड़न एवं अन्य शिकायतों के निराकरण के लिए पूर्व मुख्यमंत्री राजनाथ सिंह द्वारा गठित पत्रकार बंधु को पुनर्जीवित किया जाए।

लोकतंत्र सेनानी स्व0 राम स्वरूप सिंह यादव की प्रतिमा का अखिलेश यादव ने किया अनावरण

कैनविज टाइम्स संवाददाता

नगराम, लखनऊ । सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने नगराम के समेसी मजरा भवानीखेडा गांव में सपा के पूर्व जिलाध्यक्ष व लोकतंत्र सेनानी स्व0 राम स्वरुप सिहं यादव की प्रतिमा का अनावरण किया। सपा प्रमुख के समेसी कस्बे में पहुंचते ही डा0 अतुल यादव ने दर्जनों समर्थकों संग जोरदार स्वागत किया । अनावरण के दौरान आयोजित कार्यक्रम में अखिलेश यादव ने प्रदेश में बिजली संकट पर प्रदेश की भाजपा सरकार पर जमकर हमला बोलते हुए कहा कि आज गर्मी कम है , बावजूद यदि पारा पचास डिग्री पर पंहुचा तो पक्षियों के साथ हम सबको नुकसान होगा इसके लिए हम सबको सोचना चाहिए प्रदेश में बढ़ते बिजली संकट पर अखिलेश यादव ने कहा कि सरकार को चिंता बिजली बिल वसूली का है बिजली मंत्री कहते हैं कि आंधी तूफान में बिजली कारखाने , ट्रांसमिशन खराब हो गये है जिससे बिजली संकट हो गया है। सरकार पांच सालो में एक भी बिजली का

कारखाना नहीं लगा सकी बिजली नहीं मिल रही है इसके बावजूद बिजली बिल बढ़कर आ रहा है । सपा प्रमुख ने कहा कि सरकार के एक मंत्री खुद गाड़ी चलाकर अस्पतालों के निरीक्षण कर रहे हैं वहीं दूसरे मंत्री कहते हैं कि कमा लो मगर डकार मत लेना नदियों, तालाबों का पैसा डकार लिया गया है। वही चंदौली में रविवार को पुलिस एक व्यक्ति को पकडने के लिए जब उसके घर पहुंची वह व्यक्ति जब नहीं मिला तो पुलिस ने उसकी एक बहन को इतना पीटा की उसकी मौत हो गई जबकि दूसरी बहन की हालत खराब है यह कृत्य मुख्यमंत्री के ही जाति की पुलिस ने किया है , ऐसी पुलिस के खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए भाजपा सरकार मे पांच सालो में बेरोजगारों को कोई रोजगार नौकरी नहीं मिला क्रय केंद्रों पर किसानों का गेहूं नहीं तौला जा रहा है एक ही जाति के डीएम, थानेदार अधिकारी सब एक ही जाति के हैं ?। स्टील, सीमेंट,के दाम आसमान छू रहे हैं , सरकार को कोई चिंता नहीं है सरकार जाति धर्म पर काम कर रही है लोगों के खिलाफ फर्जी मुकदमे लिखे जा रहे हैं अखिलेश यादव ने स्वर्गीय राम स्वरुप सिंह यादव के बेटे कुलदीप सिंह यादव व पुत्र वधू अंजू यादव को हर संभव साथ देने का वादा किया । इस मौके पर सपा के प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल,सपा प्रवक्ता राजेंद्र चौधरी, पूर्व विधायक पुरखा उदयराज यादव, पूर्व विधायक श्याम किशोर यादव, पूर्व विधायक नीरज कुशवाहा, पूर्व मंत्री आर.के चौधरी, पूर्व विधायक अम्ब्रीश पुष्कर पूर्व जिला पंचायत सदस्य पुष्पा रावत, सुनील गौतम पूर्व जिला पंचायत सदस्य,जिला पंचायत सदस्य अरूण यादव, जिलाध्यक्ष जयसिंह जयंत, एडवोकेट रामसमुझ , अमरपाल सिंह, मोहम्मद शुफियान, डा0 अतुल यादव, बरजोर यादव,ग्राम प्रधान सुनील पटेल , विनोद पटेल , अतुल यादव सहित काफी संख्या में सपा कार्यकर्ता मौजूद थे।

नैक निरीक्षण को लेकर गम्भीर विवि, विशेषज्ञ दे रहे टिप्स

एजेंसी

मेरठ। नैक के निरीक्षण को लेकर चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय पूरी तरह से गम्भीर है। सोमवार को भी प्रशासनिक भवन के कमेटी हॉल में नैक निरीक्षण के लिए एसएसआर रिपोर्ट भरने को विस्तार से चर्चा हुई।

सोमवार को निरीक्षण को लेकर चल रहे मंथन के दूसरे दिन एसएसआर रिपोर्ट भरने को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। नैक विशेषज्ञ और महात्मा गांधी ग्रामोदय विवि चित्रकूट के पूर्व कुलपति एनसी गौतम ने सातों क्राइटेरिया को एक-एक करके विस्तार से देखा। उन्होंने एक-एक बिंदु पर प्रत्येक क्राइटेरिया के प्रमुख से बातचीत की। इससे चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय की एसएसआर रिपोर्ट बेहतर हो सकेगी। नैक रिपोर्ट को लेकर आ रही दुविधा को भी उन्होंने दूर किया।

उन्होंने कहा कि प्रत्येक क्राइटेरिया प्रमुख अपनी-अपनी टीम के साथ जल्द से जल्द अपनी रिपोर्ट तैयार करें। उसके बाद भी यदि कोई कमी रह जाती है तो उसको देखकर पूरा किया जाए। विश्वविद्यालय की विशेषज्ञता और अच्छे कार्यों को एसएसआर रिपोर्ट में दर्शाया जाएगा। इससे चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय को ए प्लस ग्रेड आसानी से मिल जाएगा।

बैठक में विवि की कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला, प्रति कुलपति प्रो. वाई विमला, कुलसचिव धीरेंद्र वर्मा, प्रो. वीरपाल सिंह, प्रो. मृदुल गुप्ता, प्रो. भूपेंद्र सिंह, प्रो. जयमाला, लोकेश्वर, अनिल मलिक, प्रो. बिंदु शर्मा, प्रो. अनुज कुमार, प्रो. मुकेश शर्मा, डॉ. विवेक त्यागी आदि उपस्थित रहे।

कुशीनगरः थानों पर रखा जाएगा फीड बैक रजिस्टर, एसओ स्वयं लेंगे फरियादियों से फीड

कैनविज टाइम्स संवाददाता

कुशीनगर। कुशीनगर जनपद के थानों पर अब फीड बैक रजिस्टर रखे जायेंगे। थानाध्यक्ष स्वयं फरियादियों से फीड बैक लेकर रजिस्टर में अंकित करेंगे। पुलिस अधीक्षक धवल जायसवाल ने सोमवार देर शाम को नेबुआ नौरंगिया थाना के औचक निरीक्षण के दौरान यह निर्देश एसओ को दिए। जनपद के प्रत्येक थानों को फीड बैक रजिस्टर रखे जायेंगे। पुलिस अधीक्षक ने थाना कार्यालय में रखे अभिलेखों अपराध रजिस्टर, आगंतुक रजिस्टर, त्यौहार रजिस्टर, भूमि विवाद रजिस्टर, हत्या व बलवा से सम्बन्धित रजिस्टर व बीट सूचना रजिस्टर तथा अन्य अभिलेखों का अवलोकन किया। निर्देश दिया कि उक्त अभिलेखों को अपडेट करने एवं उचित रख रखाव में लापरवाही

न करें। एसपी ने जनसुनवाई रजिस्टर का अवलोकन करते हुए शिकायती प्रार्थना पत्रों का शत-प्रतिशत अंकन करने तथा समस्या का निस्तारण करते हुए शिकायती प्रार्थान पत्रों के निस्तारण के निर्देश दिए।

उन्होंने महिला हेल्प डेस्क पर प्राप्त प्रार्थना पत्रों के निस्तारण की समीक्षा करते हुए महिला पुलिस कर्मियों को फरियादियों से अच्छे व्यवहार करने व उनकी समस्याओं को सुनकर गुणवत्तापूर्ण निस्तारण कराने हेतु दिशा निर्देश दिये। बीट पुलिस कर्मियों के कार्य की समीक्षा की गयी और समय से बीट सूचना अंकित कराने हेतु निर्देशित किया गया। मालखाने में रखे बलवा ड्रिल से सम्बन्धित उपकरणों की साफ सफाई करा कर रखने हेतु निर्देशित किया गया ताकि आवश्यकता पड़ने पर उनका तत्काल उपयोग किया जा सके। लावारिश वाहन व माल की सूची बनाकर नीलामी की प्रक्रिया नियमानुसार अतिशीघ्र कराने हेतु निर्देशित किया गया। सभी पुलिस कर्मियों को मानक के अनुसार वर्दी धारण करने तथा टर्नआउट उच्च कोटि का रखने के लिए निर्देशित किया गया । प्रशिक्षु महिला व पुरुष आरक्षियों व उप निरीक्षकों को निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार व्यवहारिक प्रशिक्षण कराये जाने हेतु प्रभारी निरीक्षक को निर्देशित किया गया। थाने पर नियुक्त महिला आरक्षियों से सीसीटीएनएस पर अधिक से अधिक कार्य कराने हेतु प्रभारी निरीक्षक को निर्देशित किया गया। पुलिस अधीक्षक ने थाना नेबुआ नौरंगिया के थाना परिसर एवं थाना कार्यालय के स्वच्छता की सराहना की।

रामलीला की सांस्कृतिक विरासत को दीर्घजीवी बनाएगा अयोध्या पंचांगः जयवीर सिंह

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने अयोध्या शोध संस्थान के पंचांग का सोमवार को लोकापर्ण किया। गोमती नगर स्थित पर्यटन भवन में आयोजित पंचाग के लोकापर्ण समारोह में संस्कृति मंत्री ने कहा कि इस पंचांग वैश्विक रामलीला, भारतीय नवसंवत्सर एवं अंग्रेजी तिथियों के आधार पर अनेक महत्वपूर्ण जानकारियां शामिल की गई है। ऐसे प्रयास रामलीला की सांस्कृतिक विरासत का न सिर्फ एक स्थान पर परिचय देते हैं बल्कि उसे दीर्घजीवी भी बनाते हैं। समारोह में संस्कृति एवं पर्यटन विभाग के प्रमुख सचिव तथा अयोध्या शोध संस्थान के अध्यक्ष मुकेश मेश्राम ने कहाकि यह पंचांग प्रदेश, देश एवं विश्व की सांस्कृतिक

विरासत के संरक्षण का महत्वपूर्ण प्रयास है। उन्होंने कहा कि संस्थान पिछले कई वर्षों से पंचांग के माध्यम से इस दायित्व का निर्वाह कर रहा है। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ.लवकुश द्विवेदी ने कहा कि संस्थान का यह वार्षिक पंचांग श्रीराम की संस्कृति को वैश्विक पटल पर ले जाने में सहायक होगा। समारोह में संस्कृति निदेशालय के सहायक निदेशक अमित अग्निहोत्री सहित संस्कृति एवं पर्यटन विभाग के कई प्रमुख अधिकारी उपस्थित थे। अयोध्या पंचांग विक्रम संवंत 2079, शक संवंत 1944 तथा सन् 2022-23 पर आधारित है । यह रामलीला के आकर्षक चित्रों से युक्त है। पंचांग में नेपाल, इंडोनेशिया, कंबोडिया, रूस, थाईलैंड, बाली, श्रीलंका, सूरीनाम, त्रिनिदाद एवं टोबेगो जैसे देशों की प्रसिद्ध रामलीला के साथ ही देश के जम्मू, छत्तीसगढ़, राजस्थान, मध्यप्रदेश, नई दिल्ली के रामलीला के आकर्षक चित्र शामिल किए गए हैं। साथ ही पंचांग में प्रदेश के वाराणसी, रामनगर, अयोध्या, गोरखपुर, प्रयागराज, उरई, अकबरपुर, बलिया, जसवंत नगर, फिरोजाबाद की रामलीला के विविध प्रसंगों को दर्शाया गया है। पंचांग में रामलीला में प्रयोग होने वाले मुखौटों के चित्र भी दिए गए हैं। पंचांग में व्रत, उत्सव, पर्व, मुहूर्त, सूर्योदय, सूर्यास्त सहित विविध जानकारियों से परिपूर्ण है।

पुलिस कमिश्नर ने पैदल गस्त कर कानून व्यवस्था का लिया जायजा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। ईद उल फित्र त्यौहार व कमिश्नरेट लखनऊ की चाक चौबंद कानून व्यवस्था को बनाये रखने हेतु सोमवार को लखनऊ पुलिस आयुक्त डी के ठाकुर ने भारी पुलिस बल के साथ सड़कों पर निकलकर पुलिस की मुस्तैदी को परखा एवं कानून व्यवस्था का जायजा लिया। पुलिस कमिश्नर लखनऊ ने थाना मोहनलालगंज क्षेत्र में फुट पेट्रोलिंग करते हुए आम जनता के साथ संवाद एवं समन्वय स्थापित किया। ईद त्यौहार पर सुरक्षा व्यवस्था एवं बालिका, महिला सुरक्षा के दृष्टिगत भीड़भाड़ वाले स्थानों, बाजारों, मुख्य चौराहों एवं मिश्रित आबादी वाले संवेदनशील स्थानों पर पैदल गस्त कर संदिग्ध व्यक्तियों, वाहनों एवं वस्तुओं की गहनता से चेकिंग की गई। शासन के निर्देशानुसार चलाये जा रहे मिशन शक्ति अभियान के तहत धार्मिक स्थलों, स्कूल, कोचिंग सेंटरों, कॉलेजों, बाजारों, शॉपिंग मॉल व भीड़भाड़ वाले स्थानों पर मनचलों द्वारा छेड़छाड़ व महिला उत्पीड़न की घटनाओं पर प्रभावी अंकुश लगाए जाने हेतु जनपद स्तर पर गठित एण्टी रोमियो टीमों द्वारा सतर्क निगरानी रखी जा रही है, साथ ही महिलाओं एवं बालिकाओं को सुरक्षित परिवेश की अनुभूति जन जागरूकता, आत्मरक्षा की कला पैदा करने के लिए महिला हेल्पलाइन-1090, यूपी-112 महिलाओं की सुरक्षा संबंधी अधिकारों एवं सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म आदि का सतर्कता पूर्ण उपयोग करने संबंधी जानकारियां देते हुए जागरूक किया जा रहा है। फुट पेट्रोलिंग के दौरान पुलिस उपायुक्त दक्षिणी, सहायक पुलिस आयुक्त मोहनलालगंज, थाना प्रभारी एवं अन्य फोर्स मौजूद रही।

अपर मण्डल रेल प्रबन्धक ने किया लोको रनिंग रूम का निरीक्षण

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। पूर्वोत्तर रेलवे के जनसम्पर्क विभाग के द्वारा बताया गया कि पूर्वोत्तर रेलवे लखनऊ मण्डल के अपर मण्डल रेल प्रबन्धक परिचालन शिशिर सोमवंशी की अध्यक्षता में लखनऊ मण्डल के विभिन्न रनिंग रूम के निरीक्षण हेतु गठित रनिंग रूम स्टैण्डिंग कमेटी में नामित एन ई रेलवे मजदूर यूनियन लखनऊ, ओबीसी एसोसिएसन एवं एससीएसटी एसोसिएसन लखनऊ के पदाधिकारियों की उपस्थिति में मैलानी जं0 स्थित लोको रनिंग रूम का निरीक्षण किया गया। जिसमें ट्रेन संचलन से जुड़े लोको पायलट एवं ट्रेन मैनेजर द्वारा सुरक्षित एवं सरंक्षित गाड़ी संचालन, ड्यूटी पर आने से पूर्ण विश्राम का उपभोग करने, ड्यूटी के दौरान आने वाली समस्याओ को त्वरित निस्तारण तथा ड्यूटी के दौरान काम आने वाले संरक्षा उपकरणों की उपलब्धता हेतु संबंधित अधिकारियों को सुझाव प्रदान किया। एनई रेलवे मजदूर यूनियन के मण्डल मंत्री अजय कुमार वर्मा, एसटीएससी एसोसिएशन के मण्डल मंत्री दिनेश कुमार एवं ओबीसी एसोसिएसन के मंडल कार्यकारी अध्यक्ष संजय सिंह के पदाधिकारियों द्वारा रनिंग रूम में प्रदान की जाने वाली खानपान सुविधाओं, रेस्टरूम, मनोरंजन कक्ष एवं शौचालय एवं स्नानघर की साफ सफाई का जायजा लिया तथा विश्राम कर रहे लोको पायलट एव ट्रेन मैनेजर से उनकी आवश्यकताओं के बारे में चर्चा की। इस अवसर पर वरिष्ठ मण्डल विद्युत इंजीनियर परिचालन, वरिष्ठ मण्डल इंजीनियर द्वितीय एवं अन्य अधिकारीगण व कर्मचारी उपस्थित रहे।

चोरी के जनरेटर सहित दो चोर गिरफ्तार

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बख्शी का तालाब,लखनऊ। बीकेटी पुलिस ने सोमवार को चोरी का एक जनरेटर सहित दो चोरों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।इंस्पेक्टर अरविंद कुमार राणा ने बताया कि मुखबिर की सूचना मिली कि पूर्व में स्थानीय थाने पर जनरेटर चोरी की दर्ज एफआईआर के आरोपी नन्दना क्रासिंग के पास खड़े है।सूचना पर उपनिरीक्षक हाशिम रजा रिजवी ने पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंच कर दो आरोपी युवक जीवेंद्र कुमार निवासी सीतापुर रोड़ सेक्टर सी सब्जी मंडी कालोनी जानकीपुरम थाना अलीगंज लखनऊ व रवींद्र सिंह निवासी परमेश्वरी पुरवा थाना धौरहरा जनपद खीरी को गिरफ्तार कर लिया।वहीं दोनों के द्वारा नन्दना के पास गाड़ी में छीपा कर रख्खा गया एक जनरेटर को भी पुलिस ने बरामद कर लिया है।

अक्षय तृतीया पर बाल विवाह रोकने के लिए जिला प्रशासन की अपील

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बाल विवाह कुप्रथा को समाप्त करने में करें सहयोग

लखनऊ। अक्षय तृतीया पर बाल विवाह की परम्परा रही है, परन्तु एक सभ्य समाज में इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता है। कानूनी रूप से बाल विवाह पूर्णतया प्रतिबन्धित हैं, जिसे करने पर दण्ड का भी प्राविधान हैं।जनपद लखनऊ में अक्षय तृतीया पर होने वाले बाल विवाह को रोकने के लिये जिला प्रशासन द्वारा पूरी सर्तकता बरती जा रही हैं।

पुलिस, बाल कल्याण समिति, वन स्टॉप सेन्टर, चाइल्डलाइन बाल विकास महिला कल्याण व विभिन्न स्टेक होल्डर्स के साथ बाल विवाह निषेध हेतु जागरूकता व निगरानी हेतु बैठक की जा चुकी हैं। बाल विवाह एक सामाजिक बुराई है, जिससे न केवल एक बालिका का जीवन बर्बाद होता है अपितु एक नये परिवार का भविष्य भी बर्बाद हो जाता है।

जनपद में बाल कल्याण समिति, जिला बाल संरक्षण इकाई, महिला शक्ति केन्द्र, वन स्टॉप सेन्टर, वात्सल्य संस्था, मदर्स वेलफ़ेयर, समर्थ, पावर विंग्स व चैतन्य वेलफ़ेयर आदि द्वारा बाल विवाह रोकने के लिये निरन्तर जागरूकता कार्यक्रम किये जा रहे हैं। जिला प्रशासन की अपील है कि यदि किसी व्यक्ति को अक्षय तृतीया के अवसर पर बाल विवाह की कोई जानकारी मिलती हैं, तो तत्काल जिला प्रोबेशन अधिकारी के मोबाइल नम्बर-7518024019, बाल कल्याण समिति के मोबाइल नम्बर 7985567746, वन स्टॉप सेन्टर के मोबाइल नम्बर 9161977776, संरक्षण अधिकारी के मोबाइल नम्बर 8604888005 तथा चाइल्ड लाईन टोल फ्री 1098 अथवा सम्बन्धित थाने आदि को तत्काल अवगत कराये।

जिला प्रोबेशन अधिकारी द्वारा अवगत कराया गया कि बाल विवाह होने पर वर एवं कन्या के अभिभावकों को 02 वर्ष की सजा या 01 लाख रूपये का जुर्माना या फिर दोनों से दण्डित किये जाने का प्राविधान हैं तथा सभी सम्मानित नागरिकों से अपील की हैं कि बाल विवाह कुप्रथा को पूर्णत समाप्त करने में अपना सहयोग प्रदान करें।

डीसीपी नार्थ को व्यापारियों ने किया सम्मानित

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। आदर्श व्यापारी एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष राजेश सोनी ने बताया कि सोमवार को आदर्श व्यापारी एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने डीसीपी नार्थ डा एस चिनप्पा से उनके कार्यालय में मुलाकात कर उन्हे सम्मानित किया। राजेश सोनी ने बताया कि इंदिरा नगर थाना क्षेत्र में प्रखर ज्वेलर्स में हुई चोरी की घटना के सफल अनावरण एवं संपूर्ण माल बरामदगी के लिए डीसीपी नार्थ को सम्मानित किया गया एवं इस मौके पर संगठन के पदाधिकारियों द्वारा अक्षय तृतीया एवं ईद के त्योहार के मद्देनजर प्रमुख बाजारों में व्यापारियों के जान एवं माल की समुचित सुरक्षा हेतु पुलिस गश्त व पुलिस पिकेट उपलब्ध कराने का अनुरोध भी किया।

10 शिशिक्षुओं व 38 अभ्यर्थियों को रोजगार के लिए हुआ चयन

लखनऊ। व्यावसायिक शिक्षा एवं कौशल विकास विभाग उप्र के द्वारा विभिन्न व्यवसायों से आईटीआई उत्तीर्ण प्रशिक्षार्थियों के लिए दो कम्पनियों ने प्रतिभाग किया। जिसमें गोदरेज एग्रोवेट लि0 लखनऊ तथा अशोक लेलैण्ड रूद्रपुर उत्तराखण्ड के द्वारा जनपद स्तरीय रोजगार एवं शिशिक्षु मेले का आयोजन राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान अलीगंज में सम्पन्न हुआ। जिसका उद्घाटन संस्थान के प्रधानाचार्य आर एन त्रिपाठी द्वारा किया गया। ट्रेनिंग काउंसलिंग एवं प्लेसमेन्ट अधिकारी एम ए खाँ ने बताया कि रोजगार मेले में लगभग 200 प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया। जिसमें कम्पनी द्वारा गोदरेज एग्रोवेट लि0 लखनऊ ने 10 शिशिक्षुओं का चयन किया तथा अशोक लेलैण्ड रूद्रपुर उत्तराखण्ड 38 अभ्यर्थियों को रोजगार के लिए चयनित किया। इस अवसर पर एसपी निगम कार्यदेशक प्लेसमेन्ट सेल एवं अन्य कर्मचारियों का भी सहयोग रहा।

पीकू का मॉक ड्रिल करने के लिए लोकबंधु हास्पिटल पहुँचे अपर निदेशक

लखनऊ। अपर निदेशक लखनऊ मंडल डॉक्टर जी एस वाजपेई लोक बंधु अस्पताल में सोमवार की सुबह पीकू का मॉक ड्रिल करने के लिए पहुँचे। लोक बंधु अस्पताल की तरफ से बताया गया कि सेकंड फ्लोर स्थित पीकू में एक डमी मरीज लाया गया जिसको तुरंत वेंटिलेटर पर रखा गया। इस प्रोसेस को करने में लगभग 08 मिनट लगे। मॉक ड्रिल में डॉ सुरेंद्र, डॉक्टर बृजेश, बृजेंद्र व वैभव आदि उपस्थित थे। चिकित्सा अधीक्षक डॉ अजय शंकर त्रिपाठी ने बताया की अपर निदेशक ने इसके बाद पूरे अस्पताल का भ्रमण किया। जिसमें उन्हे इमरजेंसी की व्यवस्था चाक चौबंद मिली। गायनी ओपीडी की ओर जाने पर पता चला की सारे मरीज जिसमें गर्भवती महिलाएं भी थी आराम से कुर्सियों पर बैठी थी, टोकन सिस्टम बड़े अच्छे से काम कर रहा था और बिना भीड़भाड़ के वे अपने नंबर पर डॉक्टर से संपर्क कर रही थी।

पुलिस ने दो शातिर वांछित अभियुक्तो को किया गिरफ्तार

लखनऊ। थाना गोमती नगर प्रभारी निरीक्षक केशव कुमार तिवारी के निर्देशन में गोमती नगर पुलिस टीम द्वारा अभियुक्त अखिलेश सिंह व पम्मू वर्मा को विवेक खण्ड के पास से गिरफ्तार किया गया। गोमती नगर प्रभारी निरीक्षक केशव कुमार तिवारी ने बताया कि 01 मई को पीड़िता द्वारा अभियोग पंजीकृत कराया गया। जिसमें अभियुक्त अखिलेश सिंह द्वारा वादिनी के मायके वाले घर विवेकखण्ड में घुस कर वादिनी व उसके भाई के साथ हाथापाई करना, जान माल की धमकी देना तथा अभियुक्त अखिलेश सिंह द्वारा अपनी पत्नी के नाम पर किये गये जमीन एवं मकान को बेच कर रूपये वापस मांगने, न देने पर जान माल की धमकी दिये जाने एवं अभियुक्त पम्मू को वादिनी को जान से मारने हेतु सुपारी दिये जाने के सम्बन्ध में अभियोग पंजीकृत कराया गया।

आधार कार्ड बनवाने को लेकर मारामारी, लोग परेशान

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बख्शी का तालाब,लखनऊ।आधार कार्ड बनवाने को लेकर गर्मी में लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। क्योंकि, बैंकों में निर्धारित संख्या के अनुसार ही आधार कार्ड बनाए जाते हैं। मगर,लोगों की भारी भीड़ लग जाती है। इसको लेकर मारामारी रहती है। केंद्र सरकार ने बैंकों के माध्यम से आधार कार्ड बनवाए जाने के निर्देश जारी किए थे। इसके तहत बख्शी का तालाब में आर्यावर्त बैंक को लोगों के आधार कार्ड बनाने की जिम्मेदारी दी गई है। जानकारी के मुताबिक बैंक द्वारा सुबह दस बजे तक आधार कार्ड बनाए जाते हैं।वहीं आधार कार्ड बनवाने को लेकर बैंकों के बाहर सुबह छह बजे से लोगों की लंबी लाईन लग जाती है। बैंक द्वारा निर्धारित संख्या के अनुसार ही आधार कार्ड बनाए जाते हैं। जिस कारण बड़ी संख्या में लोगों को बिना आधार कार्ड बनवाए ही मायूस होकर लौटना पड़ता है।सोमवार को गर्मी के बीच बीकेटी स्थित आर्यावर्त बैंक के बाहर आधार कार्ड बनवाने को लोगों में मारामारी रही। अत्यधिक भीड़ होने की वजह से लोगों को परेशान होना पड़ा और बड़ी संख्या में लोग बिना आधार कार्ड बनवाए ही लौट गए।वहीं अपनी जन्मतिथि में त्रुटि का संशोधन कराने आये अरुण निवासी रुदही ने बताया कि पिछले सोमवार को हम आये थे और 100 रुपये भी जमा किये थे तब हमें आज 2 मई की डेट दी गई थी लेकिन अभी हमें आये करीब 1 घण्टा हो गया हमारा अभी तक नम्बर नही आया अस्ती निवासी सरजू ने बताया कि हमें अपने आधार कार्ड में मोबाइल नंबर बदलवाना है लगभग डेढ़ घंटे हो गया है लाइन में लगे हुये है अभी तक हमारा नम्बर नही आया है।ऐसे ही दर्जनों लोग हर रोज घण्टों लाइन में लगने के बाद निराश होकर बेरंग वापस घर लौट जाते हैं।

बाल निकुंज स्कूल के 228 मेधावी छात्र हुए सम्मानित

कैनविज टाइम्स संवाददाता

❐ कक्षा व सेक्शन वार हुआ टॉप-10 छात्र छात्राओं का चयन

लखनऊ। बाल निकुंज स्कूल के मीडिया प्रभारी ओपी वर्मा ने बताया कि बाल निकुंज इण्टर कालेज में सोमवार को 228 मेधावी छात्र छात्राए सम्मानित हुए। बाल निकुंज इण्टर कालेज की मोहिबुल्लापुर शाखा में सोमवाल को मेधावी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस आयोजन में वार्षिक परीक्षा 2022 में कक्षा व सेक्शन वार टॉप 10 के प्री प्राइमरी के सभी कक्षाओं के 60 मेधावी, गर्ल्स विंग के कक्षा 9 एवं 11 के सभी सेक्शन के 82 मेधावी तथा ब्वायज विंग के कक्षा 9 व 11 के 86 मेधावी छात्र छात्राओं को कालेज के प्रबंध निदेशक एच एन जायसवाल ने शील्ड प्रशस्ति पत्र एवं पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ कालेज के प्रबंध निदेशक द्वारा माँ सरस्वती को माल्यार्पण कर द्वीप प्रज्ज्वलन के साथ सरस्वती वंदना से हुआ। समारोह में बच्चों के द्वारा प्रस्तुत क्लासिकल डांस ने सबका मन मोह लिया। इस मौके पर प्रबंध निदेशक ने कहा कि सभी टॉप-10 मेधावी प्रतिभा के धनी है। सभी को अपनी पोजीशन कायम रखने के लिए और अधिक परिश्रम करते रहना होगा इसके लिए टाइम मैनेजमेण्ट और अपने गुरूओं के निर्देशन को सही रूप में अमल में लाना होगा। इस मौके पर गर्ल्स विंग प्रधानाचार्या भगवती भण्डारी एवं ब्वायज विंग की उपधानाचार्या अनीता मौर्या, इंचार्ज वीरेन्द्र कुमार व समस्त शिक्षक शिक्षिकायें तथा अभिभावकगण उपस्थित रहे।

साड़ी के सहारे पंखे से लटक कर महिला ने दी जान

गोसाईंगंज लखनऊ। कस्बा गोसाईंगंज के साहन टोला में सोमवार की दोपहर किसी बात को लेकर हुए विवाद के बड़ावेश में आकर एक महिला ने साड़ी के सहारे पंखेसे लटककर आत्महत्या कर ली। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया। जानकारी के मुताबिक गोसाईंगंज कस्बे के साहन टोला कस्बा निवासी नीरज कुमार शुक्ला की पत्नी सोनी शुक्ला (32) ने सोमवार की दोपहर साड़ी के फंदे से पंखे के सहारे लटक कर आत्महत्या कर ली। पति नीरज के मुताबिक घर मे आगामी गोद भराई की रश्म को लेकर कुछ विवाद हो गया। जिसके बाद नीरज अपनी 12 वर्षीय बेटी नियति को लेकर गोसाईंगंज बाजार चला गया। दोपहर करीब एक बजे वापस लौटने के बाद नीचे ही कमरे में सो गया। तभी मृतका की बड़ी बहन पप्पी ने आकर सूचना दी कि उसकी बहन के फांसी लगा ली। मृतका के पति नीरज ने बताया कि सूचना मिलने के बाद दरवाजा तोड़कर उसे फंदे से उतार कर पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुँची पुलिस ने शव को कब्जे के लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया।

कोतवाली पहुंचे पुलिस आयुक्त फोर्स संग किया फ्लैग मार्च

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। मोहनलालगंज कोतवाली पहुंचे पुलिस आयुक्त डी के ठाकुर ने किया अर्दली रुम मोहनलालगंज सर्किल के मोहनलालगंज व नगराम थानो का पुलिस आयुक्त ने किया अर्दली रूम विवेचको को अर्दली रुम में बारी-बारी से बुलाकर लम्बितं विवेचनाओ की समीक्षा कर दिये निस्तारण के सख्त निर्देश दिए आयुक्त ने कहा फरियादियों की शिकायतों का प्राथमिकता से करे निस्तारणअर्दली रूम के बाद मोहनलालगंज कस्बे में पुलिस आयुक्त डी के ठाकुर ने डीसीपी गोपाल चौधरी,एसीपी विजय राज सिहं व पुलिस फोर्स संग किया फ्लैग मार्च।

महापौर ने आरआर विभाग में किया औचक निरीक्षण

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। महापौर संयुक्ता भाटिया ने बलाकदर में चोरी के तेल खरीद का वीडियो वायरल होने का संज्ञान लेकर नगर आयुक्त अजय द्विवेदी संग गोमती नगर स्थित नगर निगम के केंदीय कार्यशाला आरआर विभाग में औचक निरीक्षण कर तेल आवंटन के दस्तावेज चेक किए और तेल चोरी न होने के लिए आवश्यक निम्न दिशा निर्देश दिए। साथ ही वीडियो में दिख रहे तेल माफिया सुशील गुप्ता के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कराने एवं तेल चोरी में संलिप्त नगर निगम कर्मियों की पहचान कर एफआईआर दर्ज कराने के लिए नगर आयुक्त और आरआर प्रभारी राम नगीना त्रिपाठी को निर्देशित किया। इस दौरान महापौर ने अपर नगर आयुक्त अभय पांडेय को वायरल वीडियो की जांच करने के लिए निर्देशित किया साथ ही तेल चोरी रोकने के लिए कड़े कदम उठाने के लिए भी निर्देशित किया। नगर आयुक्त अजय द्विवेदी संग अचानक आरआर विभाग पहुंची महापौर संयुक्ता भाटिया ने फोन कर आरआर प्रभारी राम नगीना त्रिपाठी को बुलाया एवं तेल आवंटन करने वाले दस्तावेज यथा लॉग बुक, इंट्री बुक तलब कर जांच की। इस दौरान सिर्फ 11 गाड़ियों की ही इंट्री बुक मिली, जिसपर महापौर ने नराजगी जताते हुए समस्त गाड़ियों की इंट्री बुक मंगवाई। इस दौरान महापौर ने कहा कि सभी गाड़ियों की तेल देते समय उसकी रीडिंग नोट करे और फ़ोटो खिंच कर डिजिटल डायरी बनाने के निर्देश दिए। महापौर ने नगर निगम के तेल माफियाओ पर शिकंजा कसने के लिये तेल चोरी में लिप्त रहे एक पूर्व ड्राइवर के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कराने के साथ ही वायरल वीडियो में तेल खरीदने वाले तेल माफिया के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कराने के लिए भी निर्देशित किया साथ ही तेल चोरों को पकड़ने के लिए अभियान चलाने को भी कहा।

एफआईआर दर्ज कराने के दिये निर्देश

डिब्बों में नहीं दिया जायेगा तेल : महापौर

निरीक्षण के दौरान महापौर ने राम नगीना त्रिपाठी एवं समस्त जोनल अधिकारियों को निर्देशित किया कि किसी भी स्थिति में डिब्बे या कन्टेनर में तेल न दिया जाए वरना दोशी पाए जाने पर सम्बंधित के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करने का निर्देशित किया।

सभी गाड़ियों में लगेगा जीपीएस, कंट्रोल रूम से होगी मोनिटरिंग

इस दौरान महापौर के पूछने पर नगर आयुक्त अजय द्विवेदी ने गाड़ियों में जीपीएस सेंसर लगाने के कार्य की धीमी गति पर नाराजगी जताई एवं कार्य की प्रगति पूछी जिसपर राम नगीना त्रिपाठी ने बताया कि 800 गाड़ियों में से 150 गाड़ियों में लग पाया है जिस पर नगर आयुक्त ने राम नगीना त्रिपाठी को सात दिनों में समस्त गाड़ियों में जीपीएस लगाने के निर्दश दिए। साथ ही आरआर विभाग में डाटा स्पेस खरीदकर कंट्रोल रूम बनाकर मोनेटरिंग करने के लिए कहा।

बिना लॉगबुक के नही मिलेगा गाड़ियों को तेल

महापौर और नगर आयुक्त ने स्पष्ट निर्देश दिए कि बिना गाड़ी की लॉगबुक के किसी को भी तेल न दिया जाए। गाड़ी कितनी चली उसकी रीडिंग जरूर नोट किया जाए और रीडिंग, माइलेज कार्य आवंटन के अनुसार ही तेल आवंटित किया जाए।

अपर पुलिस महानिदेशक की अध्यक्षता में अपराध की समीक्षा की

कोतवाली सदर का निरीक्षण कर कार्यालय, मालखाना, हवालात, मेस, बैरक, कम्प्यूटर कक्ष की परखी व्यवस्थाएं व जांचे रजिस्टर, हिदायत

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखीमपुर-खीरी। अपर पुलिस महानिदेशक लखनऊ जोन, लखनऊ, ब्रज भूषण द्वारा पुलिस लाइन सभागार जनपद खीरी में पुलिस अधीक्षक खीरी संजीव सुमन के साथ जनपद के समस्त क्षेत्राधिकारीगण, प्रभारी निरीक्षक एवं थानाध्यक्षों की गोष्ठी की गई। उक्त गोष्ठी के दौरान अपर पुलिस महानिदेशक द्वारा जनपद में घटित अपराधों की गहन समीक्षा की गई। अपराध गोष्ठी के दौरान थानों पर पंजीकृत अभियोगों की समीक्षा की गई एवं हत्या, डकैती, लूट जैसे जघन्य अपराधों के लंबित अभियोगों के गुण-दोष के आधार पर शीघ्र निस्तारण करने तथा वांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी सुनिश्चित करने हेतु निर्देशित किया गया। महिला संबंधी अपराधों को नियंत्रित करने हेतु प्रभावी कार्यवाही करने, शातिर अभ्यस्त अपराधियों को चिन्हित कर उनकी हिस्ट्रीशीट खोलने, शराब माफियाओं पर गैंगस्टर की कार्यवाही करने, गुंडा एक्ट, गैंगस्टर एक्ट 14(1) गैंगस्टर एक्ट, एनएसए के तहत कार्यवाही करने, जनशिकायतों की त्वरित व निष्पक्ष जांच कर विधिक निस्तारण सुनिश्चित करने, अवैध शराब/ अवैध शस्त्र/ जुआ/ मादक पदार्थ आदि अवैध कार्यों के विरूद्ध निरंतर अभियान चलाकर कड़ी कार्यवाही सुनिश्चित करने हेतु निर्देशित किया गया। जमानत पर बाहर आये अपराधियों की जमानत निरस्त कराने हेतु भी निर्देश दिए गए। धार्मिक विवाद के संबंध में त्वरित कार्यवाही करते हुए तत्काल इसकी सूचना उच्चाधिकारियों को भी देने हेतु निर्देशित किया गया। शासन तथा उच्चाधिकारियों द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न अभियानों में प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित करने, धार्मिक स्थानों पर लाउडस्पीकर की आवाज को न्यायालय के आदेश के क्रम में निर्धारित डेसीबल तक रखना सुनिश्चित कराने हेतु निर्देशित किया गया। जनपद में कहीं भी अवैध टैक्सी स्टैण्ड नहीं होने चाहिए तथा थाना परिसर एवं थाना कार्यालय की साफ सफाई पर विशेष ध्यान देकर पब्लिक के बैठने व गर्मी में पानी पीने की व्यवास्था करने, थाने में खडे वाहनों का डिस्पोजल कराने, साइबर अपराधियों के विरुद्ध कार्यवाही करने, महिला हेल्प डेस्क को सक्रिय एवं प्रभावी रखने, जिले के टॉप-10 अपराधियों की निरंतर समीक्षा करने, गैंगस्टर के अभियुक्तों के विरुद्ध 14(1) की कार्यवाही करने आदि के संबंध में निर्देश दिये गये। इसके अतिरिक्त थाना कोतवाली सदर का निरीक्षण भी किया गया। निरीक्षण के दौरान सम्पूर्ण थाना परिसर का भ्रमण कर थाना कार्यालय, मालखाना, हवालात, मेस, बैरक, कम्प्यूटर कक्ष आदि का निरीक्षण कर रजिस्टर्स/अभिलेखों के व्यवस्थित रख-रखाव तथा उन्हें अद्यावधिक रखने हेतु निर्देशित किया गया। कुछ रजिस्टरों के अध्यावधिक न होने के संबंध में क्षेत्राधिकारी सदर व प्रभारी निरीक्षक थाना कोतवाली सदर को कडे निर्देश दिए गए। मालखाने में माल मुकदमाती के व्यवस्थित रख-रखाव तथा नियमानुसार माल का विधिक निस्तारण सुनिश्चित करने हेतु निर्देश दिए गए। जनसुनवाई से सम्बन्धित शिकायती प्रार्थना पत्र के निस्तारण की समीक्षा की गई व महिला हेल्प डेस्क की समीक्षा करते हुए महिला पुलिस कर्मियों को फरियादियों से अच्छे व्यवहार करने व उनकी समस्याओं को सुनकर गुणवत्तापूर्ण निस्तारण हेतु दिशा-निर्देश दिए गए। वहीं प्रत्येक जनशिकायत का फीडबैक स्वयं प्रभारी निरीक्षक को करने के लिए निर्देशित किया गया। पुलिसकर्मियों को ड्यूटी के दौरान साफ-सुथरी एवं निर्धारित वर्दी धारण करने हेतु भी निर्देशित किया गया।

हीटवेव एवं सूखा प्रबंधन योजना के संबंध में बैठक

कैनविज टाइम्स संवाददाता

अंबेडकर नगर। जिलाधिकारी सैमुअल पॉल एन के निर्देश पर मुख्य विकास अधिकारी घनश्याम मीणा की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में हीटवेव एवं सूखा प्रबंधन योजना के संबंध में बैठक आयोजित किया। बैठक के दौरान मुख्य विकास अधिकारी ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्देश देते हुए कहा कि लू से बचाव हेतु ए एन एम, आशा, आंगनबाड़ी कार्यकत्रीयों को प्रशिक्षण दिलाया जाए तथा निर्जलीकरण से बचाव के लिए ओ आर एस पैकेट की व्यवस्था व्यापक रूप से किया जाए। मुख्य विकास अधिकारी द्वारा मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी को निर्देश दिया गया कि सभी गौशालाओं का निरीक्षण कराते हुए यह देख लिया जाए कि गौशालाओं पर पशुओ हेतु पीने के लिए पानी, भूसा, चोकर आदि की पर्याप्त मात्रा में व्यवस्था है कि नहीं है यदि नहीं है तो उसकी व्यवस्था तत्काल कराया जाना सुनिश्चित किया जाए।शहर व कस्बों के प्रमुख स्थानों पर निशुल्क प्याऊ की व्यवस्था करने के लिए समस्त अधिशासी अधिकारी नगर पालिका को निर्देशित किया गया। वैकल्पिक फसलों के साथ खाद एवं बीज के प्रबंध की व्यवस्था तथा कंपोस्ट खाद तथा जैविक खाद व्यवस्था,कृषि तकनीकी फसल, प्रदर्शनी का आयोजन, उन्नतशील कृषि यंत्रों की व्यवस्था आदि हेतु कृषकों को जागरूक करने के लिए जिला कृषि अधिकारी को निर्देशित किया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में राजकीय नलकूपों तथा निजी नलकूपों से तालाब एवं पोखर भरवाए जाने का कार्य तथा खराब हैंडपंपों का पूर्व से रिबोर एवं मरम्मत का कार्य हेतु डी पी आर ओ को निर्देशित किया गया है। बैठक के दौरान मुख्य विकास अधिकारी समस्त अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि अपने अपने कार्यालय में पब्लिक के बैठने की व्यवस्था, पीने के लिए स्वच्छ पानी की व्यवस्था अवश्य कर लिया जाए जिससे जो भी पब्लिक कार्यालय में आए।उसको किसी प्रकार की समस्या न हो।बैठक के दौरान उन्होंने कहा कि सूखे के प्रभाव को कम करने के लिए वर्षा के पानी का अधिकतम उपयोग करना तथा संरक्षण करना, पानी के बहाव को कम करना तथा उसे संरक्षित करना आदि उपाय करना चाहिए। बैठक के दौरान मुख्य विकास अधिकारी द्वारा नहर विभाग को निर्देशित किया गया कि नहरों में पानी अंतिम टेलो तक पहुंचाया जाना सुनिश्चित किया जाए। बैठक के दौरान अपर जिलाधिकारी अशोक कुमार कनौजिया, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ श्रीकांत शर्मा ,समस्त उपजिलाधिकारी, जिला सूचना अधिकारी संतोष कुमार द्विवेदी, समस्त अधिशासी अधिकारी तथा संबंधित विभाग के अधिकारी कर्मचारी मौके पर उपस्थित रहे।

मानवीय दृष्टिकोण अपनाते हुए उचित कार्यवाही करने की मांग

कैनविज टाइम्स संवाददाता

अकबरपुर नगर । एनजीटी के आदेश के अनुपालन में तमसा नदी के किनारे स्थित दोनों तरफ सौ सौ मीटर के दायरे में बने मकानों व भवनों को हटाने व गिराए जाने को लेकर आज इसकी जद में आ रहे तमाम गरीब व मध्यम वर्ग के आम जनमानस की आवाज को मुखरता प्रदान करते हुए भारी जनसमूह के साथ अकबरपुर चेयरमैन सरिता गुप्ता ने जिलाधिकारी से भेंट कर तथ्य और उसके मानक और मापदंड की जानकारी हासिल करते हुए जनता में फैले भय एवं भ्रम को दूर कर मानवीय दृष्टिकोण अपनाते हुए उचित कार्यवाही करने की मांग किया ! बरकत अली ने कहा कि इसके लिए हम सभी नगरवासी अकबरपुर चेयरमैन सरिता गुप्ता का हार्दिक आभार प्रकट करते हैं समाजसेवी बरकत अली, सुमित जायसवाल, भल्लू लखवानी, अख्तर जमाल अंसारी, विवेक तिवारी, सुरेंद्र राव, सुरेश कुमार सिंह, रामकेवल वर्मा संतोष तिवारी, नरोत्तम तिवारी, कुलदीप गौड़ लाल जी गौड़ विवेक तिवारी, विजय कुमार श्रीवास्तव अभिषेक कुमार गौड़, प्रमोद कुमार, साधु गौड़, निजामूलहक, अनिल कुमार वर्मा, राम अवध वर्मा ,बृज किशोर, सुरेंद्र वर्मा, रामकेवल वर्मा आदि लोग मौजूद रहे ।

संदिग्धावस्था में कमरे से फंदे पर झूलता मिला विवाहिता का शव

कैनविज टाइम्स संवाददाता

❑ मायके पक्ष ने जताई हत्या कर शव लटकाने की आशंका, पति समेत सास व ससुर को बताया आरोपी

ओयल-खीरी। चौकी क्षेत्र अंतर्गत सीतापुर-लखीमपुर फोरलेन किनारे स्थित एक गांव में पति से हुवे मामूली विवाद में विवाहिता ने फांसी लगा कर आत्महत्या कर ली। मायके पक्ष ने हत्या कर शव लटकाने की आशंका जाहिर की हैं। सूचना पर पहुंची पुलिस व नायब तहसीलदार ने शव को फंदे से उतरवा कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार पीड़ित पिता रमेश गौतम निवासी ग्राम दौरा श्रीनगर जिला खीरी ने बताया कि उसने अपनी बेटी अनुपा (22) को शादी बीते करीब डेढ़ वर्ष पूर्व हिंदू रीति रिवाज के अनुसार यथा सामर्थ्य ग्राम डिम्हौरा, चौकी ओयल थाना व खीरी निवासी सरोज गौतम से की थी। सरोज मजदूरी करता है, बेटी बताती थी को वह बहुत शराब पीता है। जिसको ले कर अकसर दोनों में झगड़ा होता रहता था। सोमवार प्रातः करीब 5बजे फोन से सूचना मिली कि तुम्हारी पुत्री ने फांसी लगा कर आत्महत्या कर ली है। सूचना मिलते ही पहुंचे परिजन में पुत्री को फांसी पर झूलता देख चिख पुकर मचा गई। आरोप है कि बीती रविवार रात सरोज अधिक शराब पी कर आया और दोनों में बहुत ज्यादा झगड़ा हो गया, सरोज ने उसे इतना मारा की अनुपा की मौत हो गई तो कमरे की छत में लगे कुंडे में साड़ी से फंदा बना कर उसे लटका दिया, जिसमें ससुर रामसनेही व सास भी सामिल है। घटना की जानकारी मिलते ही चौकी इंचार्ज दिलीप कुमार प्रजापति, कांटेबल आशीष प्रजापति, सचिन कुमार, महिला आरक्षी निशा चौहान को लेकर पहुंचे और उच्चाधिकारियों को सूचित किया। मामले की जानकारी होते ही नायब तहसीलदार आलोक कुमार भी पहुंच गए। जिसके बाद शव को फंदे से उतरवा पंचनामा भरकर परीक्षण के लिए भेज दिया गया। इस बावत चौकी प्रभारी दिलीप कुमार प्रजापति ने बताया कि घटना की सूचना मिली थी, शव को मजिस्ट्रट की उपस्थिति में फांदे से उतरवा कर परीक्षण के लिए भेज दिया गया है, रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्यवाही की जायेगी।

आरोपी के माता-पिता संगीता के साथ रहते हैं अलग

मामले को लेकर जब ग्रामीणों व प्रधान प्रतिनिधि राजेश कुमार से बात की गई तो उन्होंने बताया कि सरोज की शादी के बाद पिता रामसनेही से नहीं बनती थी, जिस कारण पिता ने उसका बटवारा कर अलग कर दिया था। सरोज अपनी बीबी के सथ रहता था। वहीं उसके माता, पिता अपनी 18 वर्षीय पुत्री संगीता जो कि मांसिक व रुप से दिव्यांग होने के साथ ही न बोल सकती है और न ही चल-फिर सकती है के साथ रहते हैं। अनुपा के पिता द्वारा रामसनेही और उसकी पत्नी पर लगाये गये आरोप निराधार हैं।

भाजपा की तीन दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग का उद्घाटन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

अंबेडकर नगर। भारतीय जनता पार्टी की तीन दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग का उद्घाटन डाक्टर राम मनोहर लोहिया सभागार में मुख्य अतिथि भाजपा प्रदेश महामंत्री/क्षेत्रीय प्रभारी अमर पाल मौर्य ने भाजपा जिलाध्यक्ष डाक्टर मिथिलेश त्रिपाठी,क्षेत्रीय महामंत्री/जिला प्रभारी विजय प्रताप सिंह,त्रयंबक तिवारी,विधान परिषद सदस्य हरि ओम पाण्डेय,जिला पंचायत अध्यक्ष श्याम सुन्दर वर्मा के साथ डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पण्डित दीन दयाल उपाध्याय के चित्र पर पुष्प अर्पण एवम दीप प्रज्ज्वलित कर किया।मुख्य अतिथि अमर पाल मौर्य का भाजपा जिलाध्यक्ष डाक्टर मिथिलेश त्रिपाठी ने अंगवस्त्र और स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया।विशिष्ट अतिथियों का स्वागत वर्ग प्रमुख राम प्रकाश यादव,प्रशिक्षण प्रमुख अमरेंद्र कांत सिंह,कार्यक्रम प्रमुख रमेश चंद्र गुप्ता,वर्ग नियंत्रक बाल्मीकि उपाध्याय,सह नियंत्रक मनीष मिश्र ने बैच लगाकर किया।डाक्टर राम मनोहर लोहिया सभागार में मुख्य अतिथि अमर पाल मौर्य ने भाजपा का इतिहास और विकास विषय पर बोलते हुए कहा कि भारतीय जन संघ की स्थापना डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने किया था।भारतीय जनता पार्टी की स्थापना पण्डित दीन दयाल उपाध्याय ने 6 अप्रैल 1980 को किया गया।जिसने बृहद रूप वर्ष 2014 में प्राप्त किया।उन्होंने कहा कि 1962 में कांग्रेस की गलत नीतियों का लाभ चीन 5 उठाया था।भाजपा पण्डित दीन दयाल उपाध्याय के अंत्योदय की परिकल्पना को साकार कर रही है।भाजपा देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए सदैव प्रयत्नशील रही है।भारतीय जनता पार्टी के राम राज्य की परिकल्पन को आज पूरा किया जा रहा है।प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में विकास की यात्रा निरंतर आगे बढ़ रही है।भारतीय जनता पार्टी के संकल्प और साहस का ही परिणाम रहा की जम्मू कश्मीर से धारा 370 और 35 ए समाप्त हुआ।प्रशिक्षण वर्ग को अपने अपने सत्रों में पूर्व स्वास्थ्य मंत्री रमापति शास्त्री,विधायक सुभाष त्रिपाठी,क्षेत्रीय महामंत्री/जिला प्रभारी विजय प्रताप सिंह ने संबोधित किया । प्रशिक्षण वर्ग में प्रमुख रूप से भाजपा क्षेत्रीय महामंत्री त्रयंबक तिवारी,विधान परिषद सदस्य हरि ओम पाण्डेय,जिला पंचायत अध्यक्ष श्याम सुन्दर वर्मा,चेयर मैन सरिता गुप्ता,पूर्व विधान सभा प्रत्याशी धर्म राज निषाद,कपिल देव वर्मा,त्रिवेणी राम,सुभाष राय,अवधेश द्विवेदी,ब्लाक प्रमुख संजय सिंह,अनिल वर्मा मौसम,जिला उपाध्यक्ष सुमन पाण्डेय,विमलेंद्र प्रताप सिंह मोनू,सन्तोष कुशवाहा,डाक्टर रजनीश सिंह,सुरेश कन्नौजिया,बाबा राम शब्द यादव,दिलीप पटेल देव,जिला मीडिया प्रभारी बाल्मीकि उपाध्याय,क्षेत्रीय महामंत्री किसान मोर्चा रमापति मौर्य,अल्प संख्यक मोर्चा प्रदेश मंत्री नेहा खान,उपमा पाण्डेय, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष रिंकल सिंह, अंजू पाण्डेय, राम किशोर राजभर, संजीव सिंह, घिसियावन मौर्य,विकास मोदनवाल, डाक्टर ओ पी त्रिपाठी, चंद्रिका प्रसाद, पंकज वर्मा, संजय सिंह, इंद्रेश निषाद, विनय पाण्डेय, इंद्रेश निषाद, अभिमन्यु अग्रहरि, अभिषेक सिंह सिंटू, संदीप श्रीवास्तव, मनीष मिश्र, डाक्टर डी सी त्रिपाठी, रितु बहल, के डी मिश्र, सुनीता चौहान, प्रकाश चंद्र शुक्ल, अनंत राम मिश्र, भरत शुक्ल, शाश्वत मिश्र, दीपक तिवारी, अरविंद उपाध्याय, दिवाकर ओझा आदि मौजूद रहे।

सदर विधायक ने 156 छात्र छात्राओं को बांटे स्मार्टफोन व टेबलेट

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखीमपुर-खीरी। उत्तर प्रदेश के युवाओं को आधुनिक दौर से जोड़ने और स्वावलंबी बनाने को लेकर उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा यूपी फ्री स्मार्टफोन टैबलेट योजना की शुरुआत की गई है। इस योजना के अंतर्गत कमला डिग्री कॉलेज में 156 छात्र-छात्राओं को टेबलेट व स्मार्टफोन वितरित किए गए। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि सदर विधायक योगेश वर्मा ने शिरकत की तो इस दौरान एसडीएम सदर राजेश कुमार, विद्यालय प्रबंधक कलावती और कॉलेज प्रेसिडेंट बाल गोविंद शर्मा सहित डॉ. अरविंद शर्मा भी उपस्थित रहे। इस दौरान कमला डिग्री कॉलेज के प्रेसिडेंट बाल गोविंद शर्मा ने कहा कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा छात्र-छात्राओं को डिजिटल युग से जोड़ने की जो पहल की गई है। वह बेहद सराहनीय है। सदर विधायक योगेश वर्मा द्वारा 43 छात्र-छात्राओं को टेबलेट दिए गए हैं वहीं 113 छात्र-छात्राओं को स्मार्टफोन वितरित किए गए हैं। कॉलेज में उत्तर प्रदेश सरकार की इस योजना को समारोह पूर्वक मनाया गया है। जिन छात्र-छात्राओं को इस योजना का लाभ मिला है उन सभी के चेहरे खुशी से खिल उठे हैं। आने वाले समय में तमाम अन्य छात्र-छात्राओं को भी इस योजना का लाभ मिलने वाला है। सरकार की यह योजना छात्र-छात्राओं के लिए बेहद लाभप्रद रहने वाली है।

राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं अपराध नियंत्रण ब्यूरो के जिला संरक्षक बने डॉ. अवधेश कुमार त्रिपाठी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

अम्बेडकरनगर । स्थानीय बीएनकेबी पीजी कॉलेज अकबरपुर के पूर्व प्राचार्य डॉ अवधेश कुमार त्रिपाठी को राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं अपराध नियंत्रण ब्यूरो ईकाई अम्बेडकरनगर का जिला संरक्षक सामान्य विंग नियुक्त किया गया है।राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं अपराध नियंत्रण ब्यूरो के राष्ट्रीय अध्यक्ष रणधीर कुमार के द्वारा राष्ट्रीय सचिव इन्तखाब अहमद की संस्तुति पर आईडी क्रमांक गक्त्टएएउ/2395 के आधार पर डॉ त्रिपाठी को उत्तर प्रदेश के अम्बेडकरनगर जनपद का जिला संरक्षक नियुक्त किया गया है।डॉ त्रिपाठी को राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं अपराध नियंत्रण ब्यूरो की ईकाई अम्बेडकरनगर बनाये जाने पर एन एच आर सी सी बी के अम्बेडकरनगर डिस्ट्रिक्ट मीडिया आफीसर डॉ जितेन्द्र कुमार उपाध्याय एवं डिस्ट्रिक्ट लीगल एडवाइजर प्रमोद कुमार मिश्रा एडवोकेट, हिन्दुस्तान दैनिक के ब्यूरो सर्वजीत त्रिपाठी आदि के द्वारा हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त किया है।

संविलियन विद्यालय सदर के सवरंगे दिन, शुरू हुए प्रयास

गोद लिए विद्यालय को देखने पत्नी संग पहुंचे डीएम

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखीमपुर-खीरी। सालों से बदहाली का शिकार नगर क्षेत्र लखीमपुर के संविलियन विद्यालय सदर के अब 'अच्छे दिन' आने वाले है। क्योंकि स्वच्छ एवं सुंदर लखीमपुर खीरी अभियान व आदर्श विद्यालय योजना के तहत डीएम महेंद्र बहादुर सिंह ने इस विद्यालय की सूरत संवारने का जिम्मा स्वयं अपने कंधों पर उठाया है। इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि सोमवार को डीएम महेंद्र बहादुर सिंह अपनी धर्मपत्नी एवं जिला आकांक्षा समिति की अध्यक्ष अल्पना सिंह के संग दोपहर 12 बजे प्राथमिक विद्यालय सदर पहुंचे। इस दौरान उन्होंने पूरे विद्यालय परिसर का भ्रमण करके उसे आदर्श विद्यालय बनाने के लिए किए जाने वाले कामों पर गहन मंथन किया। करीब 45 मिनट के अपने भ्रमण में डीएम ने बीएसए व नगर शिक्षा अधिकारी से विद्यालय नई पहचान दिलाने के साथ ही स्वच्छ एवं सुंदर बनाने के लिए रणनीति बनाई। बताते चलें कि जल्द ही इसको संभालने का काम शुरू होगा। समय-समय पर डीएम स्थलीय निरीक्षण कर तय कामो का अनुश्रवण एवं पर्यवेक्षण भी करेंगे।

इन बिंदुओं पर विद्यालय में होगा काम

बाउंड्री वॉल, गेट का ऊंचीकरण, वॉल पेंटिंग, इंटरलॉकिंग, कक्षा कक्षों की मरम्मत, शौचालयों को क्रियाशील व टाइल्सयुक्त बनाने, झूले, पौधरोपण व पौधों की कटाई-छटाई, जलभराव की समस्या का निदान, बच्चों को सामान्य ज्ञान की जानकारी, बालिकाओं हेतु मीना मंच, प्रेरक शिक्षण, वायरिंग एवं उपकरण, रंगाई-पुताई, फर्नीचर, रसोई घर की मरम्मत एवं सुंदरीकरण जर्जर भवन का धस्तिकरण होने की कार्यवाही चरणबद्ध रूप से होगी।

आश्रय गृह सह प्रशिक्षण केन्द्र के संचालन के लिए सहायता

अंबेडकर नगर। जनपद के मानसिक मंदित तथा मानसिक रूप से रूग्ण निराश्रित दिव्यांग जन हेतु आश्रय गृह सह प्रशिक्षण केन्द्रों के संचालन हेतु स्वैच्छिक संगठनों को सहायता प्रदान किये जाने की व्यवस्था प्रदेश सरकार द्वारा की गयी है।निःशक्त व्यक्ति (सामान्य अवसर, अधिकारों का संरक्षण और पूर्ण भागीदारी)अधिनियम-1995, के अन्तर्गत पंजीकृत प्रदेश के स्वैच्छिक संगठन जो मानसिक मंदिता के क्षेत्र में अनुभव तथा उक्त योजना हेतु पात्रता रखते हो, दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग, उ0प्र0 की वेबसाइट द्धष्ध्/द्धबद.फ्.द्धद्वद.द्धद्ध से प्रश्नगत योजना से सम्बन्धित दिशा-निर्देश व आवेदन पत्र का प्रारूप प्राप्त कर सकते हैं।इच्छुक स्वैच्छिक संस्थाओं से मानसिक मंदित तथा मानसिक रूप से रूग्ण निराश्रित दिव्यांग जन के लिए आश्रय गृह सह प्रशिक्षण केन्द्र के संचालन हेतु सहायता योजनान्तर्गत वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए अनुदान प्रस्ताव विलम्बतम दिनांक 30 जून, 2022 तक अधोहस्ताक्षरी कार्यालय को उपलब्ध करा सकते हैं।

ईंट भट्ठे पर कार्य कर रहे मज़दूरों के 27 बच्चों का प्राथमिक विद्यालय अढ़नपुर में नामांकन

अंबेडकर नगर। स्कूल चलो अभियान के तहत तहसीलदार भीटी सुनील कुमार व खण्ड शिक्षा अधिकारी भीटी श्याम कुमार सिंह ने ग्राम अढ़नपुर में स्थित ईंट भट्ठे पर कार्य कर रहे मज़दूरों के 27 बच्चों का प्राथमिक विद्यालय अढ़नपुर में नामांकन कराया तथा स्कूल जाने के लिए प्रोत्साहित किया ,बच्चों के माता पिताओं को शिक्षा के महत्व व शिक्षित होने से जीवन मे होने वाले गुणात्मक सुधारों से अवगत कराया तहसीलदार द्वारा प्रेरित करने पर ईट भट्टा मालिक जितेंद्र सिंह ने स्वयं बच्चों को प्रतिदिन स्कूल पहुचाने की जिम्मेदारी ली।

अफसरों ने पूरा किया स्कूलों व आंगनबाड़ी केंद्रों के निरीक्षण का कागजी कोरम

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

- जनपद के 300 प्राथमिक विद्यालयों व 300 आंगनबाड़ी केन्द्रों का हुआ औचक निरीक्षण
- फील्ड स्तरीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों के स्तर पर लापरवाही पर दण्डात्मक कार्यवाही : माला श्रीवास्तव

रायबरेली। डीएम माला श्रीवास्तव के निर्देश पर जनपद स्तरीय एवं विकास खण्ड स्तरीय अधिकारियों के माध्यम से कराए गए परिषदीय विद्यालयों व आंगनबाड़ी केंद्रों के निरीक्षण का कागजी कोरम पूरा हो गया है। जिले का चार्ज लेने के बाद प्राथमिक शिक्षा को पटरी पर लाने के जिस उद्देश्य के साथ डीएम माला श्रीवास्तव ने इस निरीक्षण का आदेश दिया था उसकी हवा शिक्षा विभाग के 'विभीषणों' और जांच में गए अधिकारियों ने निकाल कर रख दी। पूरे जिले में बदहाल प्राथमिक शिक्षक किसी से छिपी नहीं है। निरीक्षण के दौरान जिले भर के स्कूलों में सब कुछ ठीक-ठाक मिलना स्वतः इस बात का प्रमाण है कि जिस पवित्र मंशा के साथ डीएम द्वारा कराए गए इस निरीक्षण को पूरे मन से नहीं किया गया है। वरना खामियों का अंबार मिलता। डीएम द्वारा निरीक्षण का आदेश बेसिक शिक्षा विभाग से सार्वजनिक कर दिया गया। शिक्षा विभाग के व्हाट्सएप ग्रुप में यह आदेश वायरल हो गया। जिसके बाद निरीक्षण को लेकर बेसिक शिक्षा विभाग और विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक सजग हो गए। फिलहाल निरीक्षक का जो सरकारी आंकड़ा सामने आया है उसमें सब कुछ ठीक मिला। कुछ आंगनबाड़ी केंद्रों पर कार्यकत्रियों और सहायिकाओं के अनुपस्थित होने की खबर है जिसमें उनसे स्पष्टीकरण मांगा गया है। डीएम के द्वारा कराए गए इस निरीक्षण को अगर संजीदगी से लिया जाता तो प्राथमिक शिक्षा की एक बदली तस्वीर दिखाई पड़ती। निरीक्षण के दौरान लगभग 300 प्राथमिक विद्यालयों तथा 300 आंगनबाड़ी केन्द्रों का औचक निरीक्षण कराया गया। अधिकारियों द्वारा मौके पर जाकर विद्यालयों में अध्यापकों एवं छात्रों की उपस्थिति, मध्याहन भोजन वितरण तथा कायाकल्प के अन्तर्गत कराए गए कार्यों का विस्तृत निरीक्षण एवं अवलोकन किया गया। आंगनबाड़ी केन्द्रों पर आंगनबाड़ी कार्यकत्री एवं आंगनबाड़ी सहायिकाओं की उपस्थिति तथा केन्द्र संचालन की गुणवत्ता का भी पर्यवेक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों द्वारा अनुपूरक पुष्टाहार के रूप में बच्चों एवं गर्भवती धात्री महिलाओं को दिये जाने वाले पौष्टिक आहार जैसे गेहूं, दलिया, फोर्टिफाइड चावल, चना दाल तथा फोर्टिफाइड तेल के प्राप्त एवं वितरण की स्थिति की जानकारी प्राप्त की गयी।

निरीक्षण के दौरान अधिकारियों द्वारा आंगनबाड़ी केन्द्रों पर उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं जैसे पेयजल, शौचालय, बच्चों के बैठने की व्यवस्था, विद्युत कनेक्शन तथा आंगनबाड़ी केन्द्र पर बच्चों का वजन एवं लम्बाई मापे जाने हेतु उपलब्ध उपकरणों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की गयी। अधिकारियों द्वारा आंगनबाड़ी केन्द्र पर नियमित रूप से पुष्टाहार वितरण, साफ-सफाई स्वच्छता तथा आंगनबाड़ी केन्द्रों पर बच्चों की उपस्थिति बढ़ाये जाने के सम्बन्ध में अनेक सुधारत्मक सुझाव भी अपनी रिपोर्ट में अधिकारियों द्वारा प्रदान किया गया है। निरीक्षण के दौरान चार आंगनबाड़ी कार्यकत्री एवं आठ आंगनबाड़ी सहायिका अनुपस्थित पाई गयी। जिन्हे कारण बताओ नोटिस जारी कर जवाब मांगा गया है। अधिकारियों द्वारा निर्धारित समय पर विद्यालयों का निरीक्षण करने पर विद्यालयों में छात्र उपस्थिति विद्यालय संचालन की गुणवत्ता का पर्यवेक्षण भी किया गया। अधिकारियों द्वारा मध्यान्ह भोजन का निरीक्षण करने पर प्राथमिक विद्यालय सिसनी भुवालपुर, छतोह, प्रावि पूरे लाल सिंह, जगतपुर व प्रावि बेलागुसीसी, राही में मेन्यू के अनुसार भोजन वितरित न किये जाने की स्थिति पाई गई है। जिसके क्रम में संबंधित को पृथक से नोटिस निर्गत की गई है। शेष सभी विद्यालयों में मध्यान्ह भोजन मीनू के अनुसार रोटी व सब्जी युक्त दाल बना पाया गया तथा कई अधिकारियों के निरीक्षण के समय मध्यान्ह भोजन छात्रों में वितरित किया जा रहा था, जो मेन्यू के अनुसार गुणवत्तापरक था। कतिपय विद्यालयों के ऑपरेशन कायाकल्प के अन्तर्गत निर्धारित पैरीमीटरों के अनुसार पूर्ण रूप से संतृप्तीकरण न होने की स्थितियों के संदर्भ में सम्बन्धित ग्राम पंचायत से समन्वय स्थापित कर पाई गई कमियों का निवारण कराने हेतु आवश्यक कार्यवाही की जायेगी। अधिकारियों द्वारा विद्यालयों में मेन्यू के अनुसार मध्यान्ह भोजन वितरण, साफ-सफाई स्वच्छता तथा विद्यालयों में बच्चों का नामांकन एवं उपस्थिति बढ़ाये जाने के सम्बन्ध में सुधारत्मक सुझाव भी दिए गए। साथ ही अधिकारियों द्वारा निरीक्षण के समय सर्पोटिव सुपरविजन भी किया गया। उल्लेखनीय है कि परिषदीय विद्यालय एवं आंगनबाड़ी केन्द्र गांव बच्चों एवं महिलाओं के पोषण स्वास्थ्य एवं शिक्षा के सुधार की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। जिसके माध्यम से 06 वर्ष तक तथा 6 से 14 वर्ष के बच्चों में शारीरिक, मानसिक सहित सर्वांगीण विकास की नींव रखी जाती हैं तथा बचपन को सहेजा जाता हैं। जिलाधिकारी माला श्रीवास्तव ने बताया कि आंगनबाड़ी केन्द्रों तथा विद्यालयों का नियमित अनुश्रवण भविष्य में भी कराया जाता रहेगा तथा केन्द्र संचालन में आ रही समस्याओं को दूर कराया जायेगा एवं फील्ड स्तरीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों के स्तर पर यदि कोई लापरवाही पाई जाती है तो कठोरतापूर्वक दण्डित भी किया जायेगा।

श्रमिक दिवस पर बच्चों ने व्यक्त किए विचार

महराजगंज (रायबरेली)। महावीर स्टडी स्टेट सीनियर सेकेंड्री कॉलेज में बच्चों ने श्रमिक दिवस तथा ईद पर अपने महत्वपूर्ण विचार रखें। प्रधानाचार्य कमल बाजपेई ने बच्चों को बताया कि श्रमिक देवता की श्रेणी में आता है। जो अपने श्रम से अन्न उगाता है, मकान बनाता है, सड़के, पुल आदि के निर्माण में श्रमिकों का श्रम लगा होता है। जिससे हमें जीवन जीना सुलभ हो जाता है। हमारे प्रधानमंत्री ने श्रमिकों के चरण पखार कर उन्हें उच्च सम्मान दिया। जिसकी सभी ने प्रशंसा की। रमजान के पवित्र महीने के बाद ईद का पवित्र त्यौहार हमें भाईचारे तथा जरूरतमंदों की सहायता तथा आपसी सौहार्द की प्रेरणा देता है। बच्चों ने आपस में मोहब्बत तथा प्रदर्शन करते हुए लघुनाटिका प्रस्तुत की। प्रधानाचार्य ने सभी को महावीर स्टडी स्टेट परिवार की तरफ से शुभकामनाएं दी।

सर्राफा व्यापारी के अचानक गायब होने से मचा हड़कंप

महराजगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के याकुबगंज से खाना खाकर रविवार की देर शाम महराजगंज के लिए निकले सर्राफा व्यापारी का अचानक गायब होने पर उनके पुत्र ने कोतवाली पुलिस को गुमशुदगी की लिखित तहरीर दी है। तहरीर मिलते ही पुलिस व्यापारी की खोजबीन में लग गयी है। जानकारी के अनुसार मुकेश कुमार यादव पुत्र राम नरेश यादव निवासी याकुबगंज मजरे सोथी ने कोतवाली पुलिस को लिखित तहरीर देते हुए बताया कि उनके पिता राम नरेश यादव महराजगंज के प्रकाश नगर में मकान व दुकान बनवा सर्राफा का व्यापार करते हैं। रविवार की रात्रि लगभग नौ बजे पैतृक आवास याकूबगंज से भोजन करके महराजगंज के लिए निकले थे, परंतु महराजगंज नहीं पहुंचे। फोन भी नहीं उठ रहा है और ना ही मिल रहे है। रिश्तेदारी में भी खोजबीन करने पर कोई सूचना नहीं मिल रही। पिता के ना मिलने से परेशान पुत्र ने कोतवाली पुलिस को लिखित तहरीर देकर गुमशुदगी दर्ज कराने की मांग की है। तहरीर मिलते ही कोतवाली पुलिस सर्राफा व्यापारी की खोजबीन में जुट गई है।

न्यू स्टैंडर्ड में मनाया गया ईद का त्यौहार

महराजगंज (रायबरेली)। क्षेत्र के सलेथू स्थित न्यू स्टैंडर्ड पब्लिक स्कूल में ''ईद उल फितर '' पर्व की पूर्व संध्या पर बच्चों एवं विद्यालय परिवार द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से इस त्योहार को मनाया गया तथा सभी को त्यौहार की मुबारकबाद दी गयी। विद्यालय के प्रधानाचार्य राजीव कुमार सिंह ने सभी को त्यौहार की बधाई देते हुए यह कहा कि सभी त्यौहार प्रेम और सौहार्द के प्रतीक हैं, जिसमें ईद का त्यौहार आपसी भाईचारे का त्यौहार होता है, उन्होंने यह भी कहा कि स्कूल एक ऐसा स्थान है जहां पर किसी भी धर्म के लिए कोई भेदभाव या छुआछूत नहीं होता है। यहां पर सभी धर्म एक समान है तथा सभी बच्चों को यह शिक्षा दी जाती है कि सभी धर्मों का आदर करें।

समैयार ने एनटीपीसी के मुख्य महाप्रबंधक का पदभार संभाला

कैनविज टाइम्स संवाददाता

ऊंचाहार (रायबरेली)। अभय कुमार समैयार ने एनटीपीसी ऊंचाहार के मुख्य महाप्रबंधक का पद भार ग्रहण किया। इससे पहले श्री समैयार एनटीपीसी की दर्लिपाली परियोजना में बतौर मुख्य महाप्रबंधक कार्यरत थे।उन्होंने इंजीनियरिंग की पढ़ाई भागलपुर विश्वविद्यालय से पूरी की हैद्य अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद 1987 में एनटीपीसी में अभियंता प्रशिक्षु के रूप में उन्होंने करियर की पारी की शुरुआत की और इनकी विंध्याचल प्रोजेक्ट में पहली तैनाती हुई। एनटीपीसी में 35 से अधिक वर्षों के अपने सेवा के दौरान उन्होंने एनटीपीसी के बड़े प्रोजेक्ट रामागुंडम, वल्लुर और लारा आदि में अपनी सेवाएं प्रदान करने के साथ ही कई अन्य परियोजनाओं में भी कार्य किया हैद्य श्री समैयार ने एनटीपीसी के कई परियोजनाओं में विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए दर्लिपाली परियोजना में मुख्य महाप्रबंधक के पद पर अपनी सफल ज़िम्मेदारी का निर्वाह किया। श्री समैयार के ऊंचाहार परियोजना प्रमुख बनने पर कर्मचारी व अधिकारी संघो सहित सभी विभागाध्यक्ष, आस-पास के गांव के प्रधानों एवं जिला प्रशासन के अधिकारियों ने भी हर्ष व्यक्त किया। श्री सोनी ने अभय कुमार समैयार को कार्यभार हंस्तातरण किया, जिसके बाद एनटीपीसी कर्मचारियों ने अपने संबोधन में श्री सोनी के कार्यकाल की तथा उनके व्यवहार के प्रति सराहना व्यक्त करते हुए उन्हें शुभकामनाएं दी। विदित हो कि कमलेश सोनी को पश्चिमी क्षेत्र मुख्यालय में मुख्य महाप्रबंधक (प्रचालन सेवाएं) के उत्तरदायित्व को संभालने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी गई है। अभय कुमार समैयार को बिजली संयंत्र के प्रचालन, यांत्रिक अनुरक्षण तथा दक्षता के क्षेत्र में बहुत अनुभव हैद्य इसके अलावा कार्यक्षेत्र के अन्य प्रबंधन पर भी उनकी विशेषज्ञता हैद्य श्री समैयार के पास थर्मल ऊर्जा के क्षेत्र में व्यापक अनुभव है।

रंग लाई सीईएल के संस्थापक और सीईओ की मेहनत

कैनविज टाइम्स संवाददाता

- यूपी में ही नही देश-विदेश में भी बज रहा केएमसी का डंका, 179 केएमसी लाउन्ज,17 एमएनसीयू वार्ड संचालित

शिवगढ़ (रायबरेली)। केएमसी के जादुई करिश्मे से आज यूपी में बचपन खिलखिला रहा है। केएमसी से नवजात शिशुओं का तीव्र गति से शारीरिक एवं मानसिक विकास होने के साथ ही नवजात शिशु मृत्युदर में 54 प्रतिशत कमी आई है। ज्ञात हो कि वर्ष 2003 से पूर्व देश में हाइपोथर्मिया नाम की बीमारी से लो बर्थ वेट एवं समय से पूर्व जन्मे कम वजन के अपरिपक्व नवजात शिशुओं में से अधिकांश नवजात शिशुओं की मृत्यु हो जाती थी। देश में अधिकांश नवजात शिशु मृत्यु दर की जानकारी जब अमेरिका में रह रहे डा. विश्वजीत कुमार को हुई तो उन्हे बहुत दुःख हुआ जिसके बाद वे हाइपोथर्मिया उन्मूलन का संकल्प लेकर स्वदेश लौट आए और उन्होंने वर्ष 2003 में यूपी के रायबरेली जनपद में स्थित शिवगढ़ राजमहल,महेश विलास पैलेस में कम्युनिटी एंपावरमेंट लैब सक्षम शिवगढ़ स्थापना की और उन्होंने क्षेत्र के शिक्षित बेरोजगार युवक और युवतियों को प्रशिक्षित कर कंगारू मदर केयर के माध्यम से नवजात शिशुओ का जीवन बचाने की पहल की। सामाजिक रूढ़िवादिता एवं अज्ञानता के कारण शुरुआती दौर में तो कम्युनिटी एंपावरमेंट लैब टीम को काफी कठिनाइयों एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ा। किन्तु सीईएल के संस्थापक डॉ. विश्वजीत कुमार ने हिम्मत नहीं हारी। परिणाम स्वरूप कम्युनिटी एंपावरमेंट लैब टीम की मेहनत रंग लाई केएमसी के जादुई करिश्मे से नवजात शिशु मृत्यु दर में 54 प्रतिशत कमी आ गई। जिसकी जानकारी होने पर केएमसी को करीब से जानने के लिए भारतीय शोधकर्ताओं के साथ ही विदेशी शोधकर्ता कम्युनिटी एंपावरमेंट लैब सक्षम शिवगढ़ आने लगे। रायबरेली जिले के शिवगढ़ क्षेत्र से शुरू हुई केएमसी क्रांति का डंका आज सिर्फ यूपी ही नहीं देश और विदेश में भी बज रहा है। सीईएल के संस्थापक डॉ. विश्वजीत कुमार, सीईएल की सीईओ वैज्ञानिक आरती कुमार के सार्थक प्रयासों व सीईएल की वैज्ञानिक सलाह एवं तकनीकी सहयोग तथा प्रदेश सरकार व एनएचएम के समन्वित सहयोग से आज यूपी में 179 केएमसी लाउंज हैं वहीं बुलन्दशहर सहित जिलों 17 एमएनसीयू वार्ड संचालित हैं। इसके साथ ही अन्य जनपदों में एमएनसीयू को मूर्त रूप देने की तैयारियां चल रही हैं। सूत्रों की माने तो प्रत्येक जनपद में एमएनसीयू संचालित करने का लक्ष्य है।

भवानीगढ़-सूरजपुर सम्पर्क मार्ग गड्ढों में तब्दील, चलना दुस्वार

शिवगढ़ (रायबरेली)। प्रधानमंत्री सड़क योजना अंतर्गत वर्ष 2016-17 में निर्मित शिवगढ़ क्षेत्र का भवानीगढ़-सूरजपुर सम्पर्क मार्ग जगह-जगह गड्ढों में तब्दील हो गया है। सड़क की मरम्मत के लिए क्षेत्र के लोगों ने संबंधित अधिकारियों से दर्जनों बार शिकायत की किंतु जिम्मेदार अधिकारी की कुम्भकर्णी नींद नही टूटी। जिम्मेदार अधिकारियों की लापरवाही से ग्रामीणों में गहरा रोष व्याप्त है। विदित हो कि करीब सात किलोमीटर लम्बा शिवगढ़ क्षेत्र का भवानीगढ़-सूरजपुर सम्पर्क मार्ग वर्ष 2016-17 में प्रधानमंत्री सड़क योजना अंतर्गत बनाया गया था। सबसे बड़ी विडम्बना है कि जबसे सड़क बनी है। तबसे सिर्फ एक-दो बार रश्म अदायगी के लिए सड़क की रिपेयरिंग हुई है। जबकि सन् 2022 तक हर साल कार्यदाई संस्था द्वारा सड़क की रिपेयरिंग, पटवारियों की सफाई एवं पुल और पुलियों की रिपेयरिंग एवं रंगाई पुताई करनी थी। किंतु जिम्मेदार अधिकारियों की मिलीभगत के चलते कार्यदाई संस्था द्वारा हर साल रिपेयरिंग के नाम पर लाखों रुपए डकार लिए जाते हैं, और सड़क की रिपेयरिंग नहीं कराई जाती। आलम यह है कि कार्यदाई संस्था और जिम्मेदार अधिकारियों के बीच बंदरबांट के चलते गड्ढों में तब्दील हो चुके भवानीगढ़-सूरजपुर सम्पर्क मार्ग की कोई सुध लेने वाला नहीं है। क्षेत्र के जागरूक लोगों ने मीडिया के माध्यम से डीएम से सड़क की मरम्मत कराए जाने की मांग की है। ग्रामीणों का कहना है कि यदि जल्द ही सड़क की रिपेयरिंग नहीं हुई तो वे आन्दोलन करने को मजबूर हो जाएंगे।

सड़क दुर्घटना में ड्यूटी से लौट रहे होमगार्ड की मौत

ऊंचाहार (रायबरेली)। बैंक ड्यूटी से वापस घर लौट रहा पुलिस हमराही अज्ञात वाहन की टक्कर से गिर कर गंभीर रूप से घायल हो गया। राहगीरों ने एंबुलेंस से सीएचसी पहुंचाया। जहां से उसे गंभीर हालत में जिला अस्पताल रिफर किया गया। जहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। असलाह पुर मजरे खालिकपुर कला गांव निवासी कुंवर बहादुर यादव ऊंचाहार कोतवाली में होमगार्ड के पद पर तैनात था। रविवार की शाम कंदरावां स्थित बैंक की ड्यूटी के लिए गया हुआ था। जहां से सोमवार की भोर में घर वापस लौट रहा था। तभी सवैया तिराहा के पास अज्ञात वाहन ने उसकी मोटरसाइकिल में जोरदार टक्कर मार दी। जिससे गिरकर वह गंभीर रूप से घायल हो गया। स्थानीय लोगों ने घायल होमगार्ड को एंबुलेंस से सीएचसी पहुंचाया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद उसे जिला अस्पताल रिफर कर दिया गया। सीएचसी अधीक्षक डॉ. मनोज कुमार शुक्ल ने बताया कि मार्ग दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल होमगार्ड को सीएचसी लाया गया था। जिसकी हालत नाजुक होने पर प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल रिफर कर दिया गया। होमगार्ड के कमांडर कमल यादव ने बताया कि कुंवर बहादुर की जिला अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई है। कोतवाल शिव शंकर सिंह ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

काम कराने के लिए जबरन पकड़कर ले गए नाबालिक की मौत

ऊंचाहार (रायबरेली)। नाबालिक को जबरन काम करने के लिए ट्रैक्टर पर ले जाया गया। जहां दुर्घटना का शिकार होकर उसकी मौत हो गई। उसके बाद दबंगों ने उसको जबरन दफन कर दिया। मां अपने बेटे का चेहरा तक नहीं देख पाई है । बेटे की मौत का इंसाफ मांगने के लिए मां दर दर भटक रही है।

मामला कोतवाली क्षेत्र के गांव सरकपुर का है। गांव की महिला रेखा देवी का कहना है कि उसके बेटे साहिल (14) को गांव के कुछ लोग जबरन काम करने के लिए पकड़ ले गए थे। जहां पर ट्रैक्टर की चपेट में आकर उसका बेटा घायल हो गया । जिसकी दो दिन बाद इलाज के दौरान मौत हो गई है। इसके बाद दबंगों ने उनके बेटे के शव को दफन कर दिया है । मां का आरोप है कि उन लोगों ने बेटे का चेहरा तक उनको देखने नहीं दिया है। यहीं नहीं लखनऊ में उसके बेटे का पोस्ट मार्टम हुआ था। जिसकी प्रति भी दबंगों ने फाड़ दी है। अब उसको धमकी भी दी जा रही है। पीड़िता का आरोप है कि बेटे की मौत का इंसाफ मांगने कोतवाली गई तो ऊँचाहार कोतवाल ने भगा दिया है। दलित महिला इंसाफ के दर दर भटक रही है। जबकि इस बाबत सीओ अशोक सिंह का कहना है कि मामला जानकारी में आया है जांच कराई जा रही है जो भी दोषी होगा सख्त

सीएचसी में ड्रग एडमिनिस्ट्रेटर के द्वितीय बैच का प्रशिक्षण सम्पन्न

कैनविज टाइम्स संवाददाता

शिवगढ़ (रायबरेली)। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शिवगढ़ में सीएचसी अधीक्षक डा.अमित सिंह की अध्यक्षता में ड्रग एडमिनिस्ट्रेटर के द्वितीय बैच का प्रशिक्षण सम्पन्न। गौरतलब हो कि फाइलेरिया उन्मूलन हेतु सर्वजन दवा सेवन कार्यक्रम के तहत आगामी 12 मई से 2022 से 27 मई 2022 तक फलेरिया जागरूकता एवं दवा वितरण कार्यक्रम चलेगा। जिसको लेकर सोमवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शिवगढ़ में सीएससी अधीक्षक डॉ.अमित सिंह की अध्यक्षता में शिवगढ़ सीएचसी सभागार में ड्रग एडमिनिस्ट्रेटर के द्वितीय बैच का प्रशिक्षण आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य रूप से उपस्थित स्वास्थ्य शिक्षाधिकारी जयराम यादव, बीपीएम, बीसीपीएम, डब्लूएचओ व पीसीआई से शोसल मोबिलाइजेशन कोऑर्डिनेटर राजीव पांडेय ने बताया कि देश में पोलिया के बाद दूसरा अपंगता वाला रोग फाइलेरिया ही है। फाइलेरिया मच्छर के काटने से होती है। यह बीमारी प्रायः बचपन में ही प्रारम्भ हो जाती है। किंतु इसके दुष्परिणाम कई वर्षों के बाद देखने को मिलते हैं। शुरुआत में इसके लक्षण नहीं दिखयी पड़ते हैं। एक सर्वे में फाइलेरिया प्रभावित जनपदों के 3 प्रतिशत स्कूल जाने वाले बच्चों में भी इस रोग का संक्रमण मिला है। फाइलेरिया एक लाइलाज बीमारी है इसका कोई इलाज नहीं है। इस बीमारी से बचाव के लिए वर्ष में एक बार दवा खाना जरूरी है। मच्छरदानी का प्रयोग करें। कपड़े ऐसे पहने जिनसे पूरा शरीर ढका रहे। घर के आस-पास पानी जमा न होने दें। प्रशिक्षण में उपस्थित आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों एवं आशा और संगिनियों को जानकारी देते हुए सीएचसी अधीक्षक डॉ.अमित सिंह ने कहा कि मुख्य चिकित्साधिकारी के निर्देशानुसार फाइलेरिया उन्मूलन हेतु सर्वजन दवा सेवन कार्यक्रम आगामी 12 मई से 27 मई 2022 चलेगा। जिसमें ड्रग एडमिनिस्ट्रेटर द्वारा 2 वर्ष से कम उम्र के बच्चों व गर्भवती महिलाओं, गम्भीर रोग से पीड़ित मरीजों को छोड़कर अन्य सभी लोगों को डी.ई.सी. व अल्बेंडाजोल तथा इवेरमेक्टिन की गोलियां घर-घर बाटी जायेंगी और दी जाने वाली दवा का सेवन करने के लिए लोगों को प्रेरित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि प्रायः जानकारी तथा जागरूकता के अभाव के अभाव में सभी पात्र व्यक्ति दवा का सेवन नहीं करते। जिसके चलते हम सभी फलेरिया उन्मूलन के लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। उन्होंने बताया कि फाइलेरिया उन्मूलन के लिए खाद एवं रसद विभाग, शिक्षा विभाग, पंचायती राज विभाग, आईसीडीएस विभाग विभाग का सहयोग लिया जा रहा है। प्रशिक्षण में भारी संख्या में स्वास्थ्य कर्मियों के साथ ही आशा व आंगनबाड़ी कार्यकत्रियां मौजूद रही।

दबोचा गया 15 हजार रुपए का इनामी आरोपी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

डलमऊ (रायबरेली)। क्षेत्र को अपराध मुक्त बनाकर समाज में शांति और सौहार्द कायम करने में जुटे थानाध्यक्ष पंकज त्रिपाठी की सख्ती लगातार रंग ला रही है। अपने कार्यों से विभागीय मुखिया की नाक ऊंची रखने वाले पंकज त्रिपाठी ने अब तक न केवल दर्जनों ऐसे खुलासे किए जिनमें अपराधियों तक पहुंच पाना आसान नहीं था बल्कि क्षेत्र में लूट जैसे जघन्य अपराध पर भी प्रभावी अंकुश लगाया। बलात्कार और अपहरण के मामले में लंबे समय से फरार चल रहे एक 15 हजार के इनामी अभियुक्त को भी अपने मजबूत नेटवर्क के चलते दबोच लिया। उनकी कार्यशैली से अपराधियों में हड़कंप मचा हुआ है। तमाम क्षेत्रीय अपराधी क्षेत्र छोड़कर भूमिगत हो गए हैं। जानकारी के अनुसार डलमऊ कोतवाली में दर्ज बलात्कार और अपहरण के एक मामले में आरोपी आशीष सिंह पुत्र सतनाम सिंह निवासी बेसन का पुरवा मजरे उमरी थाना जगतपुर काफी समय से फरार चल रहा था। पुलिस अधीक्षक द्वारा 15 हजार का ईनाम भी घोषित किया गया था। पंकज त्रिपाठी को मुखबिर द्वारा सूचना मिली कि आरोपी आशीष सिंह क्षेत्र में है। सूचना के आधार पर उन्होंने मुखबिर के बताए स्थान पर टीम के साथ छापा मारा और उसे दबोच लिया। गुड वर्क में उनके साथ उपनिरीक्षक संजय कुमार सिंह, आरक्षी गौरव परिहार, गणेश शर्मा, प्रशांत देवल, गजेंद्र तोमर और महिला आरक्षी साक्षी चतुर्वेदी तथा श्वेता शर्मा शामिल रही।

बीमारी से ग्रसित व्यक्ति ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

ऊंचाहार (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के अरखा गांव निवासी एक व्यक्ति काफी समय से बीमारी से ग्रसित था। काफी उपचार के बाद भी राहत नहीं मिल रही थी। जिससे तंग आकर उसने गांव से दूर आम के पेड़ की डाल से रस्सी बांधकर फांसी से झूल कर आत्महत्या कर ली। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। उक्त गांव निवासी महेश कुमार काफी समय से कैंसर की बीमारी से ग्रसित था। काफी उपचार के बावजूद भी राहत नहीं मिल रही थी। आर्थिक तंगी के चलते अच्छे मेडिकल कॉलेजों में इलाज नहीं करा पा रहा था। बीमारी से तंग आकर सोमवार की भोर में गांव से दूर आम के पेड़ से रस्सी बांधकर फंदा गले में डाल कर उससे झूल कर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। जिसके तीन बेटी और एक बेटा है। पिता की मौत के बाद परिजनों में कोहराम मच गया। की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। कोतवाल शिव शंकर सिंह ने बताया कि युवक ने बीमारी से तंग आकर आत्महत्या की थी। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज विधिक कार्यवाही की जा रही है।

प्रशिक्षण की सबसे बड़ी विशेषता सीखना और सिखाना : राजेश

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

- भारतीय जनता पार्टी द्वारा आयोजित जिला प्रशिक्षण शिविर का दूसरा दिन

रायबरेली। भारतीय जनता पार्टी के राज्यसभा सांसद अशोक बाजपेई ने कहा कि बीजेपी कैडर बेस ऑर्गनाइजेशन है। कार्यकर्ता आधारित संगठन केवल नारा लगाने या कहने के लिए नहीं है। बीजेपी कार्यकर्ता आधारित संगठन होने के नाते आज पूरी दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल है, लेकिन हमें इस बात का गर्व है घमंड नहीं है। श्री बाजपेई ने कहा कि हमें गर्व है कि आज भारत के 70 प्रतिशत भू-भाग पर बीजेपी स्वच्छ प्रशासन देने का काम कर रही है। राज्यसभा सांसद श्री बाजपेई भारतीय जनता पार्टी अवध क्षेत्र रायबरेली में आयोजित तीन दिवसीय जिला प्रशिक्षण शिविर के दूसरे दिन के चतुर्थ सत्र को बताओ मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि जब जम्मू कश्मीर में धारा 370 का प्रावधान कियागया था। तब श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने तय किया था कि देश के अंदर दो विधान, दो प्रधान और दो कानून नहीं चलेंगे। श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जनसंघ बनाया और धारा 370 के खिलाफ आंदोलन करके जेल चले गए। भारतीय जनता पार्टी ने केवल वोट की राजनीति नहीं की, हमने सामाजिक दायित्वों का निर्वहन किया है। भारत के बढ़ते हुए सुरक्षा सामर्थ्य की ताकत को पूरा विश्व भली-भांति पहचान रहा है। आज जबकि 2014 के बाद भारत की सुरक्षा में आत्मनिर्भर भारत प्रधानमंत्री माननीय मोदी जी के नेतृत्व में भारत अपने पुराने गौरव की ओर जा रहा है तथा देश के सुरक्षा के संबंध में हजारों करोड़ का निवेश भारत की कंपनियों किया जा रहा है। बदलते परिवेश में भारत का रक्षा कवच विश्व की तीसरी ताकतवर व्यवस्था में शामिल हो चुका है। विश्व के तमाम देश भारत की ओर आशा लगाए हुए बैठे हैं यह सब भारतीय जनता पार्टी की सशक्त राष्ट्रवादी विचारधारा से प्रेरित होकर आत्मनिर्भर भारत का सपना संपन्नता की ओर बढ़ रहा है। 2014 से पहले जब भारत के सैनिकों के पास रक्षा कवच नहीं हुआ करता था बुलेट प्रूफ जैकेट नहीं हुआ करती थी तब माननीय प्रधानमंत्री जी के दूरदृष्टि ने यह साबित कर दिया। प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य सत्र अध्यक्ष राजेश दीक्षित ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ता आधारित पार्टी है, इसलिए इसमें प्रशिक्षण वर्ग जरूरी है। उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण की सबसे बड़ी विशेषता सीखना और सिखाना है। एक नई ऊर्जा, नई उमंग, नए उत्साह के साथ हम यहां से जाते हैं। उन्होंने कहा कि आज के समय में विचारधारा के आधार पर काम करने वाली एकमात्र पार्टी भाजपा है। भाजपा देश को विश्व शिखर पर पहुंचाने का कार्य कर रही हैं। भाजपा की विचारधारा देश की उन्नति, विकास में सबको साथ में लेकर चलने की है। भाजपा धीरे-धीरे अपनी विचारधारा के आधार पर आगे बढ़ी है और देशवासियों का विश्वास जीता है। इस दौरान भाजपा जिलाध्यक्ष रामदेव पाल सहित तमाम कार्यकर्ता मौजूद रहे।

घर की छत पर पक्षियों के लिए करें पानी व दाने का प्रबन्ध

घर आया मेहमान पक्षी भूखा प्यासा न लौटे : डीएम

कैनविज टाइम्स संवाददाता

- डीएम व सीडीओ ने वर्चुअल माध्यम से ग्राम प्रधानों से किया संवाद
- सभी वाटर बाडियों में पानी भरने के दिये निर्देश
- ग्रीष्म काल में मानव व पशु पक्षियों के पानी की न हो दिक्तत

बहराइच । जिलाधिकारी डॉ. दिनेश चन्द्र व मुख्य विकास अधिकारी कविता मीना ने जनपद के ग्राम प्रधानों के साथ वर्चुअल संवाद करते हुए ईद, अक्षय तृतीया और परशुराम जंयती ईद की बधाई देते हुए निर्देशित किया कि आसन्न त्यौहारों के अवसर पर ग्राम व धार्मिक स्थलों के आस-पास पर्याप्त साफ-सफाई के बन्दोबस्त सुनिश्चित करें। डीएम व सीडीओ ने यह भी निर्देश दिया ग्रीष्म ऋतु को मद्देनज़र रखते हुए गॉव ग्राम के तालाबों नहरों अथवा सरकारी ट्यूबवेल के माध्यम से भरवा दिया जाय। ग्रीष्म ऋतु के दौरान किसी भी मानव, पशु-पक्षियों को पानी की दिक्कत नहीं होनी चाहिए। वर्चुअल माध्यम से आयोजित संवाद के दौरान डीएम व सीडीओ ने जनपदवासियों से अपील की कि लू व गर्मी के मौसम को देखते हुए अपने घर के आस-पास व घर की छत पर पानी की व्यवस्था कर दें ताकि कोई भी पशु व पक्षी प्यासा न रहे। उन्होंने लोगों से यह भी अपील की कि अपनी खुली छत पर मिट्आी के बर्तन में पक्षियों के पानी के साथ दाना का भी प्रबन्ध अवश्य करे ताकि घर आया कोई भी मेहमान पक्षी भूखा-प्यासा न जा सके।

डीएम व सीडीओ ने ग्राम प्रधानों से यह भी अपील की कि वर्तमान में संचालित संचारी रोग नियंत्रण अभियान को सफल बनाने में ग्राम स्तरीय अधिकारियों व कर्मचारियों को पूर्ण सहयोग प्रदान करें तथा आवश्यकतानुसार ग्राम पंचायत फागिंग व एण्टीलार्वा छिड़काव कराते रहें। डीएम डॉ. चन्द्र ने ग्राम प्रधानों को बताया कि ठोस व तरह अपशिष्ट के प्रबन्धन हेतु गंगा हरितमा अभियान के अन्तर्गत ग्राम गंगा सेवा समिति का गठन समितियों को सक्रिय कर दिया जाय। डीएम ने यह भी निर्देश दिया ग्राम पंचायत में अवस्थित सामुदायिक शौचायत, ग्राम पंचायत भवन सहित अन्य सार्वजनिक सम्पत्तियों को क्रियाशील रखा जाय तथा परिसर में साफ-सफाई पर भी विशेष ध्यान दिया जाये। वर्चुअल मीटिंग के दौरान डीएम डॉ. चन्द्र ने ग्राम प्रधानों को शासन द्वारा लागू मोबाइल गेहूँ क्रय केन्द्रों की व्यवस्था से अवगत कराते हुए बताया कि सरकार द्वारा निर्णय लिया गया है कि अब किसानों को गेहूँ क्रय केन्द्र तक चल कर नहीं आना पडेगा। बल्कि गेहूँ क्रय केन्द्र स्वयं चलकर किसानों तक पहुँचेंगे। डीएम ने जानकारी दी कि यदि ग्राम में कुछ किसानों द्वारा अपनी उपज का 150 कुण्टल गेहूँ संग्रहीत कर लिया जाता है तो ग्राम प्रधान, पंचायत सचिव अथवा कोटेदार द्वारा सूचित करने पर मोबाइल क्रय केन्द्र गॉव में पहुँच कर किसानों का गेहूँ क्रय कर लेगा ।

तीन शातिर लूटेरे गिरफ्तार, लूट का मोबाइल फोन व घटना में प्रयुक्त मोटर साइकिल बरामद

लखनऊ। थाना जानकीपुरम प्रभारी निरीक्षक छत्रपाल सिंह के नेतृत्व में थाना जानकीपुरम पुलिस टीम द्वारा चेकिंग के दौरान मुखबिर की सूचना पर अभियुक्त अभिषेक शर्मा(21), सतीश गौतम(20) व अनिल गौतम(19) को गिरफ्तार किया गया। जानकीपुरम प्रभारी निरीक्षक छत्रपाल सिंह ने बताया कि वादी सुखराम यादव द्वारा मोटर साइकिल सं0 UP 32 EZ 2118 पर सवार तीन अज्ञात व्यक्तियों द्वारा वादी के पुत्र के हाथ से मोबाइल छीनकर ले जाने की तहरीर सूचना पर अभियोग पंजीकृत किया गया था। जिसमें सोमवार को चेकिंग के दौरान मुखबिर की सूचना पर अभियुक्त अभिषेक शर्मा, सतीश गौतम व अनिल गौतम को ट्यूवेल के सामने वाले मुख्य मार्ग ग्राम रसूलपुर जानकीपुरम से गिरफ्तार किया गया। जिनके कब्जे से एक ओप्पो मोबाइल व घटना में प्रयुक्त एक मोटर साइकिल वाहन सं0-UP32EZ2118 हीरो एचएफ डीलक्स बरामद हुई। अभियुक्तो को गिरफ्तार कर जेल भेजा जा रहा है।

मशीन में अंगूठा लगवाने के बाद भी नहीं किया राशन वितरण

शासन के आदेशों की धज्जियां उड़ा रहा ग्राम बुढ़वलिया का बेखौफ दबंग कोटेदार

कैनविज टाइम्स संवाददाता

कोटेदार पर अभद्रता कर गालियां देने एवं धमकी देने का ग्रामीणों ने लगाया आरोप

कर्नलगंज, गोण्डा। जहां एक तरफ योगी सरकार के आदेशों को जिले के तेज़तर्रार कहलाने वाले जिलाधिकारी उज्ज्वल कुमार द्वारा कड़ाई से पालन कराने की बात कही जा रही है तो वहीं दूसरी तरफ बेखौफ दबंग कोटेदारों के हौंसले काफी बुलंद हैं जिनमें शासन प्रशासन का जरा सा भी खौफ नहीं दिख रहा है व शासन के आदेशों की जमकर धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। इसी क्रम में निरंकुश कार्यप्रणाली का एक मामला तहसील व ब्लाक कर्नलगंज अन्तर्गत ग्राम पंचायत बुढ़वलिया में सामने आया है जहां दबंग कोटेदार द्वारा मशीन में अंगूठा लगवाने के बाद भी राशन वितरण ना करके ग्रामीणों से अभद्रता कर गालियां देने एवं धमकी देने का ग्रामीणों ने आरोप लगाते हुए ग्राम के कोटेदार के दबंगई पूर्ण घृणित कारनामों को उजागर कर उक्त संबंध में उपजिलाधिकारी को प्रार्थना पत्र देकर कोटेदार के विरुद्ध विधिक कार्यवाही करने एवं राशन दिलाने की मांग की है।प्रकरण तहसील एवं ब्लॉक कर्नलगंज के ग्राम पंचायत बुढ़वलिया का है, जहां काफी संख्या में ग्रामीणों ने सामूहिक रूप से उपजिलाधिकारी को दिए प्रार्थना पत्र मे ग्राम के कोटेदार हरेन्द्र कुमार पुत्र ओम प्रकाश के विरुद्ध गंभीर आरोप लगाते हुए कहा है कि कोटेदार ने सबका अंगूठा मशीन में लगवा लिया उसके बाद अपने यहां 23 अप्रैल को तिलक समारोह होने का हवाला देकर बाद में राशन देने की बात कहते हुए ग्रामीणों को गुमराह कर के रखा। फिर जब उनके यहां तिलक निपट गई तो ग्रामीणों ने राशन मांगा तो बदज़ुबान कोटेदार द्वारा राशन वितरण ना करके ग्रामीणों से अभद्रता कर गाली गलौज देते हुए भगा दिया गया और कहा गया कि तुम लोग हमारा कुछ नही कर सकते व धमकी दी गई। कोटेदार की दबंगई से आहत ग्रामीणों ने बताया कि ऐसा पहले भी कई बार हो चुका है लेकिन कोटेदार पर शासन प्रशासन का कोई अंकुश और भय ना होने से खाद्यान्न वितरण में जमकर धांधली करते हुए कालाबाजारी की जा रही है। वहीं दबंग कोटेदार सरकारी आदेशों को ताख पर रखकर काम करने में जुटा है।जिससे काफी त्रस्त होकर ग्रामीणों ने उपजिलाधिकारी को प्रार्थना पत्र देकर ग्राम के कोटेदार के दबंगई पूर्ण घृणित कारनामों को उजागर करते हुए कोटेदार के विरुद्ध विधिक कार्यवाही करने एवं राशन दिलाने की गुहार लगाई है।

विकास खण्ड मुख्यालयों पर आयोजित होंगे वृहद शिविर

कैनविज टाइम्स संवाददाता

- स्वरोज़गारपरक योजनाओं की दी जायेगी जानकारी
- बैंकों द्वारा लाभान्वित किये जायेंगे लाभार्थी

बहराइच । उपायुक्त उद्योग, मोहन कुमार शर्मा ने बताया उत्तर प्रदेश उद्योग एवं उद्यम प्रोत्साहन निदेशालय द्वारा संचालित विभिन्न स्वरोजगारपरक योजनाओं यथा मुख्यमंत्री युवास्वरोजगार योजना, एक जनपद एक उत्पाद, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना, एक जनपद एक उत्पाद कार्यक्रम के अर्न्तगत दक्षता/ कौशल विकास/ उद्यमिता विकास प्रशिक्षण एवं टूलकिट वितरण योजनानर्तगत जन सामान्य को विभागीय योजनाओं की जानकारी प्रदान करने तथा इच्छुक पात्र व्यक्तियों से सम्बन्धित योजनाओं में विभाग के नये पोर्टल एमएसएमई डाट यूपी डाट जीओवी डाट इन पर ऑनलाइन आवेदन पत्र दाखिल कराये जाने हेतु विकास खण्ड मुख्यालयों पर निर्धारित रोस्टर के अनुसार वृहद स्तर पर कैम्प आयोजित किये जायेंगे। जीएम डीआईसी श्री शर्मा ने बताया कि वृहद कैम्प हेतु निर्धारित रोस्टर के अनुसार 05 मई 2022 को विकास खण्ड चित्तौरा, 07 को हुज़ूरपुर, 10 को पयागपुर, 13 को विशेश्वरगंज, 17 को फखरपुर, 20 को कैसरगंज, 24 को जरवल, 26 को तेजवापुर, 28 को महसी, 30 मई 2022 को शिवपुर, 02 जून 2022 को बलहा, 04 को मिहींपुरवा, 07 को नवाबगंज तथा 09 जून 2022 को विकास खण्ड रिसिया मुख्यालय पर शिविर कका आयोजन किया जायेगा। श्री शर्मा ने यह भी बताया कि वृहद शिविर के माध्यम से विभिन्न स्वरोजगारपरक योजनाओं यथा मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना, एक जनपद-एक उत्पाद, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, माटीकला विकास योजना, मुद्रा योजना, स्टैण्ड-अप स्टार्टअप सहित अन्य लाभार्थीपरक योजनायें संचालित करने वाले विभागों के लाभार्थियों को बैंकों के माध्यम से लाभान्वित भी कराया जायेगा।

राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में छात्र-छात्राओं को वितरित किया गया टैबलेट

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बहराइच । प्रदेश के युवाओं के तकनीकी सशक्तिकरण हेतु प्रदेश सरकार द्वारा संचालित लैपटाप /स्मार्टफोन वितरण योजना के तहत राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान बहराइच में आयोजित टेबलेट वितरण समारोह के मुख्य अतिथि विधायक पयागपुर सुभाष त्रिपाठी ने अन्य अतिथि के साथ फीता काटकर एवं दीप प्रज्जवल्लित कर किया गया कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। प्रधानाचार्य नितिन कुमार ने पुष्प गुच्छ एवं अंगवस्त्र भेंट कर मुख्य अतिथि का स्वागंज किया गया। जबकि हर्षिता एवं नयनसी पाठक द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। मुख्य अतिथि श्री त्रिपाठी द्वारा अन्य अतिथियों के साथ गुरु प्रसाद जायसवाल, क्षमा तिवारी, विभा तिवारी, सुधेष कुमार वर्मा, अल्ताफ, जफर अहमद, प्रिन्स मौर्या, शोभित, अजय गौड़, अमन सिंह, रूस्वणिमा श्रीवास्तव, विशाल चौहान, रुखसार, सुनीता कौर, विकास यादव, शिवम गौतम, गुरुमीत कौर, लक्ष्मी देवी, नयनसी पाठक, अमन तिवारी, प्रदीप कुमार सहित 116 छात्र-छात्राओं को टैबलेट का वितरण किया गया। मुख्य अतिथि श्री त्रिपाठी ने भारत माता के जयघोष के साथ अपने सम्बोधन की शुरूआत करते हुए कहा कि मा. मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में हमारी सरकार तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र-छात्राओं को टैबलेट प्रदान कर रही है। उन्होंने प्रदेश में अध्ययनरत सभी छात्र-छात्राओं को जो सुविधा मिलनी चाहिये वे सभी सुबिधायें उन्हें उपलब्ध करायी जा रही हैं। प्रदेश सरकार की इस अतिमहत्वाकांक्षी योजना से लक्षित युवा लाभार्थी वर्ग जहॉ एक ओर अपने शैक्षिक पाठ्यक्रमों को सफलतापूर्वक पूर्ण कर सकेंगे वहीं दूसरी ओर शैक्षिक पाठ्यक्रमों को पूर्ण करने के उपरान्त विभिन्न शासकीय, गैर शासकीय तथा स्वावलम्बन की योजनाओं में भी इस गैजेट का सदुपयोग कर सेवारत/ व्यवसायरत हो सकेंगे।

कार्यक्रम के दौरान प्रधानाचार्य नितिन कुमार ने बताया कि राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान बहराइच में 114 राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान नानपारा ओल्ड में 50 एवं नानपारा न्यू में 96 छात्र-छात्राओं को मुख्य अतिथि विधायक नानपारा राम निवास वर्मा तथा कैसरगंज में 42 लाभार्थियों को मुख्य अतिथि प्रदेश के पूर्व सहकारिता मंत्री मुकुट बिहारी वर्मा द्वारा टैबलेट वितरित किया गया। इस अवसर पर कार्यदेशक ज्वाला प्रसाद, दिलीप श्रीवास्तव, डी.के. त्रिपाठी, अमित पाण्डेय, धमेन्द्र कुमार, रजनी कुमारी, अनुसूईया पाण्डेय, मसऊद अहमद आदि लोग उपस्थित रहें।

ककोरी में अवैध खनन पर पुलिस की बड़ी कार्रवाई

कैनविज टाइम्स संवाददाता

काकोरी,लखनऊ। कमिश्नरेट पुलिस के अंतर्गत काकोरी के रेवरी गांव मे हो रहे अवैध खनन पर काकोरी पुलिस एवं खनन विभाग ने की बड़ी कार्यवाही।जिला खनन अधिकारी एवं पुलिस विभाग द्वारा खनन विभाग की गई बड़ी कार्रवाई।काकोरी के रेवरी गांव के निकट कई दिनों से चल रहे अवैध खनन पर पहुंच कर की गई बड़ी कार्यवाही।काकोरी पुलिस व खनन विभाग के अधिकारियों ने बीती रात रात को चल रहे अवैध खनन की कर रहे चार डम्परों को रंगे हाथों पकड़ा कर अवैध खनन परिवहन में सीज किया।काकोरी कोतवाली कार्यवाहक प्रभारी/एसएसआई अवधेश कुमार शुक्ला ने बताया कि क्षेत्र के रेवरी गांव में रात के अंधेरे में देर रात को अवैध रूप से खनन किया जा रहा है।जिसके बाद खनन विभाग के सहयोग से संयुक्त कार्यवाही में छापे मारी कर चार डम्परों को पकड़ कर सीज कार्यवाही की गई है।अग्रिम कार्यवाही खनन विभाग द्वारा जारी निर्देशानुसार की जाएगी।

ब्लॉक प्रमुख ने किया खेल मैदान का भूमिपूजन

स्वस्थ शरीर में होता है स्वस्थ मस्तिष्क का विकास : प्रमुख

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बहराइच । ग्राम पंचायत इच्छापुर में मनरेगा एवं पन्द्रहवां वित्त योजना के अन्तर्गत खेल मैदान एवं ओपन जिम के लिए चयनित भूमि का भूमिपूजन कैसरगंज प्रमुख संदीप सिंह विसेन एवं खंड विकास अधिकारी अजीत कुमार सिंह ने किया । चयनित भूमि में ग्रामीणों के सर्वांगीण विकास के लिए खेल के मैदान एवं ओपन जिम का भूमि पूजन पूरे विधि विधान के साथ किया गया ।इस अवसर पर ग्रामीणों संबोधित करते हुए संदीप सिंह ने कहा कि ग्रामीणों में खासकर युवा वर्ग एवं बच्चों को स्वास्थ्य एवं खेल विकास के दृष्टिकोण को हित में रखते हुए खेल के मैदान व ओपन जिम का भूमि पूजन संपूर्ण ग्राम सभा के स्वास्थ संबंधी विकारों को दूर करने में सहायक सिद्ध होने के लिए किया गया है। खंड विकास अधिकारी ने आश्वासन दिया कि जल्द से जल्द इस भूमि पूजन पर निर्माण कार्य प्रारंभ करा दिया जाएगा। जिसका सीधा लाभ ग्राम सभा के लोगों को मिलेगा। इस मौके पर ग्राम प्रधान श्रीमती हीरा देवी, प्रधान पति श्री राजेश कुमार, सहायक विकास अधिकारी पंचायत राजेश कुमार चौधरी, ग्राम विकास अधिकारी पंकज कुमार, तकनीकी सहायक अविनाश चंद्र श्रीवास्तव एवं रोजगार सेवक बृजलाल सहित तमाम ग्रामीण उपस्थित रहे।

डीएम व एसपी ने आगामी ईद-उल-फितर, अक्षय तृतीया, परशुराम जयंती व 84 कोसी परिक्रमा के पर्व पर किया फ्लैग मार्च

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोंडा। जिलाधिकारी उज्ज्वल कुमार व पुलिस अधीक्षक गोण्डा संतोष कुमार मिश्रा द्वारा आगामी ईद-उल-फितर, अक्षय तृतीया, परशुराम जयंती व 84 कोसी परिक्रमा को सकुशल व शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराये जाने हेतु शहर क्षेत्र में भारी पुलिस बल के साथ पैदल गस्त किया गया। पैदल गस्त के दौरान जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक गोण्डा ने शासन के द्वारा जारी गाइडलाइन के अनुरूप लोगो से त्योहारों को सकुशल व शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराए जाने हेतु अपील की गयी। पुलिस अधीक्षक द्वारा आम जनमानस से संवाद स्थापित करते हुए सभी लोगों से आपसी भाई-चारे के साथ ईद की नमाज़ व अक्षय तृतीया त्योहार, परशुराम जयंती व 84 कोसी परिक्रमा के अवसर पर आपसी समंवय बनाकर त्योहारों को सकुशल व शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने हेतु कहां गया तथा शासन द्वारा जारी गाइडलाइन का अनुपालन करते हुए सभी को ईद की नमाज़ ईदगाह मस्जिद के अन्दर ही अदा करने का निर्देश दिया गया तथा किसी भी दशा में रोड पर नमाज़ अदा न करने की सख्त हिदायत दी। पुलिस अधीक्षक द्वारा यह भी कहा गया की किसी भी व्यक्ति द्वारा सोशल मीडिया आदि के माध्यम से कोई भी भ्रामक पोस्ट न डाले जिससे अमन चैन खराब न हो अगर किसी भी व्यक्ति द्वारा भ्रामक पोस्ट डाल कर त्योहारों का माहौल खराब करने की कोशिश करेंगा उसके विरूद्ध सख्त से सख्त कार्यवाही की जाएगी।इस दौरान सिटी मजिस्ट्रेट, क्षेत्राधिकारी सदर, प्रभारी निरीक्षक कोतवाली नगर व पीएससी व पुलिस फोर्स के अधिकारी व कर्मचारी गण उपस्थित रहे।

लू व गर्म हवा से बचाव के लिए राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने जारी की एडवाईज़री

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लापरवाही हो सकती है घातक

बहराइच । प्रदेश में लू के प्रभाव को कम करने तथा लू के कारण होने वाली मौतों की रोकथाम हेतु उ.प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा एडवाईज़री जारी की गयी है। जारी एडवाइज़री में लोगों को सुझाव दिया गया है कि लू के प्रकोप एवं गर्म हवा से बचने के लिए हर संभव सावधानी बरतें। आमजन को सुझाव दिया गया है कि कड़ी धूप विशेषकर मध्यान्ह 12:00 बजे से अपरान्ह 03:00 बजे के बीच बाहर न निकलें, जितनी बार हो सके पानी पियें, प्यास न लगे तो भी पानी पियें। हल्के रंग के ढीले-ढीले सूती कपड़े पहनें। धूप से बचने के लिए गमछा, टोपी, छाता, धूप का चश्मा, जूते और चप्पल का इस्तेमाल करें। सफर में अपने साथ पानी रखें। शराब, चाय, कॉफी जैसे पेय पदार्थों का इस्तेमाल न करें, यह शरीर को निर्जलित कर सकते हैं। यदि फील्ड का कार्य है तो, टोपी, गमछा या छाते का इस्तेमाल जरूर करें और गीले कपड़े को अपने चेहरे, सिर और गर्दन पर रखें। अगर तबियत ठीक न लगे या चक्कर आए तो तुरन्त चिकित्सक से सम्पर्क करें। घर में बना पेय पदार्थ जैसे कि लस्सी, नमक चीनी का घोल, नींबू पानी, छांछ, आम का पना इत्यादि का सेवन करें। जानवरों को छांव में रखें और उन्हें भी खूब पानी पीने को दें। अपने घर को ठंड़ा रखें, पर्दे, शटर आदि का इस्तेमाल करे। रात में खिड़कियाँ खुली रखें। फैन, ढीले कपड़े का उपयोग करें। ठंडे पानी से बार बार नहाएं। क्या करें और क्या न करें के सम्बन्ध में सुझाव दिया गया है कि धूप में खड़े वाहनों में बच्चों एवं पालतू जानवरों को न छोड़ें। खाना बनाते समय कमरे के दरवाजे के खिड़की एवं दरवाजे खुलें रखें जिससे हवा का आना जाना बना रहे। नशीले पदार्थ, शराब तथा अल्कोहल के सेवन से बचें। उच्च प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थ का सेवन करने से बचें तथा बासी भोजन न करें। खिड़की को रिफ्लेक्टर जैसे एल्युमीनियम पन्नी, गत्ते इत्यादि से ढक कर रखें, ताकि बाहर की गर्मी को अन्दर आने से रोका जा सके। उन खिड़कियों व दरवाजों पर जिनसे दोपहर के समय गर्म हवाएँ आती है, काले पर्दे लगाकर रखना चाहिए। स्थानीय मौसम के पूर्वनुमान को सुनें और आगामी तापमान में होने वाले परिवर्तन के प्रति सतर्क रहें । आपत स्थिति से निपटने के लिए प्राथमिक उपचार का प्रशिक्षण लें। बच्चों व पालतू जानवरों को कभी भी बंद वाहन में अकेला ना छोड़े। जहाँ तक संभव हो घर में ही रहे तथा सूर्य के सम्पर्क से बचें। सूर्य के ताप से बचने के लिए जहाँ तक संभव हो घर की निचली मंजिल पर रहें। संतुलित, हल्का व नियमित भोजन करें। घर से बाहर अपने शरीर व सिर को कपड़े या टोपी से ढक कर रखें।

महिला जनसुनवाई दिवस पर आयोजित होगा जागरूकता शिविर

बहराइच । जिला प्राबेशन अधिकारी विनय कुमार सिंह ने बताया कि उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग के निर्देशानुसार 05 मई 2022 को पूर्वान्ह 11:00 बजे से लो.नि.वि. निरीक्षण भवन में आयोग की सदस्य श्रीमती मनोरमा शुक्ला की अध्यक्षता में आयोजित होने वाले ''महिला जनसुनवाई दिवस'' के अवसर पर ''मिशन शक्ति फ़ेज-4'' के अन्तर्गत महिलाओं से सम्बन्धित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का अधिकतम लाभ दिलाये जाने के उद्देश्य से एक दिवसीय जागरूकता शिविर का आयोजन भी किया जायेगा। जिला प्रोबेशन अधिकारी श्री सिंह ने मुख्य चिकित्साधिकारी, जिला पूर्ति अधिकारी, जिला समाज कल्याण अधिकारी, बेसिक शिक्षा अधिकारी, जिला कार्यक्रम अधिकारी, अल्पसंख्यक कल्याण, दिव्यांगजन सशक्तिकरण तथा श्रम प्रवर्तन अधिकारी से अपेक्षा की है कि अधिकाधिक संख्या में महिलाओं की उपसिथति दर्ज कराने एवं विभागीय योजनाओं के प्रचार-प्रसार सामग्री के साथ कार्यक्रम को सफल बनाये जाने में सहयोग प्रदान करें।

जयपुरिया स्कूल वैन से मिनी टाटा मैजिक की टक्कर, बच्चे घायल

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोंडा । जयपुरिया स्कूल के बच्चों को स्कूल ले जा रही मैजिक वैन की सोमवार की सुबह दर्जीकुआं पुलिस चौकी के सामने लोडिंग मैजिक से टक्कर हो गई। हादसे में कई बच्चे जख्मी हो गए। चीख पुकार मची तो ग्रामीणों ने पहुंचकर सभी को वैन से बाहर निकाला। किसी का सिर फटा था तो किसी के हाथ-पैर से खून की धार बह रही थी। खबर लगते ही मौके पर पहुंचे परिजन बच्चों को चिकित्सक के पास ले गए। जहां पर चिकित्सकों ने बच्चों का उपचार करके उन्हें घर भेज दिया गया, गोंडा फैजाबाद मार्ग जयपुरिया स्कूल की टाटा मैजिक वैन बच्चों को पढ़ने के लिए घर से स्कूल लेकर जा रही थी।इसी बीच विपरीत दिशा से आ रहे तेज रफ्तार लोडिंग टाटा मैजिक वैन में जोरदार टक्कर मार दी। हादसा होते ही उसमें बैठे सभी बच्चों में चीख पुकार मच गई। छात्र वाहन में लहूलुहान एक-दूसरे पर गिरे पड़े थे। जोरदार आवाज के साथ हादसा हुआ तो आसपास के लोग भी सन्न रह गए। शोर मचाते हुए वैन की ओर दौड़े।वहां पहुंच कर देखा बच्चे जख्मी हालत में रो रहे थे। दर्जी कुआं चौकी पर मौजूद पुलिस और अभिभावक भी मौके पर पहुंच गए। बचाव कार्य करते हुए सभी अपने बच्चों को चिकित्सक के पास लेकर भागे। ग्रामीणों ने पीछा कर भाग रहे वाहन को भी पकड़ लिया। यहां से पुलिस वाहन को कब्जे में मे लें लिया है चिकित्सक के पास पहुंचने पर बाकी बच्चों को प्राथमिक उपचार के बाद छोड़ दिया गया,हादसे के बाद अभिभावकों में रोष दिखाई दिया। सभी घटना के पीछे स्कूल की लापरवाही को जिम्मेदार मान रहे थे। कुछ समाजसेवियों का कहना है कि स्कूल मानक के अनुसार मैजिक में बच्चों को नहीं बैठाया जाता है। बच्चों को भूसे की तरह भरा जाता है।

पुलिस कर्मियों को आवास खाली करने की चेतावनी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुल्तानपुर। पुलिस लाइन में रह रहे अमेठी जिले के पुलिस कर्मियों के परिवार में हड़कंप मच गया है। वजह यह है कि डीआईजी/एसपी सुल्तानपुर ने सुल्तानपुर पुलिस लाइन में निवास कर रहे अमेठी जनपद के पुलिस कर्मियों को 24 घंटे में क्वाटर खाली करने के निर्देश दे दिए हैं। बता दें कि अमेठी जिले को सृजित हुए 12 साल हो चुके हैं और यहां तैनात पुलिस कर्मियों के लिए अब तक आवास मुहैया नहीं हो सका है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार डीआईजी/एसपी सुलतानपुर ने विभाग के जरिये जारी निर्देशो का हवाला देते हुए सरकारी आवास खाली करने सम्बन्धी चेतवानी दी है। कहा गया है कि 2 मई तक सरकारी आवास स्वतः न खाली करने पर मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में कानूनी तरीके से आवास खाली कराया जाएगा। ऐसे में कराई गई मुनादी के बाद से कई दर्जन पुलिस कर्मियों में हड़कंप मच गया है क्योंकि इनके परिवार अब

❐ पुलिस लाइन में 12 सालों से निवास कर रहे अमेठी के पुलिस कर्मी, अब आदेश आने पर मचा हड़कंप

प्रभावित होंगे। बताया जा रहा है कि पीड़ित पुलिस कर्मियों ने डीजीपी के जरिये वर्ष 2016 में परिपत्र संख्या डीजी-67/2016 की धारा-1 की उपधारा 4 के पैरा 4 व 5 में दर्शित शासनादेश का हवाला देते हुए नवसृजित जनपद अमेठी में आवास की व्यवस्था उपलब्ध न होने तक सुलतानपुर में आवंटित आवास न खाली कराये जाने सम्बन्धी पत्र एसपी, डीआईजी, आईजी व डीजीपी भेजा है। साथ ही सुलतानपुर से अमेठी जिले में तैनात पुलिस कर्मियों ने बच्चों की शिक्षा बाधित होने एवं अन्य समस्याओं का जिक्र करते हुए आवास न खाली कराये जाने की भी मांग की है। आपको बता दें कि नवसृजित जनपद अमेठी एक जुलाई 2010 को अस्तित्व में आया था। सृजन के करीब 12 साल बाद भी स्मृति ईरानी के संसदीय क्षेत्र में पुलिस कर्मियों के लिए आवास नहीं बन सका। राहुल गांधी के सांसद रहने पर भी जिले का हाल रहा वही। मौजूदा समय मे भी पुलिस कर्मियों के लिए सरकारी आवास न उपलब्ध होने की वजह से उनका परिवार ठोकरें खाने को मजबूर है। इस बाबत एसपी अमेठी दिनेश कुमार सिंह ने बताया कि जिले में आवास की व्यवस्था उपलब्ध नहीं है। वहीं अयोध्या मंडल के आईजी केपी सिंह ने कहा उच्चाधिकारियों के जरिये जारी निर्देशो का अवलोकन कर एवं सम्बंधित अधिकारियों से वार्ता कर उचित हल निकाला जाएगा।

एसएसपी को दिया प्रार्थना पत्र बाद में कार्रवाई से मुकरी महिला

कैनविज टाइम्स संवाददाता

❐ प्रार्थना पत्र देकर उच्च अधिकारियों को किया परेशान

बदायूं। कुंवरगांव थाना क्षेत्र की एक महिला ने कस्बा निवासी एक युवक पर गंभीर आरोप लगाते हुए 27 अप्रैल को एसएसपी को प्रार्थना पत्र दिया था।कुंवरगांव निवासी युवक सुमित लगभग तीन साल से महिला को शादी का झांसा देकर उससे शारीरिक संबंध बना रहा था और अब वह महिला के साथ बनाए शारीरिक संबंधों की वीडियो फोटोज वायरल करने की धमकी दे रहा था। महिला ने युवक पर यह भी आरोप लगाया कि वह अभी बजीरगंज में किराए पर रह रही है जहां घटना 27 अप्रैल की है जहां युवक अपने साथियों के साथ सुबह महिला के कमरे पर पहुंचा और जमकर हंगामा किया और वीडियो फोटो वायरल करने की धमकी दी।और रुपयों की मांग की जब हंगामा देख पड़ोसी आ गए तभी युवक अपने साथियों सहित फरार हो गए। जहां महिला ने 27 अप्रैल को एसएसपी को प्रार्थना दिया जहां एसएसपी ने मामले का तुरंत संज्ञान लेते हुए सीओ बिसौली को महिला के बयान दर्ज करने के लिए आदेश कर दिया । जहां सीओ बिसौली शक्ति सिंह ने महिला के ब्यान दर्ज कर आख्या एसएसपी को भेज दी उधर युवक व उसके परिवार वाले महिला के कमरे पर पहुंच कर महिला पर पैसे लेकर मामला दबाने के लिए दबाव बनाने लगे मामला अधिकारियों के संज्ञान में होते हुए । महिला को जब महिला थाने बुलाया गया लेकिन महिला वहां भी नहीं पहुंची।महिला का मुकदमा दर्ज करने के लिए कुंवरगांव थाने भी बुलाया गया लेकिन महिला वहां भी नहीं पहुंची।फिलहाल महिला अब कार्रवाई करने से मुकर रही है।ऐसे में पुलिस की फजीहत होती दिख रही है । सूत्रों के मुताबिक यह महिला कई लोगों को अपना शिकार बना चुकी है । महिला लोगों के खिलाफ थानों में प्रार्थना पत्र देती है और आर्थिक समझौता कर लेती है। पुलिस की कार्यशैली पर उठ रहे सवाल जब महिला ने युवक पर गंभीर आरोप लगाते हुए उच्च अधिकारियों को प्रार्थना पत्र दिया था तो उच्च अधिकारियों ने मामले को दर्ज क्यों नहीं कराया। युवक पर त्वरित कार्रवाई क्यों नहीं की जबकि युवक काफी लंबे समय से सट्टे का व्यापार करता आ रहा है।

भाजपा में भूल की राजनीति, फिर सुधार

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुल्तानपुर। भाजपा के अंदर सब सही चल रहा है यह स्पष्ट नहीं है। पहले नगरपालिका अध्यक्ष का सुल्तानपुर विधायक पर हमलावर होना और अब अक्षयतृतीया एवं भगवान परशुराम जयंती के मौके पर लंभुआ विधायक के आमंत्रण कॉर्ड से पूर्व भाजपा विधायक का नाम गायब होना इसका संकेत है कि पार्टी में विघटन की राजनीति शुरू हो चुकी है। हालांकि सोशल मीडिया पर कॉर्ड वायरल होने के करीब 6 घंटे बाद दूसरा कॉर्ड सामने आया तो मुख्य वक्ता में पूर्व विधायक देवमणि द्विवेदी का नाम लिखा गया था। बता दें कि कल अक्षयतृतीया एवं भगवान परशुराम जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में आयुष एवं खाद्य मंत्री दयाशंकर मिश्रा 'दयालु' शामिल होंगे। यह कार्यक्रम लंभुआ

लंभुआ विधायक के कार्यक्रम वाले आमंत्रण पत्र से गायब था पूर्व विधायक का नाम, सोशल मीडिया पर कॉर्ड हुआ वायरल तब बढ़ाया गया नाम

विधायक सीताराम वर्मा के संयोजन में कल दोपहर दो बजे लंभुआ के पुरानी तहसील परिसर में आयोजित किया गया है। उक्त कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि दयाशंकर मिश्रा 'दयालु' आयुष एवं खाद्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार, उत्तर प्रदेश सरकार उपस्थित रहेंगे।अक्षयतृतीया एवं भगवान परशुराम जयंती के शुभ अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में भाजपा कार्यकर्ता , पदाधिकारी एवं समर्थकों सहित आम लोग सादर आमंत्रित है। गौरतलब रहे कि टिकट कटने के बावजूद विधानसभा चुनाव में पार्टी को जीत दिलाने के लिये सक्रिय रहे पूर्व क्षेत्रीय विधायक देवमणि द्विवेदी व प्रांतीय कमेटी के 'दिग्गज' सुशील त्रिपाठी, शिवाकांत मिश्र समेत कई प्रमुख स्थानीय नेता के नाम विधायक के आमंत्रण पत्र से गायब था। पत्र 'वायरल' होते ही भाजपा खेमे में हड़कंप मच गया। सामाजिक समरसता की राजनीति करने वाली भाजपा में ब्राह्मणों की एकजुटता पर सवाल उठने लगे। यही नहीं भाजपा एमएलए सीताराम वर्मा की ओर से छपे आमंत्रण पत्र को कई लोगो को दिया तक नहीं गया। बताया जा रहा है कि ठेकेदारी की सेटिंग-गेटिंग में लोकल नेताओं के बीच बुजुर्ग एमएलए सीताराम वर्मा मोहरा बन गए थे।

ब्राह्मण क्रांति मोर्चा ने भगवान परशुराम की कार्यस्थली सरसोता पर किया हवन-पूजन

❐ अक्षय तृतीया की पूर्व संध्या पर मनाया प्राकट्योत्सव

❐ भगवान परशुराम के शौर्य को याद दिलाने को सरसोता में किया हवन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बदायूं। ब्राह्मण क्रांति मोर्चा के अध्यक्ष डॉ. शैलेश पाठक के नेतृत्व में जनपद के विप्रजनों ने सहसवान क्षेत्र के सरसोता में परशुराम भगवान द्वारा निर्मित कुंड में स्नान करके हवन-पूजन कर अपने आराध्य भगवान परशुराम का पूर्व संध्या पर जन्मोत्सव मनाया। इस दौरान उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य आमजन तक इस पवित्र स्थान का महत्त्व पहुंचाना है, जिससे कल अधिक से अधिक लोग इस स्थान के दर्शन कर पुण्य कमा सकें, साथ ही युवा पीढ़ी यहां आकर भगवान परशुराम के शौर्य की अनुभूति करे। उन्होंने कहा की आने वाले दिनों में उत्तर प्रदेश सरकार से इस स्थान को पर्यटन नगरी बनाने की मांग की जाएगी। कार्यक्रम में अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा के जिला उपध्यक्ष महेश शर्मा ने इस नई पहल का आभार जताया एवम कहा कि इस तरह के कार्यक्रम से आपसी भाईचारा बढ़ता है। ब्राह्मण चेतना परिषद के जिला अध्यक्ष आशुतोष उपाध्याय एवम परशुराम सेवा समिति के अध्यक्ष अमन मयंक ने पूजा अर्चना करके सभी को प्रसाद वितरित किया। कार्यक्रम में अनिल उपाध्याय, रवि ओझा, कल्लू पंडित, पप्पू शर्मा, अजय पाठक, अनुज मिश्रा आदि ने मुख्य रूप से भाग लिया।

गरीब परिवारों के घर लेकर पहुंचे सेवई किट, सेवइयां पाकर खुश हुए लोग

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुल्तानपुर। ईद का पवित्र त्योहार भाईचारे का पर्व है। इस दिन लोग एक-दूसरे से गिले-शिकवे दूर कर गले मिलकर एक दूसरे को सेवइयां खिलाकर मुंह मीठा कराते हैं। कमर तोड़ महंगाई लोगो की इस खुशी में ब्रेक लगा रखा है। ऐसे में ग्लोबल हुसैनी मिशन ने ऐसे परिवारों को चिंहित किया और उनके घरों तक सेवई की किट पहुचाई। संस्था के सदस्य अमन सुल्तानपुरी ने बताया कि हमारा दिल चाह रहा था कि हम ईद के मौके पर गरीब लोगो के चेहरे पर मुस्कान ला सके। इस बात को मैने संस्था के पदाधिकारियों के बीच रखखा। सबकी सहमति से फैसला लिया गया कि एक किलो सेवई व चीनी गरीब परिवारों में पहुंचाया जाए। सभी साथियों के सहयोग से पैसे जमा हुए। फिर 25 घर शहर व आसपास के इलाकों में चिंहित किया गया।

उसके बाद उन्हें यह किट पहुंचाई गई। बता दें कि सुल्तानपुर जिले व शहर में इन दिनों ग्लोबल हुसैनी मंच सोशल कार्यों में बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रही है। केवल रमजान माह में ही संस्था की ओर से सुल्तानपुर व लखनऊ में 10 यूनिट से ऊपर ब्लड डोनेट किया गया। इसके अलावा गरीब बच्चियों की फीस से लेकर गरीब परिवार की इफ्तार तक की व्यवस्था संस्था की ओर से की गई है। संस्था के सदस्य अमन सुल्तानपुरी ने कहा कि हम जाति और धर्म नहीं देखते, हम यह देखते हैं कि ईश्वर का बंदा है तो हम उसकी मदद करते हैं। उन्होने कहा यह हमारे लिए प्रसन्नता की बात है उस मालिक ने हम सबको आज इस काबिल किया है कि लोगो की मदद करना उसका काम है और वो यह काम हम सब से ले रहा है।

कल्याणी नदी के पुल के पास दो ट्रकों की हुई आपस में भिड़ंत

रामसनेही घाट बाराबंकी। कोतवाली रामसनेहीघाट अंतर्गत कल्याणी नदी के पुल के पास दो ट्रक की आपस में भिड़ंत हो गई। सूचना मिलते ही रामसनेहीघाट की एंबुलेंस मौके पर पहुंची जिसमें कार्यरत ईएमटी सौरभ गुप्ता व पायलेट अमरेश यादव ने 36 वर्षीय हरिओम पुत्र राजेंद्र सिंह निवासी रूरिया थाना कपूरपुर जिला मैनपुरी व 28 वर्षीय रविंदर पुत्र अवधेश वर्मा निवासी बसहा शरीफ थाना मसौली जिला बाराबंकी को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रामसनेहीघाट मे सुरक्षित लाया मरीज को प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टर आरके सिंह राठौर के द्वारा जिला अस्पताल के लिए रिफर कर दिया गया।।

लखनऊ व्यापार मंडल ने किया शपथ ग्रहण समारोह

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। व्यापार मण्डल की तरफ से अमर नाथ मिश्रा ने बताया कि लखनऊ व्यापार मंडल की बुद्धेश्वर ईकाई का सोमवार को शपथ ग्रहण समारोह हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने अध्यक्ष पिंटू गुप्ता, जय गुप्ता व धीरपाल यादव को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। विशिष्ट अतिथि संयुक्ता भाटिया ने वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रदीप कुमार, शिवकुमार यादव, रवीश गुप्ता व राजेंद्र अग्रवाल ने उपाध्यक्ष एवं राजू शुक्ला, रमेश कन्नोजिया, अमर पाण्डेय, राज कुमार, संजीव गुप्ता को पद की शपथ दिलाई। वहीं अमर नाथ मिश्रा ने मंत्री धर्मेंद्र सिंह, गोविन्द प्रसाद, सुरेन्द्र यादव, सौरभ पाल व रीतू श्रीवास्तव को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। मुख्य चुनाव अधिकारी उमेश शर्मा ने शिवम पाण्डेय, मीडिया प्रभारी प्रिंस गुप्ता व अरुण गुप्ता को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। लखनऊ व्यापार मंडल के महामंत्री अनुराग मिश्रा ने सभा को सम्बोधित करते हुए सभी नव नियुक्त पदाधिकारियो को बधाई दी। अभिषेक खरे ने कहा कि संगठन को मज़बूत करना सभी की जिम्मेदारी है। वही महापौर संयुक्ता भाटिया ने कहा की व्यापार मंडल व्यापारियों की रीढ़ की हड्डी है।

आबकारी विभाग की छापेमारी में पकड़ी गई अवैध शराब, कारोबारी पर मुकदमा दर्ज

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुलतानपुर। एक तरफ आबकारी विभाग के लचर और लापरवाही की खबरें लगातार सुर्खियां बटोर रही है, तो दूसरी तरफ विभाग अवैध शराब कारोबारियों पर शिकंजा कस रहा है। प्रदेश में राजस्व देने वाले जनपदों में सुलतानपुर ने पूर्व के रिकार्ड को ध्वस्त करते हुए कीर्तिमान बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, तो लगातार विभाग पर आरोप लग रहे है, कहीं ना कही कुछ तो गडबड है, अन्यथा जिस प्रकार गैर जनपद की शराब बिक्री, होटल, ढ़ाबो पर अवैध रूप से बेची जा रही शराब, शराब की दुकानों में महिला का पुरुषों के साथ जाम से जाम टकराना इसे झुठलाया नही जा सकता, कुंडा निर्मित शराब बिक्री से लेकर तमाम आरोप आबकारी विभाग पर लग रहे हैं, आरोप की सत्यता को परखने के लिए

विभागीय टीम ने जब कार्यवाही की गति बढाई तो कुछ तो गडबड है? को लेकर प्रदेश स्तर से भी आदेश निर्देश आने लगे। इसी क्रम में आबकारी आयुक्त उत्तर प्रदेश, जिलाधिकारी रवीश गुप्ता व उपमहानिरीक्षक /पुलिस अधीक्षक डॉ.विपिन मिश्र के आदेश के क्रम में एवं जिला आबकारी अधिकारी हितेंद्र शेखर के कुशल नेतृत्व में मई माह की शुरुआत अवैध शराब कारोबारियों की धरपकड़ व छापेमारी के साथ शुरू हुई, 1माई को आबकारी निरीक्षक सुभाष चंद्र सिंह क्षेत्र प्रथम सुल्तानपुर व क्षेत्र चतुर्थ लंभुआ एवं सज्जन बाबू शुक्ला आबकारी निरीक्षक क्षेत्र पंचम बल्दीराय द्वारा ग्राम बैंतीकला में राम आसरे के बंद ईंट के भट्ठे थाना चांदा में दबिश दी गई। दबिश के दौरान लगभग 16 लीटर अवैध कच्ची शराब बरामद हुई, ताबड़तोड़ छापेमारी में ग्राम छतौना में इंद्रसेन सिंह के भट्ठे पर आबकारी टीम के द्वारा दी गई दबिश में मौके पर लगभग 350 किलोग्राम लहन नष्ट कर 01 अभियोग पंजीकृत करते हुए आबकारी अधिनियम की सुसंगत धाराओं में नियमानुसार कार्यवाही की गई। दुकानों का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। बारकोड एवं क्यूआर कोड स्कैन किया गया। किसी दुकान पर अवैध शराब की बरामदगी नहीं हुई। दबिश के दौरान मौके पर उपस्थित लोगों को अवैध शराब के सेवन से होने वाले दुष्परिणामों के बारे में भी जागरूक किया गया।

हजरत नवी उल्लाह रहमतुल्लाह अलैह का सालाना उर्स मनाया

बदायूं।हर साल की तरह इस साल भी जामा मस्जिद के पास मोहल्ला मौलवी टोला स्थित मज़ार शरीफ हजरत नवी उल्लाह रहमतुल्लाह अलैह का सालाना उर्स शरीफ अदबो एहतिराम के साथ रविवार को 29 वें रमजान को मनाया गया। जायरीन और अकीदतमंद की भीड़ यहां उमड़ी और गुलपोशी व चादरपोशी कर दुआ मांगी। कुल शरीफ की फातिहा के साथ उर्स का समापन हो गया। इससे पहले रात में कव्वाली का दौर चलता रहा इस दौरान अकीदतमंदों की भारी भीड़ जुटी, जिन्होंने कुल शरीफ की फातिहा में शिरकत की और मुल्क व कौम की तरक्की की दुआ मांगी। लोगों ने यहां गुलपोशी व चादरपोशी की रस्म भी अदा की। इस दौरान कव्वाल फैजान रजा अजमेरी सूफी सिंगर का कव्वालियों का प्रोग्राम हुआ जिसमे खूब रौनक को बढ़ाई इसके बाद कुल शरीफ की फातिहा में देश प्रदेश की उन्नति के लिए दुआ की गई। इस मौके पर शबाव मिया, कल्लू, चुन्ना भाई, तय्यब खान, शकील सलमानी,मोहम्मद हासिम समेत बड़ी संख्या में अकीदतमंद मौजूद रहे।

सरकारी शराब का ठेका बना मॉडल शॉप

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुल्तानपुर । यहां सरकारी शराब बिक्री का ठेका मॉडल शॉप बन गया। मयखाने में कुछ युवकों के साथ महिला का शराब पीते हुए फोटो और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने से हड़कंप मच गया है। वही वीडियो वायरल होने के बाद आबकारी विभाग लीपापोती में जुटा है।

❐ मयखाने में कुछ युवकों के साथ महिला का शराब पीते हुए फोटो और वीडियो हुआ वायरल, लीपापोती में जुटा महकमा

मौजूदा समय में आज जहां एक तरफ शराब व शराबियों को समाज नफरत की निगाहों से देखता है कई परिवार का मानना है की शराब से उनकी जिंदगी तहस नहस हो गयी है वही शनिवार शाम उसी शराब की दुकान पर एक महिला खुले आम शराब के जाम जाम लगाती दिखी। जाम के बाद महिला ने धुंए के छल्ले भी उड़ाये। दरअसल पूरा मामला सुल्तानपुर के सिविल लाइन स्थित देशी शराब के ठेके का है। जहां एक महिला अपने दोस्तों के साथ शराब के ठेके पर पहुंची। महिला ने दोस्तो के साथ ठेके पर लगी बेंच पर महफ़िल लगाई। एक के बाद एक पैक का मजा लेने लगी। इतना ही नहीं महिला ने शराब पीने के बाद सिगरेट के धुंए के छल्ले भी उड़ाये।

ठेके पर शराब पिलाने की है पाबंदी

महिला की इन हरकतों को शराब के ठेके पर बैठे एक व्यक्ति ने अपने कैमरे में कैद कर लिया और इसे वायरल कर दिया। वायरल वीडियो को देखने के बाद सभी दंग रह गये। यह स्थिति यहां तब है जब ग्राहकों को ठेके के अंदर शराब पिलाने पर पाबंदी है। ऐसे में ठेके से 'अनैतिक कृत्य' होने का भी अंदेशा है।

बदहाल सड़कें दिखा रही इसौली के विकास का आइना

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बल्दीराय/सुलतानपुर। सुल्तानपुर का अति पिछड़ा इसौली विधानसभा क्षेत्र का प्रमुख मार्ग मुसाफिरखाना देवरा मार्ग की दशा आखिर कब सुधरेगी देखते देखते पूरे 10 वर्ष हो गए जनप्रतिनिधि सिर्फ चुनाव में विकास की ढोल बजाकर चले जाते हैं किंतु इस मार्ग की बिगड़ी हालत की ओर कोई नहीं देखता भाजपा कार्यकर्ताओं और नागरिकों की बार-बार मांग के बावजूद सुल्तानपुर की सांसद मां मेनका संजय गांधी ने मार्ग निर्माण करवाने का प्रयास किया लेकिन अभी तक सत्तापक्ष की सांसद भी इस मार्ग की दशा को सुधारने में सफल नहीं हो पाई। बता दें कि इसौली विधानसभा का मुसाफिरखाना देवरा मार्ग दो तहसील मुसाफिरखाना एवं बल्दीराय तथा तीन जनपद अमेठी सुल्तानपुर अयोध्या को जोड़ने वाला यह प्रमुख मार्ग है। योगी सरकार के निर्देश के बाद तहसील मुख्यालय को जिले के प्रमुख मार्ग से जोड़ने के लिए प्रस्ताव दिया गया था परंतु कुछ सत्तापक्ष के नेताओं के दबाव में आकर विभाग द्वारा तहसील मुख्यालय तक प्रस्तावित इस मार्ग को दक्षिणी ओर निरस्त करके उत्तरी छोर पर स्थित हलियापुर वेलवाई मार्ग से जोड़ दिया गया।

इसौली विधानसभा में भाजपा की हार बनी मार्ग निर्माण में रोड़ा

सुल्तानपुर जिले का इसौली विधानसभा क्षेत्रविकास के मामले में अति पिछड़ा क्षेत्र है यहां दो पंचवर्षीय में भाजपा को हार का सामना देखना पड़ रहा है। इस बार भी सत्ता पक्ष की हार हुई है सपा का विधायक इस क्षेत्र से बना है। सूत्र बताते हैं कि कहीं भाजपा की हार ही मुसाफिरखाना देवरामार्ग के निर्माण में रोड़ा तो नहीं बन रही है फिलहाल मार्ग निर्माण चाहे जब हो लेकिन क्षेत्र की जनता मार्ग निर्माण ना होने से एकदम त्रस्त हो चुकी है आए दिन मार्ग पर दुर्घटनाएं हो रही हैं बरसात में यह मार्ग तालाब का रूप ले लेता है लोग तालाब रुपी मार्ग से आते जाते हैं और लगातार गिरकर चोटिल हो रहे हैं। सूत्र बता रहे हैं कि बीते वर्षो में कई लोगों की गिरकर मौत भी हो चुकी है लेकिन फिर भी शासन प्रशासन का ध्यान इस मार्ग के निर्माण की ओर नहीं गया। क्षेत्र के बड़ी संख्या में नागरिकों ने सांसद एवं मुख्यमंत्री से मार्ग निर्माण के संबंध में अवगत कराते हुए मुख्य मार्ग का निर्माण अतिशीघ्र करवाए जाने की मांग की है ।

सम्पादकीय

राहत की दरकार

कोरोना संक्रमण में वृद्धि की चुनौती से मुकाबले के लिये राज्य के मुख्यमंत्रियों से प्रधानमंत्री के संवाद के लिये बैठक बुलाई गई थी। मगर बाद में इसमें पेट्रोलियम पदार्थों की महंगाई का मुद्दा हावी हो गया। प्रधानमंत्री का कहना था कि विपक्षी दलों शासित राज्य सरकारों ने केंद्र सरकार द्वारा उत्पाद शुल्क घटाने के बावजूद वैट घ्में कटौती करके पेट्रोल-डीजल उपभोक्ताओं को राहत नहीं दी। इसके बाद इस मुद्दे पर राजनीतिक बयानबाजी शुरू हो गई। कंग्रेस समेत कई विपक्षी दलों ने केंद्र से राजग सरकार के दौरान बढ़ाए गये उत्पाद शुल्क को घटाकर महंगाई कम करने की मांग की है। यह सर्वविदित है कि कोरोना संकट के लगभग दो वर्ष के दौरान तमाम लोगों की आय में गिरावट आई है। ऐसे में केंद्र व राज्य सरकारों को आम जनता के प्रति संवेदनशील व्यवहार दिखाना चाहिए। समाज में कमोबेश हर वर्ग की आय में संकुचन हुआ है। हालिया आंकड़ों के अनुसार करीब चार करोड़ लोग उच्च मध्यम वर्ग से निम्न मध्यम वर्ग में आ गये। जब तक आय के नये अवसर बनें और रोजगार संकट खत्म हो सके, तब तक सरकारों को किसी न किसी तरह राहत देने की पहल करनी चाहिए। इससे जब लोगों की आय बढ़ेगी तो वे स्वतरू ही सरकार की छूट के लिये नहीं देखेंगे। राज्य सरकारों को वैट में कमी करके अपनी आय के दूसरे स्रोत तलाशने चाहिए। साथ ही जीएसटी के संग्रहण में जो छिद्र हैं उन्हें बंद करके अपनी आय बढ़ानी चाहिए। दरअसल, केंद्र सरकार ने बीते साल नवंबर में उत्पाद शुल्क को कम करके राज्य सरकारों से पेट्रोलियम पदार्थों पर वैट घटाने का आग्रह किया था। भाजपा शासित राज्यों ने तो इसमें अपनी सुविधा के अनुसार कमी कर दी थी, लेकिन कंग्रेस समेत अन्य विपक्षी दलों वाली सरकारों मसलन महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, केरल, झारखंड तथा तमिलनाडु ने वैट में कमी करके उपभोक्ताओं को राहत नहीं दी। जैसा कि जाहिर था कंग्रेस समेत तमाम विपक्षी दलों के नेताओं ने प्रधानमंत्री के बयान के बाद तीखे हमले किये। कंग्रेस ने मांग की कि पहले राजग सरकार अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के दामों में भारी गिरावट के दौरान बढ़ाये गये अतिरिक्त उत्पाद शुल्क को कम करके राहत दे। साथ ही दलील दी कि यूपीए शासन के दौरान हर साल एक लाख करोड़ की सब्सिडी दी जाती रही है। जवाब में केंद्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मामलों के मंत्री सरकार के बचाव में उतरे। उनकी दलील थी कि भाजपा शासित राज्यों के मुकाबले दूसरे दलों की सरकारों में पेट्रोल व डीजल पर वैट की दर करीब दुगनी है, जिसे लोगों को राहत देने के लिये कम किया जाना चाहिए। उनका कहना है कि राज्यों की सरकारों को अन्य मदों से अतिरिक्त आय जुटानी चाहिए। यह कटु सत्य है कि देश करीब अस्सी फीसदी कच्चा तेल विदेशों से मंगवाता है। फिर राज्यों के पेट्रोल पंपों के जरिये इसकी खुदरा बिक्री होती है। लेकिन कड़वी हकीकत यह है कि मूल खरीद मूल्य के मुकाबले करीब दुगने मूल्यों पर इसकी खुदरा बिक्री होती है। दरअसल, पेट्रोलियम पदार्थों के मूल दाम में उत्पाद शुल्क, वैल्यू एडेड टैक्स यानी वैट मिलाकर इसकी अंतिम कीमत का निर्धारण होता है। लेकिन एक हकीकत यह भी है कि पेट्रोलियम पदार्थों पर लगने वाला वैट राज्य सरकारों की आय का मुख्य जरिया है। साथ ही अन्य मुख्य आय स्रोतों में शराब व संपत्ति पर लगने वाला कर है। जीएसटी से पहले आय केंद्र को होती है और फिर राज्यों को उनका हिस्सा दिया जाता है, जिसके बंटवारे व समय पर न मिलने को लेकर केंद्र व राज्यों में लगातार तनातनी रही है। सही मायनों में पेट्रोलियम पदार्थों की आर्थिकी को राज्य अपनी कामधेनु मानते हैं और इसमें कटौती को आसानी से तैयार नहीं होते। बहरहाल, केंद्र सरकार को पेट्रोलियम पदार्थों, पर्यावरण प्रदूषण व सेहत से जुड़े मुद्दों पर पूरे देश के लिये एक नीति निर्धारित कर आम आदमी को राहत देने का प्रयास करना चाहिए।

कैसे मिले न्याय, कठघरे में कार्यपालिका और विधायिका

सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश से लेकर हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश इस तरह की टिप्पणी कई बार कर चुके है। बहुत ही छोटे छोटे मामलों को न्यायालय की चौखट तक पहुचाने में स्थानीय पुलिस और प्रशासन की भूमिका बहुत ही गैर जिम्मेदाराना है। नाली, रास्ता, अतिक्रमण जैसे मामले जिनका निस्तारण तहसील दिवस आदि में हो जाना चाहिए वे मामले भी सालो साल जिला न्यायालयों में भटकते रहते है। भारत की न्याय व्यवस्था सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश, जजों ने कई बार तीखी टिप्पणी की लेकिन इसका असर अब तक नही दिखाई पड़ा। आकड़ों पर नजर डाले तो 2010 और 2020 के बीच सभी न्यायालयों में लंबित मामलों में 2.8 प्रतिशत की दर से वार्षिक बढ़ोतरी हुई। 15 सितंबर, 2021 तक भारत के सभी न्यायालयों में 4.5 करोड़ से ज्यादा मामले लंबित थे। इनमें 87.6 प्रतिशत मामले अधीनस्थ न्यायालयों और 12.3 प्रतिशत उच्च न्यायालयों में लंबित थे।इसका अर्थ यह है कि अगर कोई नए मामले दायर नहीं होते तो सर्वोच्च न्यायालय को सभी लंबित मामलों को निपटाने में 1.3 वर्ष लगेंगे और उच्च न्यायालयों एवं अधीनस्थ न्यायालयों, प्रत्येक को तीन-तीन वर्ष लगेंगे। 2019 और 2020 के बीच उच्च न्यायालयों में लंबित मामलों में 20 प्रतिशत की दर से, और अधीनस्थ न्यायालयों में 13 प्रतिशत की दर से बढ़ोतरी हुई। उल्लेखनीय है कि 2020 में कोविड-19 महामारी के कारण न्यायालयों में सामान्य कामकाज सीमित रहा। इसलिए जहां पिछले वर्षों की तुलना में नए मामले बहुत कम थे, लंबित मामले बढ़ते गए- चूंकि मामलों को निपटाने की दर, दर्ज होने वाले नए मामलों की दर से बहुत धीमी थी। एक चौकाने वाला आकड़ा यह कि लगभग 45 लाख मामले अधीनस्थ और उच्च न्यायालयों में 10 वर्षों से भी ज्यादा समय से लंबित हैं। उच्च न्यायालयों में 21 प्रतिशत और अधीनस्थ अदालतों में 8 प्रतिशत मामले 10 वर्षों से ज्यादा समय से लंबित हैं। अब जरा बॉत न्यायाधीशों की कमी पर कर ले तो यह भी एक बड़ा कारण है कि न्यायाधीशों की कमी के कारण भी देश में न्याय मिलना कठिन है।

देश में न्याय व्यवस्था किस कदर पटरी से उतरी है यह बॉत सभी को मालूम है। ऐसे हजारों प्रमाण है कि मुकदमा शुरू होता है, पेशी पर पेशी, पीड़ित और आरोपी की मौत हो जाती है लेकिन फैसला नही हो पाता। ऐसी स्थिति में जब भारत के मुख्य न्यायधीश देश के मुख्यमंत्रियों और हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस की कॉफ्रेस में यह कहना कि सरकारें ही सबसे बड़ी मुकदमें बाज है। लम्बित केसों में 50 प्रतिशत सरकार से जुड़े है। देश में कार्यपालिका और विधायिका अगर ठीक से काम करें तो यह नौबत ही न आने पाए। सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश एनवी रमण का यह कहना कि अगर शासन कानून का पालन कराये तो न्यायालय उनके रास्ते में आएगी नही। लेकिन जब कानून का पालन नही होता और कोई न्याय के लिए न्यायालय का दरवाजा खटखटायेगा हो हम उसे न नही कह सकते। देश में न्याय की लचर व्यवस्था के कार्यपालिका और विधायिका तथा सरकारों के प्रति ऐसी टिप्पणी पहली बार नही हुई। इसे पूर्व भी सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश एनवी रमण ने सरकारों पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि देश के अदालतो के फैसलों का सराकरों द्वारा अनुपालन न कराना लोकतंत्र के लिए ठीक नही है। सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश से लेकर हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश इस तरह की टिप्पणी कई बार कर चुके है। बहुत ही छोटे छोटे मामलों को न्यायालय की चौखट तक पहुचाने में स्थानीय पुलिस और प्रशासन की भूमिका बहुत ही गैर जिम्मेदाराना है। नाली, रास्ता, अतिक्रमण जैसे मामले जिनका निस्तारण तहसील दिवस आदि में हो जाना चाहिए वे मामले भी सालो साल जिला न्यायालयों में भटकते रहते है। भारत की न्याय व्यवस्था सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश, जजों ने कई बार तीखी टिप्पणी की लेकिन इसका असर अब तक नही दिखाई पड़ा। आकड़ों पर नजर डाले तो 2010 और 2020 के बीच सभी न्यायालयों में लंबित मामलों में 2.8 प्रतिशत की दर से वार्षिक बढ़ोतरी हुई। 15 सितंबर, 2021 तक भारत के सभी न्यायालयों में 4.5 करोड़ से ज्यादा मामले लंबित थे। इनमें 87.6 प्रतिशत मामले अधीनस्थ न्यायालयों और 12.3 प्रतिशत उच्च न्यायालयों में लंबित थे।इसका अर्थ यह है कि अगर कोई नए मामले दायर नहीं होते तो सर्वोच्च न्यायालय को सभी लंबित मामलों को निपटाने में 1.3 वर्ष लगेंगे और उच्च न्यायालयों एवं अधीनस्थ न्यायालयों, प्रत्येक को तीन-तीन वर्ष लगेंगे। 2019 और 2020 के बीच उच्च न्यायालयों में लंबित मामलों में 20 प्रतिशत की दर से, और अधीनस्थ न्यायालयों में 13 प्रतिशत की दर से बढ़ोतरी हुई। उल्लेखनीय है कि 2020 में कोविड-19 महामारी के कारण न्यायालयों में सामान्य कामकाज सीमित रहा। इसलिए जहां पिछले वर्षों की तुलना में नए मामले बहुत कम थे, लंबित मामले बढ़ते गए- चूंकि मामलों को निपटाने की दर, दर्ज होने वाले नए मामलों की दर से बहुत धीमी थी। एक चौकाने वाला आकड़ा यह कि लगभग 45 लाख मामले अधीनस्थ और उच्च न्यायालयों में 10 वर्षों से भी ज्यादा समय से लंबित हैं। उच्च न्यायालयों में 21 प्रतिशत और अधीनस्थ अदालतों में 8 प्रतिशत मामले 10 वर्षों से ज्यादा समय से लंबित हैं। अब जरा बॉत न्यायाधीशों की कमी पर कर ले तो यह भी एक बड़ा कारण है कि न्यायाधीशों की कमी के कारण भी देश में न्याय मिलना कठिन है। 20 फरवरी, 2020 तक अधीनस्थ न्यायालयों में न्यायाधीशों की स्वीकृत संख्या में से (24,018 में से 5,146 पद) 21 प्रतिश पद रिक्त थे । जिन राज्यों में कम से कम 100 न्यायाधीशों की स्वीकृत संख्या है, उनमें से बिहार में सबसे अधिक 40 प्रतिशत, इसके बाद हरियाणा में 38 प्रतिशत और झारखंड में 32 प्रतिशत रिक्तियां हैं।एक प्रयास यह भी किया गया कि ट्रिब्यूनल्स और विशेष अदालतों (जैसे फास्ट ट्रैक अदालतें और फैमिली कोर्ट्स) को इसलिए गठित कर मामलों का तेजी से निपटान किया जा सके। लेकिन वहां भी मामले बहुत अधिक संख्या में लंबित हैं, और रिक्तियां भी बहुत अधिक हैं। उदाहरण के लिए 2020 के अंत तक राष्ट्रीय कंपनी कानून ट्रिब्यूनल (एनसीएलटी) में 21,259 मामले लंबित थे। अप्रैल 2021 तक एनसीएलटी में 39 सदस्य थे, जबकि उसकी स्वीकृत संख्या 63 की है।नवीनतम आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं लेकिन 2018 में कानून मंत्रालय द्वारा लोकसभा में सांझा किए गए आंकड़ों के अनुसार पूरे भारत में 22545 न्यायिक पदों की स्वीकृत संख्या में से 5436 पद खाली थे। यह अकेले सरकार ही नहीं है जो इस तरह के दुखद मामलों के लिए जिम्मेदार है। खुद न्यायपालिका को भी नियुक्तियों में देरी के लिए दोषी ठहराया जा सकता है। ऐसी कई घटनाएं हुईं जहां पर उच्च न्यायालयों ने रिक्त पदों के लिए नामों की सिफारिश करके न्यायाधीशों की नियुक्ति शुरू नहीं की थी। सरकारी आँकड़ों के अनुसार, उच्चतम न्यायालय में 58,700 तथा उच्च न्यायालयों में करीब 44 लाख और जिला एवं सत्र न्यायालय तथा अधीनस्थ न्यायालयों में लगभग तीन करोड़ मुकदमे लंबित हैं। इन कुल लंबित मामलों में से 80 प्रतिशत से अधिक मामले जिला और अधीनस्थ न्यायालयों में हैं। इसका मुख्य कारण भारत में न्यायालयों की कमी, न्यायाधीशों के स्वीकृत पदों का कम होना तथा पदों की रिक्तता का होना है। वर्ष 2011 की जनगणना के आधार पर देश में प्रति 10 लाख लोगों पर केवल 18 न्यायाधीश हैं। विधि आयोग की एक रिपोर्ट में सिफारिश की गई थी कि प्रति 10 लाख जनसंख्या पर न्यायाधीशों की संख्या तकरीबन 50 होनी चाहिये। इस स्थिति तक पहुँचने के लिये पदों की संख्या बढ़ाकर तीन गुना करनी होगी। पिछले दो दशकों में फास्ट ट्रैक अदालतें बनाई गई हैं। लेकिन अधीनस्थ न्यायालयों और इन फास्ट ट्रैक कोर्ट्स में लंबित मामलों की संख्या लगातार बढ़ रही है। मई 2021 तक 24 राज्योंध्यूटी (बाकी में फास्ट ट्रैक अदालतें चालू हालत में नहीं हैं) में 956 फास्ट ट्रैक अदालतों में 9.2 लाख से अधिक मामले लंबित थे।लंबे समय तक मामले लंबित रहने की वजह से भारत की जेलों में अंडरट्रायल्स (आरोपी व्यक्ति जोकि या तो मुकदमे का इंतजार कर रहे हैं या उन पर मुकदमा चल रहा है) की संख्या बहुत अधिक हो गई है। 31 दिसंबर, 2019 तक भारत की जेलों में लगभग 4.8 लाख कैदी बंद थे। इनमें से दो तिहाई (3.3 लाख) से भी ज्यादा अंडरट्रायल हैं। 5,011 अंडरट्रायल्स पांच वर्ष या उससे अधिक समय से जेलों में बंद हैं। इनमें से करीब आधे अंडरट्रायल उत्तर प्रदेश (2,142) और महाराष्ट्र (394) की जेलों में हैं। यानि ठीक ही कहा गया कि न्याय मिलने में अगर देरी होती है तो वह न्याय नहीं मिलने के समान है। स्वस्थ लोकतंत्र की पहचान स्वस्थ न्यायपालिका को माना जाता है, लेकिन हमारे देश की न्याय व्यवस्था इतनी लचर है कि दो-तीन पीढ़ियाँ गुजर जाती हैं, फिर भी उन्हें न्याय नहीं मिल पाता है। कायदे से बदतर हालत की जिम्मेदारी लेकर सरकार को शर्म से चुल्लू भर पानी में डूबकर मर जाना चाहिए, पर ष्चलता हैष वाली मानसिकता उनपर पर हावी है। सरकार के सारे कल-पुर्जे बस खीसें निपोरने में ही मशगूल हैं। निश्चित तौर पर छह साल के बाद भारत के मुख्य न्यायाधीश, प्रधानमंत्री, समस्त हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश और प्रत्येक राज्य सरकार के मुखियों की कॉफ्रेस में विचारधीन कैदियों, हिन्दी और स्थानीय भाषाओं में फैसले, त्वरित न्याय, गैर जरूरी पुराने कानूनों को निरस्त करने, आपसी समझौते से केसों का निपटरों पर चर्चा की गई। लेकिन इस कर्ॉफ्रेस में जो सबसे बड़ी बॉत उठी की देश की न्यायालयों में लम्बित 50 प्रतिशत मुकदमों के लिए सरकार जिम्मेदार है इस पर सरकारों को अवश्य मंथन करना होगा। केन्द्र और राज्य सरकार को सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट जब तब फटकार लगाता रहता है, इसके बावजूद अगर कार्यपालिका और विधायिका अपनी जिम्मेदारी का निवर्हन इसी तरह करेगें तो निश्चित तौर पर भारत में गरीबों के लिए न्याय एक दिव्य सपना बना रहेगा। -प्रेम शर्मा

चीन से बिदकता पाकिस्तान

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

चीन अपने शिनच्यांग प्रांत से पाकिस्तान के ग्वादर नामक बंदरगाह तक 1153 किमी लंबी सड़क बना रहा था ताकि अरब और अफ्रीकी देशों तक पहुंचने का उसे सस्ता और सुगम मार्ग मिल जाए लेकिन अब शाहबाज शरीफ की नई सरकार ने इस पाक-चीन गलियारे की योजना को क्रियानवित करनेवाले प्राधिकरण को भंग कर दिया है। इसे भंग करने के कई कारण बताए जा रहे हैं। एक तो बलूचिस्तान में से इस गलियारे की लंबाई 870 किमी है, जो कि सबसे ज्यादा है।

अभी-अभी कुछ संकेत ऐसे मिले हैं, जिनसे लगता है कि पाकिस्तान की विदेश नीति में बड़े बुनियादी परिवर्तन हो सकते हैं। इन परिवर्तनों का लाभ उठाकर भारत और पाकिस्तान अपने आपसी संबंध काफी सुधार सकते हैं। जिस चीन से पाकिस्तान अपनी 'इस्पाती दोस्ती' का दावा करता रहा है, वह इस्पात अब पिघलता दिखाई पड़ रहा है। जो चीन 5 लाख करोड़ रु. खर्च करके पाकिस्तान में तरह-तरह के निर्माण-कार्य कर रहा था, उस प्रायोजना का भविष्य खटाई में पड़ गया है। चीन अपने शिनच्यांग प्रांत से पाकिस्तान के ग्वादर नामक बंदरगाह तक 1153 किमी लंबी सड़क बना रहा था ताकि अरब और अफ्रीकी देशों तक पहुंचने का उसे सस्ता और सुगम मार्ग मिल जाए लेकिन अब शाहबाज शरीफ की नई सरकार ने इस पाक-चीन गलियारे की योजना को क्रियानवित करनेवाले प्राधिकरण को भंग कर दिया है। इसे भंग करने के कई कारण बताए जा रहे हैं। एक तो बलूचिस्तान में से इस गलियारे की लंबाई 870 किमी है, जो कि सबसे ज्यादा है। बलूच लोग इसके बिल्कुल खिलाफ हैं। उन्होंने दर्जनों चीनी कामगारों को मार डाला है। दूसरा, इसने बहुत वक्त खींच लिया है। इसके कई काम अधूरे पड़े हुए हैं। तीसरा कारण यह भी है कि पाकिस्तान अपने हिस्से का पैसा लगाने में बेहद हीले-हवाले कर रहा है। उसने 2000 मेगावाट के बिजलीघर में लगने वाले 30 हजार करोड़ रु. का भुगतान चीनी कंपनी को नहीं किया है। इसी तरह शिनच्यांग से ग्वादर तक रेलवे लाइन डालने का 55 हजार करोड़ रु. की प्रायोजना भी खटाई में पड़ गई है। पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति इतनी खराब है कि वह कई अंतरराष्ट्रीय संगठनों और मालदार मुस्लिम राष्ट्रों के आगे अपनी झोली फैलाने के लिए मजबूर है। ऐसी स्थिति में वह चीन से अगर विमुख होता है तो उसके पास अमेरिका की शरण में जाने के अलावा कोई चारा नहीं है। इस वक्त तो रूस और चीन दोनों की ही दाल पतली हो रही है। एक की यूक्रेन के कारण और दूसरे की कोरोना के कारण ! अमेरिका तो पाकिस्तान का सबसे बड़ा मददगार रहा है। यदि शाहबाज शरीफ थोड़ी हिम्मत दिखाएं और नई पहल करें तो पाकिस्तान का उद्धार हो सकता है। यदि अमेरिका से उसके संबंध बेहतर होंगे तो भारत के साथ वे अपने आप सुधरेंगे। अमेरिका इस वक्त चीन से बेहद खफा है। उसके इस्पाती दोस्त पाकिस्तान को वह अपनी हथेली पर उठा लेगा। शाहबाज चाहें तो भारत के साथ बंद हुए सभी रास्तों को खोलने की भी कोशिश कर सकते हैं। अमेरिका अपने आप उसके लिए अपनी भुजाएं फैला देगा।

सेहत मंत्र

फिट रहने के चक्कर में कहीं ओवर एक्सरसाइज बना ना दे आपको बीमार

पिछले कुछ समय से लोग अपनी फिटनेस को लेकर कुछ अधिक ही सजग हो गए हैं। अब वह अपने शरीर का ख्याल रखने के लिए खान-पान के साथ-साथ एक्सरसाइज पर भी उतना ही ध्यान देते हैं। यह सच है कि अपने शरीर का ख्याल रखने के लिए एक्सरसाइज करना आवश्यक है। लेकिन आप फिटनेस के चक्कर में खुद की सेहत के साथ ही खिलवाड़ ना कर लें, इस बात का आपको विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए। मसलन, अगर आप जरूरत से ज्यादा एक्सरसाइज करते हैं, तो यह आपके लिए परेशानी का सबब बन सकता है। जब आप ओवर एक्सरसाइज करती हैं या फिर बहुत अधिक हार्ड ट्रेनिंग करती हैं, तो आपके पीरियड्स मिस हो सकते हैं। इस स्थिति को एमेनोरिया कहा जाता है। यह एस्ट्रोजन के स्तर में गिरावट के कारण होता है जिससे ऑस्टियोपोरोसिस भी हो सकता है। इसलिए ट्रेनिंग करें, लेकिन सोच समझकर। बहुत अधिक एक्सरसाइज आपके शरीर के जोड़ों के लिए परेशानी भरा हो सकता है। दरअसल, जब आप पूरे सप्ताह बार-बार बहुत अधिक वजन उठाती हैं, तो इससे अक्सर जोड़ों में चोट लग जाती है। यकीनन आप ऐसा बिल्कुल भी नहीं चाहेंगे। इसलिए हमेशा एक्सपर्ट की देख-रेख में ही एक्सरसाइज करें। जब आप आवश्यकता से अधिक वर्कआउट करते हैं, तो इसका विपरीत प्रभाव आपके स्लीप साइकल पर पड़ता है। आवश्यकता से अधिक व्यायाम करने पर आप थक तो बहुत जाते हैं लेकिन फिर भी आपको नींद आने में समस्या होती है। इतना ही नहीं, थकान व नींद की कमी के चलते आपको अन्य कई तरह की स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको शायद जानकर हैरानी हो, लेकिन आवश्यकता से अधिक व्यायाम आपके हृदय के लिए भी सही नही है। जो लोग ओवर एक्सरसाइज करते हैं। खासतौर से, उच्च तीव्रता वाले व्यायाम करने से हृदय रोगियों को दिल का दौरा या स्ट्रोक से मृत्यु का उच्च जोखिम होता है।

धर्म मंत्र

अक्षय तृतीया पर सालों बाद बन रहा है दुर्लभ संयोग

वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को अक्षय तृतीया का पर्व मनाया जाता है। इस तिथि को साल भर में पड़े अबूझ मुहूर्तों में से एक मानी जाती है। बता दें कि अक्षय तृतीया एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है- अक्षय यानी सुख, सफलता, आनंद की कभी कमी न हो और तृतीया यानी तीन। अक्षय तृतीया के दिन मांगलिक काम करना काफी शुभ माना जाता है। इसके अलावा इस दिन वाहन, प्रॉपर्टी आदि के अलावा सोना खरीदना काफी शुभ माना जाता है। सोने का खरीदना का अर्थ है कि आने वाला पूरा साल धन और सौभाग्य की प्राप्ति हो। इस साल अक्षय तृतीया पर काफी खास संयोग बन रहा है। जो करीब पांच दशक बाद बन रहा है। दरअसल, इस बार अक्षय तृतीया के दिन रोहिणी नक्षत्र के साथ शोभन योग भी बन रहा है। इसके साथ ही अक्षय तृतीया मंगलवार के दिन होने के कारण रोहिणी योग का निर्माण कर रहा है। इसके अलावा चंद्रमा और सूर्य उच्च राशि में विराजमान है। जहां चंद्रमा अपनी उच्च राशि वृषभ में होंगे और वहीं शुक्र अपनी उच्च राशि मीन राशि में होंगे। इतना ही नहीं गुरु अपनी स्वराशि मीन में और शनि अनी स्वराशि कुंभ में होंगे। ऐसे दुर्लभ संयोग करीब 50 साल बाद हो रहे है। यह संयोग काफी मंगलकारी माना जा रहा है। आज के दिन सभी कामों से निवृत्त होकर स्नान आदि कर लें। इसके बाद भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी का ध्यान करें। इसके साथ ही दोनों की विधि-विधान से पूजा करें। इसके लिए एक चौकी पीले या लाल रंग का वस्त्र बिछाकर माता लक्ष्मी और भगवान विष्णु की प्रतिमा स्थापित करें।

पर्यटन

ओडिशा में मौजूद हैं खूबसूरत झीलें पर्यटकों के लिए घूमने के लिए बहुत कुछ

ओडिशा टूरिस्ट के लिए किसी स्वर्ग से कम नहीं है। भव्य मंदिरों, संग्रहालयों और मठ, समुद्र तट, जंगल और हरी?भरी पहाड़ियों के अलावा यहां पर कुछ बेहतरीन झीलें है। ओडिशा की झीलें प्राकृतिक और मानव निमित दोनों हैं और स्थानीय और पर्यटकों दोनों के लिए दर्शनीय स्थल हैं। चिल्का झील सबसे बड़ी और ओडिशा की सबसे लोकप्रिय झीलों में से एक है। भारत में सबसे बड़ी खारे पानी की झील है और दुनिया में दूसरी सबसे बड़ी है। हर तरफ हरे भरे जंगलों से घिरा, चिल्का झील पर्यटकों को बर्ड वॉचिंग, पिकनिक, बोटिंग और मछली पकड़ने के लिए बेहतरीन है। चिल्का झील झील की यात्रा के लिए नवंबर से मार्च सही समय है क्योंकि साइबेरिया से बहुत से प्रवासी पक्षी यहां आते हैं। महानदी नदी के किनारे पर स्थित है और सारनदा हिल्स और बिष्णुपुर हिल्स से घिरा हुआ है, अंसुपा झील में अपार प्राकृतिक सुंदरता और विदेशी वनस्पति और जीव हैं। यह तैरते, जलमग्न और उभरते हुए जलीय पौधों और कई जलीय जीवों का घर है। यह झील न केवल वनस्पति विज्ञानियों और प्राणीविदों को आकर्षित करती है, बल्कि इसकी समृद्ध जैव विविधता भी बेहद लोकप्रिय है। आप यहां पर एक बस झील के किनारे बैठकर, शांत वातावरण का आनंद ले सकता है। छतरपुर शहर के पास स्थित, पाटा झील ओडिशा में मीठे पानी की झीलों में से एक है, जो साल भर पर्यटकों द्वारा घूमती है। खूबसूरत परिवेश से लेकर अपनी स्फूर्तिदायक ताजगी के लिए, पाटा झील काफी सुंदर जगह है और स्थानीय लोगों और पर्यटकों के लिए एक लोकप्रिय पिकनिक स्थल है। यदि आप भुवनेश्वर में हैं, तो कांजिया झील को अपनी सूची में जरूर रखें। शहर के बाहरी इलाके में स्थित, यह झील 66 हेक्टेयर क्षेत्र में फैली हुई है और इसे प्रमुख जल स्रोत माना जाता है। वनस्पतियों और जीवों की समृद्ध जैव विविधता इसे ओडिशा की एक महत्वपूर्ण झील बनाती है।

फरियादियों की शिकायतों का निस्तारण सत-प्रतिशत हो : मनोज

अपर पुलिस अधीक्षक ने किया कोतवाली हैदरगढ़ का निरीक्षण

कैनविज टाइम्स संवाददाता

हैदरगढ़ बाराबंकी । लम्बित पड़ी विवेचनाओं का निस्तारण जल्द से जल्द करें , थाने पर आए हुए फरियादियों की शिकायतों का निस्तारण सत प्रतिशत करने के साथ-साथ उसका संपूर्ण विवरण रजिस्टर पर अंकित करें उसके बाद वह पुलिस कार्रवाही से संतुष्ट है या नही इस बारे दूरभाष से जरूर जानकारी ले उक्त बात अपर पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार पांडेय द्वारा थाना कोतवाली हैदर गढ़ के औचक निरीक्षण के दौरान कहीं । इसके अलावा प्रभारी निरीक्षक बृजेश कुमार वर्मा को भी उचित दिशा निर्देश दिए । औचक निरीक्षण दौरान उन्होंने शस्त्रागार साफ सफाई रजिस्टर के रखरखाव को देखा एवं उचित दिशा निर्देश दिए प्राप्त जानकारी के अनुसार अपर पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार पांडे दोपहर 2:00 बजे के आसपास कोतवाली हैदर गढ़ पहुंचे जहां उन्होंने साफ सफाई देखी तो प्रत्येक पुलिसकर्मी द्वारा थाना परिसर में वृक्षारोपण करने को कहा इसके बाद विवेचना के संबंध में उप निरीक्षक गणों को उचित दिशा निर्देश दिए । उन्होंने थाने पे लंबे समय से खड़े वाहनों की नीलामी कराये जाने के सम्बंध में भी एसएचओ को निर्देशित किया । इस दौरान मुख्य रूप से प्रभारी निरीक्षक बृजेश कुमार वर्मा वरिष्ठ उप निरीक्षक धनीराम वर्मा कस्बा चौकी इंचार्ज संतोष कुमार राय कन्हैया कुमार यादव राधेश्याम यादव पूनम पटेल अजय पाल सिंह योगेंद्र सिंह वीरेंद्र पाल आदि मुख्य रूप से मौजूद रहे ।

आत्मनिर्भर भारत मिशन से प्रेरित होकर कृषि के क्षेत्र में किस्मत आजमा रहे हैं अनुदेशक आशीष सिंह

कैनविज टाइम्स संवाददाता

हैदरगढ़ बाराबंकी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत मिशन से प्रेरित होकर क्षेत्र के एक शिक्षक पुत्र ने खेती से आत्मनिर्भर बनने का रास्ता निकाला है।जोंधी गांव के शिक्षक माता पल्टन सिंह के पुत्र आशीष सिंह ने परंपरागत खेती को छोड़कर कृषि के क्षेत्र में नवीन प्रयास कर रहे हैं। बेसिक शिक्षा विभाग में कृषि अनुदेशक के पद पर कार्यरत आशीष सिंह ने अपने शिक्षक साथी दिलीप वर्मा जो स्वयं एक अच्छे किसान है से प्रेरित होकर 2 बीघे खेत में तरबूज की रोपाई की।कृषि स्नातक की पढ़ाई से जो सीखा उसका प्रयोग उन्होंने अपने खेतों में शुरू किया है।आशीष कहते हैं कि पिछले नौ वर्षों से बहुत ही अल्प मानदेय पर अनुदेशक के पद पर कार्यरत हूँ लेकिन इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी सरकार ने हम अनुदेशकों की सुध नही ली जबकि हम सरकार से लगातार अनुदेशकों के भविष्य को सुरक्षित करने की गुहार लगाते रहे हैं कब तक सरकार से उम्मीद लगाए जाएं फिर मैंने अपनी शिक्षा का प्रयोग खेतों में करने का फैसला किया और एक छोटी सी शुरुवात की है। इस बार दो बीघे खेत में तरबूज की बुवाई की है अभी तक 70 से 80 हजार रुपये के तरबूज की बिक्री हो चुकी है और फसल खेत में है बिक्री हो रही है। आशीष सिंह ने तरबूज की बुवाई बेड तकनीक से की है बेड बनाकर उसपर मल्चिंग डालकर तरबूज के बीजों की बुवाई की गई है।उन्होंने बताया की बेड तकनीक से तरबूज की खेती करने से खरपतवार निकालने का खर्च बच जाता है। तरबूज की बुवाई से पहले खेत में ट्रैक्टर की मदद से बेड बनाए जाते हैं और इसके बाद इसमें मल्चिंग

❐ मुनाफ़े का सौदा साबित हुई तरबूज की खेती

बिछाई जाती है और फिर बीजों की बुवाई की जाती है। मल्चिंग के प्रयोग से कीड़ों और खरपतवार से बचा जा सकता है और पैदावार अच्छी होती है। तरबूज की फसल से किसान अन्य फसलों की तुलना में अधिक मुनाफा कमा सकते हैं।सरकार किसानों के लिए अच्छा प्रयास कर रही है लेकिन मंडियों में फसलों के उचित मूल्य की व्यवस्था की जाए जिससे किसानों को अपनी फसल औने पौने भाव ना बेचनी पड़े और सरकार यह भी ध्यान रखें की मंडी के थोक भाव और फुटकर भाव में ज्यादा अंतर ना हो इसके साथ ही सरकार द्वारा कृषि के संबंध में आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों को केवल कुछ किसानों तक ही सीमित न रखा जाए साथ ही साथ विभिन्न अनुदानों में नवीन किसानों को भी जोड़ा जाए जिससे इसका लाभ ज्यादा किसानों को मिल सके।

भाई की निर्मम हत्या करने वाला छोटा भाई गिरफ्तार, भेजा जेल

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी । पेड़ काटने के विवाद को लेकर अपने सगे भाई की हत्या कारित वाले हत्याभियुक्त को थाना देवा पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया साथ ही आलाकत्ल बरामद करते हुए उसे न्यायलय में पेश किया गया जहाँ से उसे जेल भेज दिया गया । बताते चले कि अर्जुन गौतम पुत्र स्व0 कन्धई लाल गौतम निवासी हुसैनमऊ थाना देवा जनपद बाराबंकी ने अपने छोटे पुत्र द्वारा बड़े पुत्र की हत्या करने के सम्बन्ध में थाना देवा पर तहरीर देकर मुकदमा पंजीकृत कराया। उक्त घटना से सम्बन्धित अभियुक्त की गिरफ्तारी के आदेश पर थाना देवा पुलिस टीम द्वारा अभियुक्त राजेन्द्र गौतम पुत्र अर्जुन गौतम निवासी ग्राम हुसैनामऊ थाना देवा जनपद बाराबंकी को गिरफ्तार किया गया। अभियुक्त के निशांदेही पर दो अदद आलाकत्ल हंसिया व डण्डा बरामद किया गया। अभियुक्त ने पूछताछ में बताया दोपहर में मैं घर के आंगन में लगे जामुन के पेड़ की छटाई कर रहा था तभी मेरा बड़ा भाई(मृतक) नौमीलाल आया और पेड़ की छटाई करने से मना करने लगा। इसी बात को लेकर हम दोनो में कहा-सुनी हो गयी थी और आवेश में आकर मैंने अपने भाई पर हंसिया से वार कर दिया था जिससे उसकी मृत्यु हो गयी ।

उपजिलाधिकारी ने गेहूं खरीद केन्द्रों का किया मुआयना, पेट्रोल-पम्प भी जाँचा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी।नवागत उपजिलाधिकारी हैदरगढ़ की कार्यशैली की एक झलक सोमवार को देखने को मिली।जब उन्होंने पेट्रोल पंप और गेहूँ खरीद केन्द्रों का अचानक मुआयना किया । उपजिलाधिकारी ने गल्ला मण्डी स्थित तीनों गेहूँ खरीद केन्द्र पर सोमवार को व्यवस्थाओं का जायजा लिया।खरीद केन्द्रों पर किसानों के बैठने और पीने के लिए स्वच्छ जल की व्यवस्था सुनिश्चित करने के केन्द्र प्रभारियों को उचित दिशानिर्देश दिए।साथ ही गाँव गाँव जाकर किसानों और ग्राम प्रधानों से सम्पर्क कर उन्हें खरीद केन्द्रों पर गेहूं बेचने के लिए प्रेरित करने की बात भी उपजिलाधिकारी ने केन्द्र प्रभारियों से कही। सोमवार को ही उपजिलाधिकारी ने हैदरगढ़ टाउन स्थित अग्रवाल पेट्रोल पंप की भी जाँच की।इस मौके पर खाद्य निरीक्षक हैदरगढ़ संजय कुमार भी उनके साथ उपस्थित रहे।

सीएचसी पर मिशन इंद्रधनुष कार्यक्रम का हुआ शुभारंभ

कैनविज टाइम्स संवाददाता

रामसनेहीघाट बाराबंकी। मिशन इंद्रधनुष का उद्घाटन कोविड-19 की चौथी लहर का मार्क ड्रिल करने अपनी टीम के साथ सीएचसी पहुंचे मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने गंभीर अवस्था में नवजात शिशु का इलाज किया। सामान्य होने पर इलाज के लिए जिला अस्पताल भेज दिया। सोमवार को मुख्य चिकित्सा अधिकारी बाराबंकी राम जी वर्मा जूनियर डायरेक्टर डॉ सोमेंद्र अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ राजीव कुमार अपनी टीम के साथ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सिद्धौर पर मिशन इंद्रधनुष कार्यक्रम का उद्घाटन करने कथा कोविड-19 की चौथी लहर से बचाव के लिए मार्क ड्रिल करने पहुंचे। जहां एक महिला द्वारा बच्चे को जन्म दिया गया। लेकिन बच्चे की हालत गंभीर होने पर सीएससी अधीक्षक डॉ हरप्रीत सिंह के साथ जिले से आए उक्त गांवों में नवजात शिशु का इलाज किया इलाज के दौरान स्थिति सामान्य होने पर नवजात शिशु को इलाज के लिए जिला अस्पताल भिजवा दिया। इसके बाद मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर राम जी वर्मा बीपीएम दिवाकर वर्मा क्षेत्र के देवकली गांव में चल रहे मिशन इंद्रधनुष टीकाकरण का निरीक्षण करने पहुंचे जहां हुए मिशन इंद्रधनुष कार्यक्रम से संतुष्ट दिखे।

ईद का त्यौहार आज, दो वर्ष बाद धूमधाम से मनाई जाएगी ईद

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी। रमजान उल मुबारक के तीस रोज़े रखने के बाद ईद उल फितर का पर्व मनाया जाता है। अल्लाह ताला ने रोजेदारों के 30 रोजे रखने की खुसी में ईद का नायाब तोहफा रोज़ेदारों को ईनाम में दिया है। ईद उल फितर का त्यौहार खुशी के रूप में मनाया जाता है। इस दिन लोग ईदगाह में जमा होकर एक साथ नमाज पढ़ते हैं। और मुल्क के आपसी भाईचारे के साथ खुशहाली के लिए दुआ करते हैं। सारे गिले शिकवे मिटाकर एक दूसरे को ईद की मुबारकबाद देते हैं। ईद के पहले ज़कात और फितरा भी गरीबों की मदद के लिए दिया जाता है। जिससे कोई भी गरीब और परेशान ईद की खुशियां मनाने छूट न जाए। इसलिए अल्लाह ने ज़कात और फितरे के पैसों से मिस्कीन और गरीबों की मदद का इंतजाम बना दिया है। जो मुसलमान ज़कात और फितरा देने के लायक उस पर देना फ़र्ज़ भी है। दो साल से कोरोना महामारी के कारण ईदगाह में नमाज़ नही हुई थी। लेकिन इस बार बहुत खुशी के साथ लोग ईद का पर्व मना रहे हैं। चांद नज़र आगया ईद मुबारक की सदा सब तरफ गूंज रही है। सारे गिले-शिकवे मिटाकर एक दूसरे को ईद की बधाई देना ईद की एक खास पहचान है। पूरे जिले भर में ईद उल फितर का त्योहार आज बड़ी अकीदत व हेतराम के साथ मनाया जाएगा। सुबह 7 बजे से लेकर 9 बजे तक जिले की विभिन्न ईदगाह में ईद उल फितर की नमाज अदा की जाएगी। रमजान उल मुबारक के तीस रोजे रखने की खुशी में अल्लाह ताला अपने रोज़ेदार बन्दों के ईद जैसा खुशियों का तोहफ़े दिया है। ईद के दिन जायज जगह पर पैसे खर्च करने पर अल्लाह खुश होता है। ईद उल फितर का त्योहार बाराबंकी शहर के साथ ज़ैदपुर, फतेहपुर, कुर्सी, देवां शरीफ, बकी, मसौली, रामनगर, दरियाबाद, सिद्धौर, कोठी, सतरिख, हैदरगढ़, टिकैतनगर, सिरौलीगौसपुर, सुमेरगंज, सफदरगंज, सूरतगंज, रामपुर, सआदतगंज, सुबेहा, असन्द्रा, अलियाबाद सहित पूरे जिले भर की ईदगाह व मस्जिदों पर तय समय पर ईद उल फितर की नमाज़ अदा की जएगी। ईद की नमाज़ के लिए जिले भर की ईदगाहों की सफाई व्यवस्था को पूरा कर लिया गया था। दो साल तक कोरोना महामारी के चलते ईदगाह पर ईद की नमाज़ नही हो पाई थी। लेकिन इस बार तीसरे साल ईद उल फितर की नमाज़ सभी ईदगाह के साथ मस्जिदों में पढ़ी जाएगी। कस्बा ज़ैदपुर के मोहल्ला बड़ापुरा में स्थित पुरानी ईदगाह पर सुबह साढ़े सात बजे व थाना चौराहा की बड़ी ईदगाह पर सुबह 8 बजे ईद उल फितर की नमाज़ अदा की जएगी। नगर पंचायत चुनाव में अध्यक्षी पद के उम्मीदवारों की होर्डिंग भी ईद की मुबारकबाद देने के लिए ईद मैदान के आसपास खूब लगी हुई हैं। जिससे इसी वर्ष नवबंर माह में होने वाले चुनाव में पहचान बन जाए।

सरकारी धन का बेजा इस्तेमाल निजी लाभ के लिए मैरिज लान में लगवाई गई इंटरलॉकिंग

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी । विकासखंड देवा की ग्राम पंचायत भटेहटा में बने साईं मंडप (मैरिज लान) के अगल-बगल बिना किसी औचित्य के क्षेत्र पंचायत निधि से लगवाई गई इंटरलॉकिंग जिसका आम जनमानस से कोई जुड़ाव नहीं। सरकारी धन के साथ खिलवाड़ करने का खेल देवा ब्लॉक में बंद होने का नाम ही नहीं ले रहा। मालूम हो कि विकासखंड देवा में क्षेत्र पंचायत निधि से 390819 की लागत से साईं मंडप (मैरिज लान) के अगल-बगल एक इंटरलॉकिंग लगाई गई इस इंटरलॉकिंग से आम जनमानस का कोई वास्ता नहीं है।यह इंटरलॉकिंग किसी भी ग्रामसभा को, किसी भी घर को, किसी भी गांव को नहीं जोड़ती है। इस इंटरलॉकिंग को केवल व्यक्ति विशेष के फायदे के लिए लगाया गया है। इस इंटरलॉकिंग को लगवाने में लाखों रुपए खर्च कर सरकारी धन का दुरुपयोग किया गया है। यह इंटरलॉकिंग भी अपनी किस्मत का रोना रो रही है और जिले के उच्च अधिकारियों से सवाल पूछ रही हैं कि हमारे नाम पर लाखों रुपए सरकारी खजाने से निकाल कर इस सरकारी धन का दुरुपयोग किया गया जिसका आम जनमानस को कोई

विकास खण्ड के देवा ब्लाक में क्षेत्र पंचायत निधि का हो रहा गलत इस्तेमाल

फायदा लाभ नहीं तो ऐसी इंटरलॉकिंग लगवाने से क्या फायदा जहां पर लोग निकल ना सके। इस संबंध में जब साईं मंडप के मालिक विपिन सिंह से बात की गई तो उन्होंने बताया कि यह इंटरलॉकिंग किसने लगाई है हमको इसका पता नहीं है परंतु हमने नहीं लगवाई है हमने अपने दीवाल के बगल में फूल के पौधे वा पेड़ लगाए थे। जिनकी सुरक्षा के लिए खम्भा गाड़ कर तार बांध दिए थे आप बताएं तो खम्भा वा तार खोलवा लेते हैं। इसकी पुष्टि के लिए जब खंड विकास अधिकारी देवा राम आसरे वर्मा से बात की गई तो उन्होंने बताया कि आरटीआई डालकर लिखित में आप मांगे तो हम उसका जवाब दें।

बैंक आफ इंडिया के सीईओ ने दिव्यांग नागेश को किया सम्मानित, दिव्यांगों को दिया उपकरण

बाराबंकी । आरसेटी बाराबंकी में स्थित निकट ममता गर्ल्स डिग्री कॉलेज असेनी रोड बाईपास बाराबंकी लखनऊ में आयोजित कार्यक्रम में वंशगोपाल राष्ट्रीय पुनर्वास ट्रस्ट के राष्ट्रीय अध्यक्ष दिव्यांग नागेश कुमार पटेल को बैंक आफ इंडिया स्मृति चिन्ह प्रदान कर सीईओ अतनु कुमार दास ने दिव्यांगता के क्षेत्र में कार्य कर रहे नागेश पटेल के कार्यों को सराहा और कहा कि समाज में आज के समय पटेल जैसे लोगों की कमी है हम सब प्रयास करें के पटेल के जैसे कार्यों को सभी निस्वार्थ भाव से करके समाज को एक दिशा प्रदान करें इस कार्यक्रम के अंतर्गत अतनु कुमार दास ने आर सेटी में चल रहे प्रशिक्षण ट्रेड कंप्यूटर, ब्यूटीशियन तथा सिलाई प्रशिक्षण को पूर्ण करने वाली छात्राओं को सिलाई मशीन तथा दो दिव्यांगजनों को ट्राई साइकिल और तीन दिव्यांगजनों हीयरिंग ऐड मशीन बैंक आफ इंडिया के सीएसआर फंड से प्रदान किया।यह कार्यक्रम ग्राहक जनसंपर्क के अंतर्गत बौद्ध शोध एवम रिसर्च भवन में संपूर्ण किया गया। इस कार्यक्रम में महाप्रबंधक अशोक कुमार पाठक, नितिन देशपांडे जोनल प्रबंधक मंगेश कदम प्रमुख रहे। आरसेटी निदेशक विवेक कुमार तथा रहमान अंसारी के द्वारा कार्यक्रम की बेहतर व्यवस्था रही साथ दास ने बताया कि बाराबंकी आरसेटी प्रदेश प्रथम स्थान पर हैं। बाराबंकी आरसेटी ऐसे ही उच्च स्तर पर कार्य करती रहें।अंत एक बार फिर समाजसेवी दिव्यांग नागेश पटेल के कार्यों को जनहित में बेहतर बताया।

एसडीएम ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का किया औचक निरीक्षण

रामनगर बाराबंकी । सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रामनगर का उप जिला अधिकारी तान्या ने सोमवार को लगभग 3:45 पर किया औचक निरीक्षण। जिसमें उन्होंने लैब व मशीनों में सी बी सी, केएफटी, लिवर फेंस टेस्ट मशीनों द्वारा जांच ना होने की जानकारी ली तो उन्हें बताया गया की रीजेंट ना होने के कारण जांच बाधित हो रही है कई बार डिमांड भी भेजा जा चुका है लेकिन अभी तक रीजेंट उपलब्ध नहीं हुआ है इसके साथ ही उप जिला अधिकारी में औषधि वितरण रजिस्टर ओ पी डी रात्रि में कितने मरीज आये तथा प्रसव कक्ष का निरीक्षण किया जहां पर मौजूद स्टाफ नर्स सविता यादव के द्वारा उन्हें प्रसव कक्ष का निरीक्षण करवाया जाकर प्रसव कक्ष की साफ सफाई व्यवस्था को देख एसडीएम संतुष्ट दिखी व अस्पताल परिसर में उचित साफ-सफाई ना होने के कारण स्वच्छता को लेकर सख्त निर्देश भी दिए। इस मौके पर डॉ आशीष सिंह डॉ ज्ञानेंद्र भारती स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी नीरज वर्मा एक्स-रे टेक्नीशियन एसएस वर्मा समीर अहमद रामानुज सिंह वार्ड बॉय राजू सहित समस्त सुपरवाइजर उपस्थित रहे।

बाराबंकी का छाया चौराहा बना प्रचार का अड्डा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी । शहर का हृदय कहा जाने वाला छाया चौराहा वर्तमान में विभिन्न क्षेत्रों से सम्बंधित विज्ञापनों का केंद्र बना हुआ है। चौराहे पर लगी महापुरुषों की मूर्तियां प्रचार सा करतीं नजर आती हैं।केवल कोई एक ही क्षेत्र ही नही बल्कि शैक्षणिक, राजनीति, तथा अन्य व्यवसायिक प्रतिष्ठानो ने महापुरुषों के छाया स्थित स्मारक को गंदगी का अड्डा मात्र बना दिया है। जंहा एक ओर केंद्र,राज्य सरकारों द्वारा स्वछता की अलख जगाई जा रही है वन्ही दूसरी ओर ये प्रतिष्ठान इस पर पानी फ़ेरने पर तुले हैं।बताते चले कि विभिन मुहल्लों के घरों की दीवारों पर रात ही रात विज्ञापन के बड़े बड़े पन्ने चिपक जाते हैं।ऐसा प्रचार करवाने वाले प्रतिष्ठान रात्रि में अधिकतर बाल श्रम करवातें हैं।देश के भावी कर्णधार मात्र कुछ पैसों के लिए ये कार्य करतें हैं,परन्तु ये सब प्रशासन के नाक नीचे हो रहा है।परंतु कार्यवाही शून्य। बीच शहर में चल रहे इस गन्दगी अभियान में शामिल व्यक्तियों या संस्थानों के विरुद्ध अभी तक कोई कार्यवाही नही की गई।शहर के सम्मानित व्यक्तियों से बात करने पर उन्होंने इसे शासन की लापरवाही और और समाज की अनदेखी कहा।नगर पालिका के अधिशासी अभियंता से बात करने पर कोई संतोषजनक जवाब नही मिला।

सिर्फ तंदरुस्त जीवन ही नहीं अनुशासन का पाठ भी पढ़ाता खेल : रंजीत श्रीवास्तव

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी। खेल हमें तंदरुस्त जीवन ही प्रदान नहीं करते बल्कि अनुशासन तथा सहनशीलता का पाठ भी पढ़ाते हैं। इसलिए बच्चों को किसी ना किसी खेल को जरूर अपनाना चाहिए। यह बात के.डी सिंह बाबू की जन्मशती पर प्रत्येक माह आयोजित होने वाले कार्यशाला के मुख्य अतिथि नगर पालिका परिषद के सदस्य देवेंद्र प्रताप सिंह ज्ञानू ने कही। सोमवार को नगर के गांधी भवन में आयोजित कार्यशाला में नगर पालिका परिषद के पूर्व चेयरमैन रंजीत बहादुर श्रीवास्तव को आना था। लेकिन स्वाथ्य खराब होने के कारण उन्होंने अपने प्रतिनिधि सभासद देवेंद्र प्रताप सिंह को भेजकर खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाया। इस दौरान श्री ज्ञानू ने पुलिस लाइन चौराहा स्थित के.डी सिंह बाबू की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। वहीं गांधी भवन में आयोजित कार्यशाला में उन्होंने कहा कि के.डी सिंह बाबू में खेल की प्रतिभा के साथ साथ अनुशासन का एक लंबा अध्याय भी था। वह हॉकी ही नहीं बल्कि क्रिकेट, बैडमिंटन सहित अन्य खेलों के महान खिलाड़ी थे। उन्होंने खेल के जरिए बाराबंकी का नाम विश्व पटल पर रोशन किया। श्री ज्ञानू ने कहा कि नगर पालिका के.डी सिंह बाबू की जन्मशती पर उनके आवास की ओर जाने वाले मार्ग का सुंदरीकरण कराएगी। उन्होंने कहा कि पुलिस लाइन स्थित के.डी सिंह बाबू की प्रतिमा पर उनका जीवन वृत और उपलब्धियों का शिलापट लगवाया जाएगा साथ ही एक हाई मास्क लाइट भी लगवाई जाएगी। इस मौके पर मुख्य रूप से महात्मा गांधी स्पोर्टस क्लब के अध्यक्ष सलाउद्दीन किदवई, संरक्षक राजनाथ शर्मा, विनय कुमार सिंह, धनंजय शर्मा, मजीब अहमद, विजय अवस्थी, अनिल गुप्ता, अजीज अहमद, पाटेश्वरी प्रसाद, निसार अहमद, डॉ विक्रम सिंह, आर्यन, अखलाक अंसारी, मो समद, अयाज़ अंसारी, महफूज अंसारी, दीपक, तौसीफ अहमद आदि लोग मौजूद रहे।

पंजाब के खिलाफ प्लेऑफ में जगह पक्की करने उतरेगा गुजरात

एजेंसी

नवी मुंबई। विपरीत परिस्थितियों में वापसी करने वाली गुजरात टाइटन्स की टीम इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में मंगलवार को जब पंजाब किंग्स का सामना करेगी तो उसकी निगाह प्लेऑफ में अपनी जगह पक्की करने पर रहेगी। पहली बार आईपीएल में भाग ले रही गुजरात की टीम को अब तक हराना आसान नहीं रहा है। उसने नौ में से आठ मैच जीते हैं और लगातार छठी जीत दर्ज करने से वह प्लेऑफ में जगह बनाने वाली पहली टीम बन जाएगी। गुजरात के इस शानदार प्रदर्शन का कारण विपरीत परिस्थितियों में भी दमदार वापसी करना है। राहुल तेवतिया, डेविड मिलर, राशिद खान हों या कप्तान हार्दिक पंड्या, इन सभी ने अब तक टूर्नामेंट में मैच विजेता प्रदर्शन किया है। यदि कोई एक खिलाड़ी नाकाम हो जाता है तो दूसरा बखूबी जिम्मेदारी निभाता है। हार्दिक ने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर (आरसीबी) के खिलाफ जीत के बाद कहा था, ''यह इस टीम की खूबसूरती है कि खिलाड़ियों ने दिखाया है कि वे मुश्किल परिस्थितियों में भी क्या कर सकते हैं। हमने ऐसा करने के लिये हमेशा उनका हौसला बढ़ाया। पिछली बार जब गुजरात और पंजाब का सामना हुआ था तो तेवतिया ने आखिरी दो गेंदों पर छक्के लगाकर अपनी टीम को जीत दिलायी थी। पंजाब अब अनुकूल परिणाम की उम्मीद कर रहा होगा। इसके अलावा वह नहीं चाहेगा कि मैच

पिछली बार की तरह अंतिम गेंद तक पहुंचे। पंजाब की टीम के प्रदर्शन में फिर से निरंतरता का अभाव रहा है तथा उसे अब तक नौ मैचों में से पांच में हार मिली है। उसके शीर्ष बल्लेबाज कप्तान मयंक अग्रवाल, जॉनी बेयरस्टो, शिखर धवन और लियाम लिविंगस्टोन ने टुकड़ों में अच्छा प्रदर्शन किया है। उन्हें अपने प्रदर्शन में निरंतरता लानी होगी। गेंदबाजी विभाग में तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह ने ही लगातार अच्छा प्रदर्शन किया है। पिछले मैच में उसके गेंदबाजों ने अच्छा खेल दिखाया था लेकिन बल्लेबाजों ने उसे निराश किया। गुजरात की टीम में विकेटकीपर ऋद्धिमान साहा ने मैथ्यू वेड की जगह अच्छी तरह से संभाली है। उनके सलामी जोड़ीदार शुभमन गिल ने अच्छी शुरुआत की थी लेकिन दाएं हाथ का यह बल्लेबाज हाल में रन बनाने के लिये जूझता हुआ नजर आया। वह निश्चित तौर पर फॉर्म में वापसी करने की कोशिश करेंगे। गुजरात के लिए बल्लेबाजी का मुख्य आधार हार्दिक रहे हैं। उन्होंने जिम्मेदारी भरी पारी खेली हैं। हार्दिक ने अब तक कुल 308 रन बनाये हैं और वह टूर्नामेंट में सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाजों में तीसरे नंबर पर हैं। मिलर और तेवतिया ने 'फिनिशर' की भूमिका शानदार ढंग से निभाई है। पिछले मैच में राशिद खान ने भी छक्के जड़ने के अपने कौशल का अच्छा नमूना पेश किया था। गुजरात के पास मजबूत गेंदबाजी आक्रमण है। जहां मोहम्मद शमी नयी गेंद से कहर बरपा सकते हैं, वहीं पंजाब के बल्लेबाजों को लॉकी फर्ग्यूसन की तेजी और विविधता से भी सतर्क रहना होगा। गुजरात प्रदीप सांगवान को भी टीम में बनाये रख सकता है जिन्होंने चार सत्र बाद अपने पहले आईपीएल मैच में शानदार प्रदर्शन किया था।

टीम इस प्रकार हैं :

गुजरात टाइटन्स : अभिनव मनोहर, डेविड मिलर, गुरकीरत सिंह, बी साई सुदर्शन, शुभमन गिल, हार्दिक पंड्या (कप्तान), राहुल तेवतिया, विजय शंकर, मैथ्यू वेड, रहमानुल्ला गुरबाज, ऋद्धिमान साहा, अल्जारी जोसेफ, दर्शन नालकांडे, डोमिनिक ड्रेक्स, जयंत यादव, लॉकी फर्ग्यूसन, मोहम्मद शमी, नूर अहमद, प्रदीप सांगवान, राशिद खान, रवि श्रीनिवासन साई किशोर, वरुण आरोन, यश दयाल।

पंजाब किंग्सः शिखर धवन, मयंक अग्रवाल, अर्शदीप सिंह, कगिसो रबाडा, जॉनी बेयरस्टो, राहुल चाहर, हरप्रीत बराड़, शाहरुख खान, प्रभसिमरन सिंह, जितेश शर्मा, ईशान पोरेल, लियाम लिविंगस्टोन, ओडियन स्मिथ, संदीप शर्मा, राज अंगद बावा, ऋषि धवन, प्रेरक मांकड़, वैभव अरोड़ा, ऋतिक चटर्जी, बलतेज ढांडा, अंश पटेल, नाथन एलिस, अथर्व ताएदे, भानुका राजपक्षे, बेनी हॉवेल।

मैक्सिको ओपन में संयुक्त 15वें स्थान पर रहे लाहिड़ी

पुअर्तो वालार्ता (मैक्सिको)। भारतीय गोल्फर अनिर्बान लाहिड़ी ने चौथे और अंतिम दौर में शानदार प्रदर्शन करके पांच अंडर 67 का स्कोर बनाया जिससे वह मैक्सिको ओपन गोल्फ टूर्नामेंट में संयुक्त 15वें स्थान पर रहे। लाहिड़ी तीसरे दौर के बाद अच्छी स्थिति में नहीं थे लेकिन अंतिम दौर में बेहतर प्रदर्शन से वह लगभग 20 पायदान ऊपर पहुंचने में सफल रहे। यह पिछली चार प्रतियोगिताओं में तीसरा अवसर है जबकि लाहिड़ी ने शीर्ष 15 में जगह बनायी। वह 'प्लेयर्स चैंपियनशिप' में दूसरे और टेक्सास ओपन में संयुक्त 13वें स्थान पर रहे थे। इस बीच जॉन रहम ने 2021 में यूएस ओपन जीतने के बाद पहला खिताब अपने नाम किया। उन्होंने आखिरी दौर में दो अंडर का स्कोर बनाया और उनका कुल स्कोर 17 अंडर रहा। लाहिड़ी ने पहले पांच 'होल' में पार स्कोर बनाया। इसके बाद उन्होंने छठे और नौवें 'होल' में बडी बनायी। उन्होंने अंतिम नौ 'होल' में भी अपना अच्छा प्रदर्शन जारी रखकर तीन बर्डी बनायी। उन्होंने इस बीच पार-चार वाले 15वें 'होल' में 35 फुट से 'पुट' लगाकर बर्डी जमायी। लाहिड़ी इस प्रदर्शन से फ़ेडएक्स कप तालिका में तीन पायदान ऊपर 55वें स्थान पर पहुंच गये हैं।

कप्तानी का दबाव ले रहे थे जडेजाः धोनी

एजेंसी

मुम्बई। चेन्नई सुपर किंग्स की कमान फिर से संभालने वाले महेंद्र सिंह धोनी का मानना है कि पूर्व कप्तान रवींद्र जडेजा पर कप्तानी का दबाव पड़ रहा था, जिससे उनका प्रदर्शन भी प्रभावित हो रहा था। सनराइज़र्स हैदराबाद को 13 रन से हराने के बाद ब्रॉडकास्टर से बात करते हुए धोनी ने कहा कि इस सीज़न में जडेजा को कप्तानी देने की योजना पहले से ही थी। हालांकि जब जडेजा ने कप्तानी छोड़ने का निर्णय लिया तो लोगों ने उनके निर्णय का पूरा सम्मान किया। धोनी ने कहा, ''जडेजा को पिछले सीज़न से ही पता था कि वह इस साल कप्तानी करने जा रहे हैं। पहले दो मैचों में मैं उनके सहायक की भूमिका में था

और फिर मैंने उनसे कहा कि वह अपने निर्णय ख़ुद लें। जब आप कप्तान बन जाते हो, तो कई चीज़ें आपके दिमाग़ को प्रभावित करती हैं। मुझे लगता है कि कप्तानी से उनकी तैयारी और प्रदर्शन प्रभावित हुआ। उन्होंने आगे कहा, ''एक खिलाड़ी से कप्तान बनना एक धीमी प्रक्रिया होती है। आपको मैच के महत्वपूर्ण क्षणों में अपनी ज़िम्मेदारी लेते हुए कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लेने होते हैं। जब आप कप्तान बन जाते हैं तो आपको अपने खेल के अलावा भी कई चीज़ों पर ध्यान देना होता है। धोनी को उम्मीद है कि अब जडेजा की फ़ॉर्म फिर से वापस आ सकेगी। उन्होंने कहा, ''जडेजा इतना दबाव ले रहे थे कि उनसे कैच छूटने लगे थे। अमूमन ऐसा नहीं होता है। इसके अलावा बाक़ी खिलाड़ी भी फ़ील्डिंग में ग़लतियां कर रहे थे। हमने इस सीज़न अब तक 17-18 कैच छोड़े हैं। लेकिन अब हमें उम्मीद है कि हम वापसी करेंगे।

कई उतार-चढ़ाव के बाद महान क्रिकेटर बनने की राह पर राहुल

एजेंसी

मुम्बई। यों तो क्रिकेट के तमाम खिलाड़ी आए दिन नए-नए रिकॉर्ड बनाकर सुर्खियों में बने रहते हैं, लेकिन एक-दो ही ऐसे होते हैं जो ना केवल अपने खेल से दिग्गजों को भी प्रभावित करते हैं बल्कि उनमें महान खिलाड़ी बनने का भी माद्दा होता है। अब केएल राहुल के रूप में भी भारत को एक ऐसा खिलाड़ी मिल गया है जिसमें लीजेंड बनने की खूबियां देखने को मिल रही हैं। कई उतार-चढ़ाव का सामना कर चुके राहुल का खेल लगातार निखरता जा रहा है और बतौर आईपीएल टीम के कप्तान की भूमिका में भी वह बेहतरीन प्रदर्शन कर रहे हैं। इस जीत के बाद उन्होंने मैदान पर खेल के दौरान के कुछ पलों को तस्वीरों के जरिये पेश करते हुए लिखा कि आगे (की लड़ाई)। केएल राहुल ने स्वदेशी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म कू ऐप पर अंग्रेजी और हिंदी पोस्ट करते हुए इस मैच की दो तस्वीरें शेयर करते हुए पहले फॉरवर्ड लिखा और फिर उसके आगे धनुष में लगा हुआ तीर वाला इमोजी लगाया। राहुल की इस पोस्ट पर कमेंट करते हुए अनामिका नामक एक यूजर ने अपने कू रिप्लाई में लिखा- गावस्कर, कपिल देव, सचिन तेंदुलकर, धोनी, कोहली और फिर राहुल३ खेल के लीजेंड्स जबकि विवेक सिंह नामक यूजर ने केएल राहुल की इस कू पोस्ट के जवाब में लिखा- प्रतिबंधित किए जाने से लेकर मुख्य खिलाड़ी तक है३ आप ने एक लंबी दूरी तय कर ली है३ आगे बढ़ते रहिए अश्वथ राव नाम के एक यूजर ने सोशल मीडिया ऐप के पर राहुल की पोस्ट के नीचे लिखा- लीजेंड बनने की राह पर३ महान विचारक३ शानदार प्रयास राहुल की कप्तानी वाली लखनऊ सुपर जाएंट्स टीम ने शुक्रवार को पंजाब किंग्स के खिलाफ खेले गए आईपीएल 2022 के मुकाबले में 20 रन से शानदार जीत दर्ज की और इस सीजन का छठा मुकाबला जीता। पहले खेलते हुए लखनऊ सुपर जाएंट्स की टीम ने 153 रन बनाए। लखनऊ द्वारा दिए गए 154 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी

पंजाब किंग्स इलेवन की टीम 20 ओवर में आठ विकेट खोकर 133 रन ही बना पाई और मुकाबला हार गई। वहीं, राहुल ने जीत के बावजूद अपनी बात सामने रखते हुए टीम की आलोचना करते हुए कहा कि हमनें बल्ले से बेवकूफी भरा खेल खेला। राहुल ने टीम के गेंदबाजों को जीत का श्रेय देते हुए कहा कि हमारे बैटिंग ऑर्डर में अनुभव है और हमें इसका पूरा फायदा उठाना चाहिए था। क्विंटन डिकॉक और दीपक हुडा के अलावा अगर बाकी के बल्लेबाज भी सोच समझकर बल्लेबाजी करते तो बड़े आराम से 180-190 का स्कोर खड़ा कर लेते। मैं टीम की बल्लेबाजी से निराश हूं। वहीं, राहुल की तारीफ करते हुए टीम इंडिया के पूर्व कप्तान और दिग्गज खिलाड़ी लिटिल मास्टर सुनील गावस्कर ने कहा कि आईपीएल में लखनऊ टीम के कप्तान ने अपने खेल से यह साबित कर दिया है कि कि तेजी से रन बनाने के लिए आपको नए तरह के शॉट ईजाद करने की जरूरत नहीं हैं। अगर आपके पास शॉट है, तो उसका सही चयन करें और उनके सभी शॉट के चयन बेहतरीन रहे हैं। वह शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि केएल राहुल की बल्लेबाजी में सबसे अच्छी बात यह है कि उनकी शैली में कुछ भी बनावटी नहीं है और वह जो भी शॉट खेलते हैं वह क्रिकेट का नेचुरल शॉट है। लखनऊ ने पंजाब को हराने के बाद दिल्ली कैपिटल्स को कल छह रन से हराया और इस जीत में राहुल ने 77 रनों की मैच विजयी पारी खेली। आईपीएल के इस सीजन में पहली बार शामिल हुई बिल्कुल नई टीम लखनऊ सुपर जाएंट्स ने अपने प्रदर्शन से सभी का ध्यान खींचा है और अब तक खेले गए 10 में सात मुकाबले अपने नाम किए हैं।

संक्षिप्त समाचार

बिजली की खपत अप्रैल में 13.6% बढ़कर 132.98 अरब यूनिट हुई

नई दिल्ली। बिजली मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक देश में बिजली की खपत अप्रैल में सालाना आधार पर 13.6 प्रतिशत बढ़कर 132.98 अरब यूनिट (बीयू) हो गई। मंत्रालय ने कहा कि गर्मी की शुरुआत और आर्थिक गतिविधियों में तेजी के चलते यह बढ़ोतरी हुई। पिछले साल अप्रैल में बिजली की खपत 117.08 बीयू थी, जबकि 2020 के इसी महीने में यह आंकड़ा 84.55 बीयू था। दूसरी ओर इस साल अप्रैल में बिजली की पीक मांग 207.11 गीगावॉट के सर्वकालिक उच्च स्तर पर रही। बिजली की पीक मांग एक दिन में हुई सबसे अधिक आपूर्ति है। यह मांग अप्रैल 2021 में 182.37 गीगावॉट और अप्रैल 2020 में 132.73 गीगावॉट थी।

कोरोना वायरस महामारी की रोकथाम के लिए लागू किए गए लॉकडाउन के कारण अप्रैल 2020 में बिजली की खपत और मांग प्रभावित हुई थी। विशेषज्ञों का मानना है कि बिजली की खपत और मांग में अप्रत्याशित रूप से वृद्धि हुई है। ऐसा मुख्य रूप से गर्मियों की शुरुआत और आर्थिक गतिविधियों में तेजी के चलते है।

भारत का विनिर्माण पीएमआई अप्रैल में बढ़कर 54.7 प्रतिशतः एसएंडपी ग्लोबल

नयी दिल्ली। नए ऑर्डर में तेजी की बदौलत भारत का विनिर्माण क्षेत्र पर्चेजिंग मैनेजर्स इंडेक?स (पीएमआई) अप्रैल में बढ़कर 54.7 अंक रहा। यह जानकारी वित्तीय परामर्श एजेंसी एसएंडपी ग्लोबल ने दी। मार्च में विनिर्माण पीएमआई 54 अंक था। पीएमआई में बढ़ोतरी घरेलू विनिर्माण क्षेत्र में सुधार का संकेत है। पीएमआई के 50 अंक से ऊपर होने का मतलब आर्थिक गतिविधियों में विस्तार और उससे नीचे होने पर संकुचन माना जाता है। एसएंडपी ग्लोबल की इस रिपोर्ट के अनुसार, मार्च में गिरावट के बाद अप्रैल में अंतरराष्ट्रीय बिक्री में मजबूत सुधार दिखा। लेकिन इस बीच मुद्रास्फीति का दबाव और बढ़ा। रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण जिंसों के भाव और परिवहन लागत बढ़ी है। उत्पादन सामग्री की लागत पिछले पांच महीनों की सबसे तेज गति से बढ़ी है जबकि उपभोक्ता मूल्य सूचकांक पर आधारित मुद्रास्फीति भी साल भर से अधिक समय के उच्चतम स्तर पर पहुंच गयी है। रिपोर्ट में कहा गया है,''अप्रैल के आंकड़ों से निर्यात ऑर्डर में फिर तेजी लौटने के संकेत हैं जबकि नौ महीने बाद मार्च में इसमें पहली बार गिरावट दिखी थी। जुलाई के बाद से निर्यात ऑर्डर में सबसे तेज सुधार दिखा है। रिपोर्ट में कहा गया है कि अप्रैल में रसायन, इलेक्ट्रोनिक सामानों के हिस्से-पुर्जों, ईंधन, धातु, प्लास्टिक और कपड़े के दामों में बढ़ोतरी हुयी है। इसमें कुछ योगदान ढुलाई लागत का बताया गया है और एक बड़ा कारण यूक्रेन की लड़ाई है। मुद्रास्फीति तेज होकर अपने दीर्घकालीन औसत से ऊपर चल रही है और पिछले पांच माह के उच्चतम स्तर पर है। रिपोर्ट में कहा गया है कि विनिर्माण क्षेत्र की गतिविधियों में तेजी आने के बावजूद रोजगार में अप्रैल में सुधार हल्का ही रहा क्योंकि भारतीय औद्योगिक इकाइयों पर क्षमता की कमी का दबाव ज्यादा नहीं है।

टीवीएस मोटर ने एनटॉर्क 125 एक्सटी स्कूटर पेश किया, कीमत 1.03 लाख

नयी दिल्ली। टीवीएस मोटर कंपनी ने सोमवार को कहा कि उसने अपने एनटॉर्क 125 स्कूटर का एक नया संस्करण पेश किया है, जिसकी दिल्ली में शोरूम कीमत 1,02,823 रुपये है। टीवीएस मोटर कंपनी ने एक बयान में कहा कि एनटॉर्क 125 एक्सटी अगली पीढ़ी के स्मार्ट कनेक्टिविटी मंच और लगभग 60 अन्य विशेषताओं के साथ आता है। इस स्कूटर की विशेषताओं में वॉयस असिस्ट फीचर शामिल है, जो अब वॉयस कमांड को सीधे स्वीकार कर सकता है। टीवीएस मोटर कंपनी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष (विपणन) अनिरुद्ध हलदर ने कहा कि टीवीएस एनटॉर्क 125 एक्सटी ने हाई-टेक विशेषताओं के साथ एक नया मानक स्थापित किया है।

पेट्रोल-डीजल के दामों में कोई बदलाव नहीं

एजेंसी

नयी दिल्ली। देश में तेल विपणन कंपनियों ने लगातार 26वें दिन पेट्रोल-डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी ना कर आम जनता को राहत प्रदान की। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव के बीच देश में सोमवार को भी ईंधन की कीमतों में टिकाव बना रहा। सार्वजनिक क्षेत्र की देश की सबसे बड़ी तेल विपणन कंपनी इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आईओसीएल) के अनुसार आज दिल्ली में पेट्रोल 105.41 रुपये प्रति लीटर और डीजल 96.67 रुपये प्रति लीटर पर स्थिर रहा। मुंबई में पेट्रोल की कीमत 120.51 रुपये प्रति लीटर और डीजल की कीमत 104.77 रुपये प्रति लीटर पर स्थिर है। यूक्रेन और रूस के बीच जारी जंग से अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में घट-बढ़ जारी है। अंतरराष्ट्रीय लंदन ब्रेंट क्रूड आज 0.79 प्रतिशत गिरकर 106.26 डालर प्रति बैरल पर और अमेरिकी क्रूड 0.70 प्रतिशत की मंदी के साथ 103.96 डालर प्रति बैरल की कीमत पर कारोबार कर रहा है। देश में पेट्रोल-डीजल की कीमतें 137 दिन की स्थिरता के बाद गत 22 मार्च से बढ़नी शुरू हुई थीं। कंपनियों ने पिछले 36 दिन में 14 बार पेट्रोल और डीजल के दामों में वृद्धि की। इस दौरान इनके दामों में करीब 10 रुपये प्रति लीटर की तेजी आयी है। पेट्रोल-डीजल के मूल्यों की प्रतिदिन समीक्षा की जाती है।

सीआईएल ने बिजली क्षेत्र को कोयले की आपूर्ति अप्रैल में 16% बढ़ाई

नयी दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) ने कहा कि उसने पिछले महीने बिजली क्षेत्र को कोयले की आपूर्ति 15.6 प्रतिशत बढ़ाकर 4.97 करोड़ टन कर दी। कंपनी ने कहा कि बिजली संयंत्रों में कोयले की बढ़ती मांग के कारण ऐसा किया गया और आगे आपूर्ति बढ़ाने के उपाए किए जा रहे हैं। सीआईएल का यह बयान ऐसे समय में आया है, जब देश के कई हिस्से बिजली संकट से जूझ रहे हैं। कंपनी ने कहा, ''बिजली उत्पादन के लिए कोयले की लगातार बढ़ती मांग के बीच सीआईएल ने अप्रैल 2022 में देश के बिजली संयंत्रों को अपनी आपूर्ति को बढ़ाकर 4.97 करोड़ टन कर दी। यह आंकड़ा अप्रैल 2021 के मुकाबले 67 लाख टन अधिक है। सीआईएल उत्पादन बढ़ाने के साथ ही आने वाले महीनों में बिजली संयंत्रों के लिए आपूर्ति और बढ़ाने की योजना बना रही है।

अप्रैल में उच्च मुद्रास्फीति के बीच भारत के विनिर्माण क्षेत्र में तेज वृद्धिः पीएमआई

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत के विनिर्माण क्षेत्र की गतिविधियों में अप्रैल में तेज वृद्धि हुई। एक मासिक सर्वेक्षण में सोमवार को कहा गया कि उत्पादन में बढ़ोतरी के साथ ही कारखानों को मिलने वाले ऑर्डर बढ़ने और अंतरराष्ट्रीय बिक्री में तेजी के ऐसा हुआ। मौसमी रूप से समायोजित एसएंडपी ग्लोबल इंडिया विनिर्माण खरीद प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) अप्रैल में बढ़कर 54.7 हो गया, जो मार्च में मार्च में 54.0 था। कोविड-19 महामारी के चलते लागू प्रतिबंध खत्म होने के बाद मांग बढ़ी है। पीएमआई आंकड़ों के मुताबिक अप्रैल में लगातार 10वें महीने समग्र परिचालन स्थितियों में सुधार देखने को मिला। पीएमआई की भाषा में 50 से ऊपर अंक का अर्थ है कि गतिविधियों में विस्तार हो रहा है, जबकि 50 से नीचे का अंक संकुचन को दर्शाता है। एसएंडपी ग्लोबल में अर्थशास्त्र की संयुक्त निदेशक पोलियाना डी लीमा ने कहा कि भारतीय विनिर्माण पीएमआई अप्रैल में सकारात्मक बना रहा और वह मार्च में खोई हुई जमीन को दोबारा हासिल कर रही है। उन्होंने आगे कहा कि कीमतों के दबाव से मांग कम हो सकती है, क्योंकि कंपनियां अपने ग्राहकों के साथ अतिरिक्त लागत बोझ साझा करना जारी रखेंगी। सर्वेक्षण में कहा गया कि अप्रैल के दौरान रोजगार में मामूली वृद्धि हुई है।

मारुति सुजुकी, हुंदै की अप्रैल में थोक बिक्री घटी, टाटा मोटर्स, टोयोटा की बिक्री बढ़ी

एजेंसी

नई दिल्ली। आपूर्ति श्रृंखला से जुड़ी चुनौतियों के कारण उत्पादन के मोर्चे पर चुनौतियों का सामना कर रहीं वाहन विनिर्माता कंपनियों के लिए अप्रैल में थोक बिक्री के आंकड़े मिले-जुले रहे। जहां मारुति सुजुकी, हुंदै और होंडा की अप्रैल में थोक बिक्री घटी है वहीं टाटा मोटर्स, टोयोटा और स्कोडा ऑटो के बिक्री आंकड़े बेहतर हुए हैं। देश की सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया (एमएसआई) ने रविवार को कहा कि उसकी घरेलू बिक्री सात प्रतिशत घटकर 1,32,248 इकाई रह गई जो अप्रैल 2021 में 1,42,454 इकाई थी। आल्टो और एस-प्रेसो सहित छोटी कारों की बिक्री 32 प्रतिशत गिरकर 17,137 इकाई रह गई जो पिछले साल इसी महीने में 25,041 थी। कॉम्पैक्ट कार खंड में स्विफ्ट, सेलेरियो, इग्निस, बलेनो और डिजायर जैसे मॉडलों की बिक्री 18 फीसदी घटकर 59,184 इकाई रह गई जबकि अप्रैल 2021 में

72,318 वाहन बिके थे। हालांकि एमएसआई के विटारा ब्रेज़ा, एस-क्रॉस और अर्टिगा जैसे यूटिलिटी वाहनों की बिक्री 33 प्रतिशत बढ़कर 33,941 इकाई हो गई, जो अप्रैल 2021 में 25,484 वाहनों की थी। एमएसआई ने कहा, ''इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की कमी का वाहनों के उत्पादन पर मामूली प्रभाव पड़ा है, खासकर घरेलू मॉडलों पर।' भारतीय बाजार में दूसरे स्थान पर काबिज हुंदै मोटर इंडिया ने भी पिछले महीने थोक बिक्री में 10 प्रतिशत की गिरावट के साथ 44,001 वाहन बेचे जबकि अप्रैल 2021 में यह आंकड़ा 49,002 इकाई का था। इसी तरह, होंडा कार्स इंडिया लिमिटेड (एचसीआईएल) ने अप्रैल के लिए घरेलू थोक बिक्री में सालाना आधार पर 13 प्रतिशत की गिरावट के साथ 7,874 वाहनों की बिक्री की है। कंपनी ने इसके लिए आपूर्ति शृंखला से जुड़ी चुनौतियों को जिम्मेदार ठहराया है। एमजी मोटर इंडिया ने भी कहा कि अप्रैल 2021 में 2,565 की तुलना में पिछले महीने उसकी खुदरा बिक्री 22 प्रतिशत घटकर 2,008 इकाई रह गई। उसने कहा कि दुनिया के विभिन्न हिस्सों में कोविड के नए स्वरूप सामने आने से वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में आई बाधाओं से उत्पादन अस्थिर और प्रभावित रहा। दूसरी ओर घरेलू वाहन विनिर्माता टाटा मोटर्स ने डीलरों को अप्रैल में 41,587 इकाइयों की बिक्री की जो अप्रैल 2021 के 25,095 इकाइयों की तुलना में 66 फीसदी अधिक है। इसके अलावा टोयोटा किर्लोस्कर मोटर (टीकेएम) ने कहा कि अप्रैल में उसकी थोक बिक्री 57 प्रतिशत बढ़कर 15,085 इकाई हो गई, जो पिछले साल इसी महीने में 9,600 थी।

कंपनी के सह उपाध्यक्ष (बिक्री एवं विपणन) अतुल सूद ने कहा कि नए वित्त वर्ष में मांग बढ़ी हुई है। स्कोडा ऑटो इंडिया ने कहा कि अप्रैल में इसकी बिक्री पांच गुना बढ़कर

दिल्ली के सरकारी स्कूलों में बच्चे अब फ्रेंच भाषा भी सीखेंगे

एजेंसी

नई दिल्ली। केजरीवाल सरकार के स्कूलों में छात्र अब फ्रेंच भाषा भी सीखेंगे। आज के दौर में काम, शिक्षा और यात्रा के साथ-साथ दुनियाभर की संस्कृतियों के बारे में समझ बनाने के लिए ग्लोबल लैंग्वेजज का ज्ञान होना बेहद जरुरी हो गया है। ऐसे में अपने स्कूलों के छात्रों को ग्लोबल एक्सपोजर व एक्सपीरियंस देने के लिए केजरीवाल सरकार के दिल्ली बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन (डीबीएसई) ने उपमुख्यमंत्री और शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया और भारत में फ्रांस के राजदूत इमैनुएल लेनिन की उपस्थिति में सोमवार को इंस्टिट्यूट फ्रांसैस एन इंडे (आईएफआई - द फ्रेंच इंस्टीट्यूट इन इंडिया) के साथ समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर किया। इस पार्टनरशिप का उद्देश्य तेजी से वैश्वीकृत होती दुनियां के लिए दिल्ली

सरकार के स्कूलों में पढ़ने वाले स्टूडेंट्स को प्रोफ़ेशनल रूप से तैयार करना है। इस मौके पर शिक्षा सचिव और डीबीएसई के वाईस-प्रेसिडेंट एच. राजेश प्रसाद, फ्रेंच इंस्टीट्यूट इन इंडिया के कंट्री डायरेक्टर इमैनुएल लेब्रुन डेमियंस, शिक्षा निदेशक डीबीएसई हिमांशु गुप्ता, विशेष शिक्षा सचिव सी.अरविंद, डीबीएसई के सीईओ के.एस.उपाध्याय उपस्थित रहे। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि ह्लकेजरीवाल सरकार दिल्ली के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले सभी छात्रों को ग्लोबल एक्सपोजर देने के लिए प्रतिबद्ध है और स्कूलों में शुरू किया जा रहा फ्रेंच लैंग्वेज कार्यक्रम इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने कहा कि ह्लसरकारी स्कूलों में प्रमुख ग्लोबल लैंग्वेज शुरू करने के केजरीवाल सरकार के कार्यक्रम के तहत अब हमारे छात्रों के पास अब फ्रेंच सीखने का विकल्प भी होगा। हमारे स्कूलों में फ्रेंच जैसी ग्लोबल लैंग्वेज की शुरुआत से हमारे स्टूडेंट्स के लिए एजुकेशन, ट्रेवल, ऑटोमोबाइल, टूरिज्म, हॉस्पिटैलिटी आदि जैसे विभिन्न सेक्टर्स में करियर के विकल्प बढ़ेंगे। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि एक फॉरेन लैंग्वेज सीखना न केवल एक स्किल सीखने तक सीमित है बल्कि किसी विशेष देश की संस्कृति को सीखने व उससे जुड़ने का मौका भी देता है। उन्होंने कहा कि इस पहल से न केवल हमारे स्टूडेंट्स फ्रेंच भाषा सीखेंगे, फ्रांस के इतिहास व संस्कृति के बारे में जानेंगे बल्कि यह पार्टनरशिप भविष्य में दिल्ली के सरकारी स्कूलों के स्टूडेंट्स के लिए नए रोजगार के साथ-साथ कई शैक्षणिक अवसर भी खोलेगी। उन्होंने कहा कि दोनों देश न केवल व्यापार के क्षेत्र में बल्कि कला और संस्कृति के क्षेत्र में भी पार्टनरशिप के माध्यम से सदियों से एक-दूसरे से सीखते आ रहे हैं। वहीं दिल्ली सरकार के स्कूलों में छात्रों को फॉरेन लैंग्वेज सीखने का मौका देने के लिए केजरीवाल सरकार के प्रगतिशील प्रयासों की सराहना करते हुए, भारत में फ्रांस के राजदूत इमैनुएल लेनिन ने कहा कि, दिल्ली सरकार व फ्रांस सरकार का शिक्षा को लेकर एक जैसा दृष्टिकोण है। दिल्ली सरकार अपने स्कूलों में पढ़ने वाले 1.5 मिलियन बच्चों की शिक्षा के लिए अपनी नीतियों को लेकर गंभीर हैं और हम इसका समर्थन करते हैं। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच सभी सहयोगों के बीच शिक्षा हमेशा हमारी प्राथमिकता रहेगी। उन्होंने कहा कि फ्रेंच भाषा सीखना दिल्ली सरकार के स्कूलों के बच्चों के लिए जीवन बदलने वाला अनुभव साबित होगा और उन्हें अकादमिक और प्रोफ़ेशनल रूप से नए अवसर प्रदान करेगा। फ्रेंच सीखने से यूरोप के कई देशों में दिल्ली के सरकारी स्कूलों के बच्चों के लिए रोजगार के रास्ते भी खुलेंगे।

इसी क्रम में शिक्षा निदेशक हिमांशु गुप्ता ने कहा कि पायलट फ़ेज में फ्रेंच लैंग्वेज कोर्स की पढ़ाई दिल्ली सरकार के 30 स्कूलों में शुरू की जाएगी। जिसमें डॉ.अम्बेडकर स्कूल ऑफ स्पेशलाइज्ड शामिल हैं। इन स्कूलों में छठी से 12वीं के छात्र को सीखने के लिए फ्रेंच भाषा ऑफर की जाएगी। पायलट फ़ेज के लर्निंग को देखते हुए इसका दिल्ली सरकार के बाकि स्कूलों में भी विस्तार किया जाएगा।

राशिफल

मेष : आज बढ़िया दिन है जब आप सबके ध्यान को अपनी तरफ़ खींचेंगे।

वृष : आज आप अपने मनमौजी बर्ताव पर क़ाबू रखें, क्योंकि यह आपकी दोस्ती को बर्बाद कर सकता है। अपनी पेशेवर क्षमताओं को बढ़ाकर आप करिअर में नए दरवाज़े खोल सकते हैं।

मिथुन : आज सैर-सपाटे पर जाने का कार्यक्रम बन सकता है, जो आपकी ऊर्ज़ा और उत्साह को तरोताज़ा कर देगा।

कर्क : आज अगर आप अपने आकर्षण और होशियारी का इस्तेमाल करें, तो लोगों से मनचाहा व्यवहार लाभ पा सकते हैं।

सिंह : आज व्यवसायियों के लिए अच्छा दिन है, क्योंकि उन्हें अचानक बड़ा फ़ायदा हो सकता है।

कन्या : आज प्यार का बुख़ार आपके सर पर चढ़ने के लिए तैयार है। इसका अनुभव कीजिए। आप जीतोड़ मेहनत और धीरज के बल पर अपने उद्देश्य हासिल कर सकते हैं।

तुला : आज पिता का तल्ख़ बर्ताव आपको नाराज़ कर सकता है। लेकिन हालात को नियंत्रण में रखने के लिए शांत रहें। इससे आपको ही फ़ायदा होगा।

वृश्चिक : आज आप दफ़्तर में माहौल में बेहतरी और कामकाज के स्तर में सुधार को महसूस कर सकते हैं।

धनु : आज के दिन किसी के साथ मजाक करने से बचें। रचनात्मक कामों से जुड़े लोगों के लिए बेहतरीन दिन है ।

मकर : आज आपका सामना कई नई आर्थिक योजनाओं से होगा- कोई भी फ़ैसला करने से पहले अच्छाईयों और कमियों पर सावधानी से ग़ौर फ़रमाएँ।

कुम्भ : आज आप शरारती मनोदशा में होंगे। अचानक आए ख़र्चे आर्थिक बोझ बढ़ा सकते हैं। आपके नज़दीकी लोग निजी जीवन में परेशानियाँ खड़ी कर सकते हैं।

मीन : आज बच्चों के साथ वाद-विवाद झुंझलाहट पैदा करेगा। एक प्यारी-सी मुस्कुराहट से अपने प्रेमी का दिन रोशन करें।

कैदियों के बीच हो रहे संघर्ष पर बॉडी वोर्न कैमरा रखेगा नजर

एजेंसी

नई दिल्ली। तिहाड़ जेल में कैदियों के बीच हो रहे संघर्ष पर रोक लगाएगा बॉडी वोर्न कैमरा । जेल प्रशासन ने कैदियों पर नजर रखने के लिए जेल में तैनात सुरक्षाकर्मियों को बाडी वोर्न कैमरे से लैस कर रहा है। जेल प्रशासन का कहना है कि जेल में कैदियों की संख्या बढ़ने से चुनौतियां बढ़ गई है।

तिहाड़ जेल में हाल के दिनों में कैदियों के बीच संघर्ष की घटना बढ़ गई है। प्रशासन ने इसपर लगाम लगाने के लिए कई कदम उठाएं हैं। इसमें कैदियों की हरकत पर नजर रखना अहम है। इसके साथ साथ कैदियों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए भी प्रयास किए जा रहे हैं। जेल महानिदेशक संदीप गोयल ने बताया कि जेल के सुरक्षाकर्मियों को बॉडी वोर्न कैमरे

से लैस किया जा रहा है। सुरक्षाकर्मियों के शरीर पर लगने वाले कैमरे कैदियों के हर गतिविधियों पर नजर रखी जाएगी। इन सुरक्षाकर्मियों को नामी बदमाशों के सेल के आस पास तैनात किए गए हैं। जेल अधिकारियों ने बताया कि अभी यह कैमरे कम हैं। आनेवाले दिनों में इसकी संख्या बढ़ाई जाएगी। इसके साथ साथ जेल परिसर में लगाए गए 75 सौ कैमरे से कैदियों पर निगरानी रखी जा रही है। इन कैमरों का 24 घंटे निगरानी रखी जा रही है। सीसीटीवी कैमरे के जरिए नियम का उल्लंघन करने वाले कैदियों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। जेल अधिकारियों का कहना है कि कैमरा लगाए जाने के बाद से जेल में नशीले पदार्थ पर लगाम लगाने में कामयाबी मिली है।

अधिकारियों ने बताया कि जेल में बंद आक्रामक कैदियों का नियमित अंतराल पर उनका जेल बदला जा रहा है ताकि कैदी जेल में गुट न बना सके। जेल में तैनात सुरक्षाकर्मी भी कैदियों पर नजर रखते है और उनकी हर गतिविधियों के बारे में अधिकारियों को सूचित करते हैं। इसके साथ ही कैदियों को व्यस्त रखने के लिए उन्हें व्यावसायिक कोर्स भी करवाया जाता है। जिसमें पेंटिंग, संगीत, फाइन आर्ट और नृत्य सिखाई जाती है। इसके अलावा तिहाड़ में खेलों की सुविधा दी गई है।

एडवांस्ड टोड आर्टिलरी गन सिस्टम के परीक्षण पूरे, उत्पादन का रास्ता साफ

एजेंसी

नई दिल्ली। एडवांस्ड टोड आर्टिलरी गन सिस्टम (एटीएजीएस) के परीक्षण पूरे होने के बाद अब इनके उत्पादन का रास्ता साफ हो गया है। पोखरण फील्ड फायरिंग रेंज में तीन दिन तक चले 155 मिमी. 52 कैलिबर की आर्टिलरी गन के परीक्षण सोमवार को खत्म हो गए। भारतीय सेना ने पूरी तरह स्वदेशी रूप से विकसित एटीएजीएस के परीक्षण इसी साल मार्च से शुरू किये थे। परीक्षण खत्म होने के बाद फायरिंग से जुड़े आकलनों के बाद परियोजना की गहन समीक्षा की जाएगी।

डीआरडीओ ने भारतीय सेना में पुरानी तोपों को बदलने के लिए पूरी तरह स्वदेशी आधुनिक 155 मिमी. आर्टिलरी गन की परियोजना 2013 में शुरू की थी। इसे पहली बार 26 जनवरी, 2017 को 68वें गणतंत्र दिवस परेड में सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित किया गया था।एटीएजीएस ने 2017 में 47.2 किलोमीटर की दूरी तक राउंड फायर करके 155 मिमी. तोप का पिछला विश्व रिकॉर्ड तोड़ा था।

विकास परीक्षण पूरे होने के बाद सितम्बर, 2020 में उपयोगकर्ता परीक्षण के दौरान राजस्थान के पोखरण फील्ड फायरिंग रेंज में एक बैरल फटने से तीन विशेषज्ञ घायल हो गए जिसकी जांच के लिए एक समिति गठित की गई। नवम्बर, 2020 में जांच के बाद आगे के परीक्षणों के लिए मंजूरी मिलने के बाद भारतीय सेना ने फिर इसी साल मार्च से एटीएजीएस के परीक्षण शुरू किये।

इन परीक्षणों के दौरान टैंक के आकार और लक्ष्यों पर दिन-रात की फायरिंग, पांच राउंड बस्ट के लिए परीक्षण, लगभग तीन मिनट में 15 राउंड की रैपिड-फायर दर और हर घंटे 60 राउंड की निरंतर फायरिंग क्षमता आंकी गई है। इस दौरान रेगिस्तान में रेत के टीलों पर नेविगेशन के साथ और 70 सड़कों पर हाई-स्पीड ट्रायल हुए हैं। आखिरी दौर के परीक्षण 26 अप्रैल से 2 मई के बीच किये गए हैं।

स्कूल ऑफ आर्टिलरी की ट्रायल विंग ने इन परीक्षणों को अंजाम दिया है, जिसके बाद एक व्यापक रिपोर्ट सेना प्रशिक्षण कमान को भेजी जाएगी ताकि भविष्य की कार्रवाई के बारे में निर्णय लिया जा सके। एडवांस्ड टोड आर्टिलरी गन सिस्टम (एटीएजीएस) 155 मिमी/52 कैलिबर हॉवित्जर है जिसे रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) ने भारतीय सेना के लिए विकसित किया है। एटीएजीएस को भारत फोर्ज लिमिटेड और टाटा पावर एसईडी कम्पनियों ने निर्मित किया है।

एटीएजीएस को विकसित करने में डीआरडीओ प्रयोगशाला आयुध अनुसंधान और विकास प्रतिष्ठान (एआरडीई) ने निजी कंपनियों भारत फोर्ज लिमिटेड, महिंद्रा डिफेंस नेवल सिस्टम, टाटा पावर स्ट्रेटेजिक इंजीनियरिंग डिवीजन और सार्वजनिक क्षेत्र की इकाई आयुध निर्माणी बोर्ड (ओएफबी) के साथ भागीदारी की। एडवांस्ड टोड आर्टिलरी गन सिस्टम के अब तक हुए परीक्षण डीआरडीओ ने 14 जुलाई, 2016 को 155/52 कैलिबर एडवांस्ड टोड आर्टिलरी गन सिस्टम के लिए आयुध की प्रूफ फायरिंग की जो पूरी तरह सफल रहा।

आर्टिलरी गन ने 14 दिसम्बर, 2016 को ओडिशा के बालासोर में प्रूफ एंड एक्सपेरिमेंटल एस्टाब्लिशमेंट (पीएक्सई) में अपने पहले राउंड गोला बारूद को दागा। 2017 में परीक्षण के दौरान एटीएजीएस ने 47.2 किलोमीटर की दूरी तक राउंड फायर करके 155 मिमी. तोप का विश्व रिकॉर्ड तोड़ा। एटीएजीएस ने उच्च विस्फोटक-बेस ब्लीड (एचई-बीबी) गोला-बारूद के साथ अधिकतम 48.074 किलोमीटर की दूरी दर्ज करके इस श्रेणी में किसी भी आर्टिलरी गन सिस्टम द्वारा दागी गई अधिकतम सीमाओं को पार किया है। एटीएजीएस के परीक्षण पूरे होने के बाद अब इनके उत्पादन का रास्ता साफ हो गया है।

राज्यसभा मेरी जिन्दगी का नया अध्याय : चड्ढा

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) नेता राघव चड्ढा ने सोमवार को राज्य सभा सदस्य के रूप में शपथ ली। इसके बाद उन्होंने आप मुखिया अरविंद केजरीवाल को धन्यवाद देते हुए कहा कि राज्य सभा उनके जिन्दगी का नया अध्याय है। वह समाज सेवा कार्य जारी रखेंगे। चड्ढा ने कहा कि जंतर-मंतर की सभा से शुरु हुआ सफर आज राज्य सभा तक पहुंचा है। इसके लिए वह अरविंद केजरीवाल को धन्यवाद देते हैं। आप मुखिया ने उन्हें देश की सबसे बड़ी पंचायत में जाकर लोगों से जुड़ने और जनता के मुद्दे उठाने का मौका दिया। वह इस दायित्व की जिम्मेदारी पूर्वक निर्वहन करेंगे। उल्लेखनीय है कि उपराष्ट्रपति व राज्य सभा के सभापति एम. वेंकैया नायडू ने आज आम आदमी पार्टी के नेता राघव चड्ढा सहित तीन सांसदों को राज्यसभा सदस्यता की शपथ दिलाई। राज्यसभा सचिवालय के अनुसार सभापति एम. वेंकैया नायडू ने आज संसद भवन स्थित अपने कक्ष में राज्य सभा के तीन नव निर्वाचित सदस्यों संजीव अरोड़ा, राघव चड्ढा और डा. अशोक कुमार मित्तल को शपथ दिलाई। यह तीनों आम आदमी पार्टी के नेता पंजाब से राज्य सभा के लिए निर्वाचित हुए हैं।

कृषि और प्राकृतिक संसाधनों के सतत प्रबंधन को लेकर भारत और जर्मनी मिलकर करेंगे काम

नई दिल्ली। भारत और जर्मनी कृषि और प्राकृतिक संसाधनों के सतत प्रबंधन को लेकर साथ काम करेंगे। इसको लेकर दोनों देशों के बीच सोमवार को सहमति बनी है। कृषि मंत्रालय की ओर से जारी विज्ञप्ति के अनुसार भारत और जर्मनी के बीच कृषि पारिस्थितिकी एवं प्राकृतिक संसाधनों के सतत प्रबंधन को लेकर सहमति बनी है। इस संबंध में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर और जर्मनी की आर्थिक सहयोग व विकास मंत्री स्वेंजा शुल्ज़ ने आज वर्चुअल बैठक में घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए। कृषि मंत्रालय के अनुसार इस समझौते के बाद दोनों देशों के शैक्षणिक संस्थानों और किसानों के बीच संयुक्त अनुसंधान, ज्ञान के आदान-प्रदान व नवाचार और निजी क्षेत्र के साथ आदान-प्रदान और साझेदारी व अनुसंधान सहयोग को प्रोत्साहित करके प्रौद्योगिकी व वैज्ञानिक ज्ञान के अंतरण को बढ़ावा दिया जाएगा। उल्लेखनीय है कि जर्मनी का संघीय आर्थिक सहयोग और विकास मंत्रालय इस पहल के तहत परियोजनाओं के लिए वित्तीय और तकनीकी सहयोग के लिए वर्ष 2025 तक 300 मिलियन यूरो खर्च करेगा। तकनीकी सहयोग परियोजना द्वारा भारत में कृषि पारिस्थितिकी परिवर्तन प्रक्रिया का समर्थन करते हुए जर्मनी इस पहल के लिए सहायता प्रदान करेगा।

देश में अबतक कोरोना रोधी टीके की 189.23 करोड़ खुराक दी गई

नई दिल्ली। राष्ट्रव्यापी टीकाकरण अभियान के तहत सोमवार सुबह 8 बजे तक 189 करोड़ 23 लाख से ज्यादा कोरोना रोधी टीके की खुराक दी जा चुकी है। पिछले 24 घंटे में 04 लाख से ज्यादा टीके लगाए गए। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को कोरोना रोधी टीके की अबतक कुल 193.30 करोड़ खुराक निःशुल्क उपलब्ध कराई जा चुकी है। इनमें 19.12 करोड़ टीके की खुराक अब भी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के पास मौजूद है।

देश में 24 घंटे में कोरोना के 3157 नए मरीज

नई दिल्ली । देश में पिछले 24 घंटे के दौरान सोमवार सुबह आठ बजे तक कोरोना संक्रमित 3,157 नए मरीज मिले हैं। इस अवधि में कोरोना महामारी को मात देने वालों की संख्या 2,723 रही, जबकि कोरोना संक्रमित 26 मरीजों की मौत हो गई। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक देश में अबतक कुल 4 करोड़ 25 लाख 38 हजार 976 कोरोना के मरीज स्वस्थ हो चुके हैं। मौजूदा रिकवरी दर 98.74 प्रतिशत है। फिलहाल देश में कोरोना वायरस के सक्रिय मरीजों की संख्या बढ़कर 19 हजार, 500 है। दैनिक संक्रमण दर बढ़कर 1.07 प्रतिशत है। आईसीएमआर के मुताबिक बीते 24 घंटे में 2.95 लाख से ज्यादा टेस्ट किए गए। उल्लेखनीय है कि अबतक कुल 83 करोड़, 82 लाख टेस्ट किए जा चुके हैं।

श्रीनगर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर सेना के जवान से हथगोला बरामद, हिरासत में

श्रीनगर । श्रीनगर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर सोमवार को सेना के एक जवान से हथगोला मिलने पर उसे हिरासत में लिया गया है। हवाई अड्डे पर सामान की जांच के दौरान जवान को हिरासत में लिया गया। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार श्रीनगर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के ड्रॉप गेट पर स्क्रीनिंग के दौरान सेना के जवान के सामान से एक एचई (उच्च विस्फोटक) हथगोला बरामद किया गया। यह जवान छुट्टी पर जा रहा था। हथगोला बरामद होने के तुरंत बाद जवान को पूछताछ के लिए हिरासत में ले लिया गया। पुलिस के एक अधिकारी ने कहा कि जवान की पहचान 42 आरआर के बालाजी सोमपत के रूप में हुई है और उसे पुलिस चौकी हुम्हामा को सौंप दिया गया है

उत्तराखंड में कोरोना के 18 नए मामले

देहरादून। उत्तराखंड में पिछले 24 घंटे में कोरोना के 18 नए मामले सामने आए हैं। इस दौरान कोरोना से किसी मरीज की मौत नहीं हुई है। वहीं 21 मरीज ठीक हुए हैं। सोमवार को 20 हजार से अधिक लोगों को कोरोना रोधी टीके लगाए गए। स्वास्थ्य विभाग के मुताबिक सोमवार को 1711 लोगों की कोरोना जांच रिपोर्ट निगेटिव मिली। आज 2223 लोगों के सैंपल जांच के लिए लैब भेजे गए हैं। पिछले 24 घंटे में प्रदेश के 09 जिलों में एक भी मामला नहीं मिला है। राज्य के देहरादून जिले में 11, हरिद्वार 01, नैनीताल 04, अल्मोड़ा में 02 संक्रमण के मामले मिले हैं। पिछले 24 घंटे में 21 मरीज स्वस्थ होकर अपने घर गए। राज्य में सक्रिय मरीजों की संख्या कुल 103 है। प्रदेश में रिकवरी दर 96.10 फीसदी है।

पेज एक का शेष

ईद व अक्षय...

न हो। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अक्षय तृतीया, परशुराम जयंती और ईद के अवसर पर प्रदेश में बिजली आपूर्ति सुचारू रखें। कहीं पर भी अनावश्यक कटौती न हो। इसके साथ ही उनका निर्देश है कि सभी धर्मिक स्थलों के आसपास स्वच्छता, पेयजल आदि के प्रबंध किए जाएं। लोगों की सुविधाओं का ध्यान रखें। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से प्रदेश में सांप्रदायिक माहौल काफी बेहतर बना है। हमारा प्रयास है कि प्रदेश में हर एक पर्व शांति और सौहार्द के बीच सम्पन्न हो। उसी का परिणाम है कि प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन देखने को मिल रहा है। एडीजी ला एंड आर्डर प्रशांत कुमार ने कहा कि कल प्रतिबंधित पशुओं के आवागमन पर रोक रहेगी। किसी भी धर्मग्रंथ से बेअदबी पर कार्रवाई होगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश में धार्मिक स्थलों से 60150 लाउडस्पीकर हटाए गए हैं। इसके साथ 2846 संवेदनशील स्थानों को चिन्हित किया है। प्रदेश में 46 कंपनी पीएसी तथा पैरामिलिट्री समेत फोर्स तैनात है।

यूपी सीएम ...

मुख्यमंत्री पुष्कर धामी उनकी आगवानी करेंगे। दोनों ही राज्यों के मुख्यमंत्री जौलीग्रांट से हैलीकाप्टर के जरिए यमकेश्वर के लिए प्रस्थान करेंगे। सीएम योगी अपराह्न तीन बजे गुरु गोरखनाथ पीजी कालेज बिथ्याणी में अपने गुरु महंत अवैद्यनाथ की प्रतिमा का अनावरण करेंगे। अभी उनका एक ही दिन का कार्यक्रम जारी हुआ है। बताया गया कि योगी चार मई को भी यमकेश्वर में रहेंगे जबकि पांच मई को यूपी पर्यटन विभाग के हरिद्वार में बने अलकनंदा होटल का शुभारंभ करेंगे। इसके बाद वे यूपी के लिए रवाना होंगे।

सीएम ने ईद की...

नियमों व सिद्धांतों को हमें अपने जीवन में आत्मसात कर आम जनमानस के कल्याण का कार्य करना चाहिए।

विदेशी आतंकवादी...

प्रभावी ढंग से दूर करने में सक्षम हैं।

कृषि क्षेत्र...

मानव परिश्रम को कम करने के अलावा उत्पादन व उत्पादकता बढ़ाने, बीजों, उर्वरकों व सिंचाई जल जैसे आदानों की उपयोग दक्षता में सुधार के लिए किसानों को आधुनिक प्रौद्योगिकी तक पहुंच में मदद कर रहा है।

वैधता को चुनौती...

को बोलने और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार का उल्लंघन है। याचिका में कहा गया है कि केदारनाथ सिंह बनाम बिहार राज्य के मामले में 1962 में सुप्रीम कोर्ट ने भले ही कानून की वैधता को बरकरार रखा था लेकिन अब इसके साठ साल बीतने के बाद ये कानून आज संवैधानिक कसौटी पर पास नहीं होता है। याचिका में कहा गया है कि भारत पूरे लोकतांत्रिक दुनिया में अपने को लोकतंत्र कहता है। ब्रिटेन, आयरलैंड, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, घाना, नाइजीरिया और युगांडा ने राजद्रोह को अलोकतांत्रिक करार दिया है। याचिका में कहा गया है कि दोनों याचिकाकर्ता एक मुखर और जिम्मेदार पत्रकार हैं। वे संबंधित राज्य सरकारों और केंद्र सरकार पर सवाल उठाते हैं। दोनों के खिलाफ सोशल मीडिया पर कार्टून शेयर करने के लिए धारा 124ए के तहत राजद्रोह की धाराओं के तहत एफआईआर दर्ज किए गए हैं।

राज ठाकरे...

चर्चा होगी, जिसमें उन्होंने 4 मई से पूरे राज्य में लाउडस्पीकर पर अजान के दौरान दोगुनी आवाज में हनुमान चालीसा बजाने को कहा था। रविवार को मनसे प्रमुख ने कहा कि वह मस्जिदों से 3 मई तक लाउडस्पीकर हटाने की बात पर अडिग हैं। साथ ही उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं होने पर सभी हिंदू इन धार्मिक स्थलों के बाहर हनुमान चालीसा चलाएंगे। उन्होंने कहा कि अगर उत्तर प्रदेश सरकार लाउडस्पीकर हटा सकती है, तो महाराष्ट्र सरकार को कौन सी बात रोक रही है। ठाकरे ने कहा, 'मस्जिदों से लाउडस्पीकर हटाने की 3 मई की डेडलाइन के बाद क्या होगा, मैं उसके लिए जिम्मेदार नहीं हूं।'

हउन्होंने कहा, अब इन दिनों हर राजनीतिक पार्टी यह सोच रही है कि अपनी राजनीति चमकाने के लिए देश को जलाना होगा। जलील ने कहा, राज ठाकरे का वर्चस्व कम हो रहा है। आपकी सभा में लोग आएंगे और सुनकर चले जाएंगे लेकिन आज की युवा पीढ़ी जो है वह बहुत ज्यादा होशियार हो चुकी है। उसे अपनी नौकरी, कारोबार और परिवार की चिंता है।

नवनीत राणा ...

है। उन्होंने कहा कि हनुमान चालीसा पढ़ने से हिंसा भड़कने की कोई उम्मीद ही नहीं थी। पुलिस शिकायत का जिक्र करते हुए बचाव पक्ष ने कहा कि उनके क्लाइंट मातोश्री के सामने बिना अपने समर्थकों के साथ अकेले ही हनुमान चालीसा पढ़ना चाहते थे। सरकार के खिलाफ हिंसा भड़काने की बात उनके सपनों में भी कभी नहीं आई। वहीं दूसरी तरफ जमानत का विरोध कर रही पुलिस की तरफ से दलील दी गई कि राणा दंपत्ति ने धर्म के नाम पर हिंसा भड़काने की कोशिश की। पुलिस ने कहा कि इस बहाने राज्य में कानून- व्यवस्था बिगाड़कर राज्य की महा विकास अंगाड़ी सरकार को गिराने की साजिश रची गई थी।

यूक्रेन संघर्ष...

दोनों नेताओं ने हरित और टिकाऊ ऊर्ज़ा साझेदारी कायम करने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। जर्मनी द्विपक्षीय सहयोग की इन परियोजनाओं के लिए 10 अरब यूरो की धनराशि उपलब्ध करायेगा। दोनों देशों ने हरित हाइड्रोजन कार्यबल गठित करने का भी फैसला किया है।

चांसलर ओलाफ शोल्ज ने प्रधानमंत्री मोदी को जर्मनी में आयोजित होने वाली विकसित देशों की संस्था जी7 की बैठक के लिए आमंत्रित किया। पहले यह कयास लगाया जा रहा था कि यूक्रेन घटनाक्रम के संबंध में भारत की तटस्थ नीति के कारण संभवतः उसे जी7 बैठक में आमंत्रित नहीं किया जाए।

इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जर्मन चांसलर ओलाफ शोल्ज के साथ भारत-जर्मनी अंतर-सरकारी परामर्श (आईजीसी) के पूर्ण सत्र की सह-अध्यक्षता की। अपने उद्घाटन भाषण में दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय संबंधों के प्रमुख पहलुओं के साथ-साथ क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर साझा दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला। प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि भारत-जर्मनी साझेदारी एक जटिल दुनिया में सफलता के उदाहरण के रूप में काम कर सकती है। उन्होंने भारत के आत्मनिर्भर अभियान में जर्मनी को भागीदारी के लिए भी आमंत्रित किया।

वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण, विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और पृथ्वी विज्ञान मंत्री डॉ जितेंद्र सिंह और डीपीआईआईटी सचिव अनुराग जैन ने भी बैठक में भाग लिया और अपनी प्रस्तुती दीं।

रूस ने यूक्रेन पहुंचे अमेरिकी हथियारों को बनाया निशाना खार्कीव में दो यूक्रेनी लड़ाकू विमान भी मार गिराए

डोनेस्क, लुहांस्क और खार्कीव में भीषण लड़ाई जारी

एजेंसी

कीव। यूक्रेन के बंदरगाह शहर ओडेसा में अमेरिका और यूरोपीय देशों से आई हथियारों की खेप को रूसी मिसाइलों ने निशाना बनाया है। इसी के साथ ओडेसा के नजदीक स्थित सैन्य हवाई पट्टी को भी नष्ट कर दिया गया है। रूसी रक्षा मंत्रालय ने बताया है कि हमले में उच्च क्षमता वाली ओनिक्स मिसाइलों का इस्तेमाल किया गया। मंत्रालय ने यह भी बताया कि शनिवार को खार्कीव के नजदीक रूस के डिफेंस सिस्टम न हमले के उद्देश्य से आए यूक्रेनी वायुसेना के दो सुखोई-24 एम लड़ाकू विमानों को मार गिराया है। पूर्वी यूक्रेन के डोनेस्क, लुहांस्क प्रांतों और खार्कीव शहर पर कब्जे के लिए रूसी हमले जारी हैं। इस बीच पोलैंड में नाटो के हजारों सैनिकों ने युद्धाभ्यास शुरू कर दिया है। अभ्यास कर रहे सैनिक पूर्वी यूरोप के कई देशों से यहां पर आए हैं। यूक्रेन युद्ध के चलते यह अभ्यास महत्वपूर्ण माना जा रहा है। रूसी सैनिकों के घेरे वाले मारीपोल की अजोवस्टाल स्टील फैक्ट्री से रविवार को दो बारे में कुल 100 नागरिक निकले और वे नजदीकी शहर जपोरीजिया पहुंच गए हैं। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने इसके लिए संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरस का आभार जताया है। गुटेरस की पहल पर बनी सहमति के आधार पर इन लोगों को फैक्ट्री से सुरक्षित निकाला गया है। निकाले गए लोगों में ज्यादा महिलाएं और बच्चे हैं। ये लोग फैक्ट्री परिसर में पिछले दो महीने से थे। फैक्ट्री के विशाल परिसर में करीब दो हजार सैनिकों और विदेशी लड़ाकों के होने का अनुमान है। इनमें से करीब 600 घायल हैं। रूसी सेना आत्मसमर्पण की शर्त पर इन्हें बाहर आने की अनुमति देने को तैयार है।

श्रीलंका में सरकार के खिलाफ लोगों ने मनाया 'काला मई दिवस'

एजेंसी

कोलंबो। श्रीलंका में अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस के अवसर पर लोगों ने सरकार के खिलाफ 'काला मई दिवस' मनाया । इस बीच श्रीलंका के विपक्षी नेता सजिथ प्रेमदासा ने राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे नीत सरकार पर निशाना साधा और कहा कि आजादी मिलने के बाद से देश अब तक के सबसे बड़े आर्थिक संकट का सामना कर रहा है और लोग इस साल 'काला मई दिवस' मना रहे हैं।

प्रेमदासा ने मौजूदा हालात के लिए सरकार की ''गलत नीतियों'' को जिम्मेदार ठहराया। समाचार वेबसाइट 'कोलंबो पेज' की रिपोर्ट के मुताबिक, विपक्षी दल समागी जन बालवेगया (एसजेबी) के नेता प्रेमदासा ने अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस के अवसर पर साझा किए गए संदेश में कहा कि गोटबाया राजपक्षे नीत मौजूदा सरकार की ''लापरवाही भरी नीतियों'' ने इतिहास में पहली बार देश को दिवालिया होने की कगार पर ला खड़ा किया है।

भारतीय मूल के नंद मूलचंदानी बने सीआईए के पहले मुख्य तकनीकी अधिकारी

वाशिंगटन। भारतीय मूल के आईटी विशेषज्ञ नंद मूलचंदानी को अमेरिका की केंद्रीय खुफिया एजेंसी (सीआईए) में पहला मुख्य तकनीकी अधिकारी नियुक्त किया गया है। उनके नियुक्ति की घोषणा सीआईए निदेशक विलियम जे बर्न्स ने की। सीआईए के ट्वीट में कहा गया कि सीआईए निदेशक विलियम जे. बर्न्स ने नंद मूलचंदानी को सीआईए का पहला मुख्य तकनीकी अधिकारी (सीटीओ) नियुक्त किया है। मूलचंदानी यह सुनिश्चित करेंगे कि एजेंसी सीआईए के अभियानों में अत्याधुनिक नवाचारों का लाभ उठाए। सीआईए ने एक बयान में कहा कि सिलिकॉन वैली के साथ ही रक्षा विभाग में काम करने के 25 वर्षों से अधिक के अनुभव के साथ मूलचंदानी सीआईए में निजी क्षेत्र, स्टार्टअप और सरकार की दक्षता को लेकर आएंगे। वहीं मूलचंदानी ने कहा कि मैं इस भूमिका में सीआईए में शामिल होकर सम्मानित महसूस कर रहा हूं और एजेंसी के प्रौद्योगिकीविदों और डोमेन विशेषज्ञों के दल के साथ काम करने को लेकर उत्साहित हूं।

पूर्व पीएम पर जमकर बरसीं मरियम नवाज

इमरान खान की अयोग्यता से देश में बढ़ी बेरोजगारी और महंगाई

एजेंसी

इस्लामाबाद। पीएमएल-एन की नेता और नेशनल असेंबली की सदस्य मरियम औरंगजेब ने पूर्व पीएम इमरान खान की नीतियों की जमकर आलोचना की है। उन्होंने आरोप लगाया है कि इमरान खान की अयोग्यता का दंश ही देश की जनता झेल रही है। उनके मुताबिक इमरान की गलत नीतियों की बदौलत ही देश में महंगाई सातवें आसमान पर पहुंच गई। उनके चलते ही देश में बेरोजगारों की संख्या में जबरदस्त इजाफा हुआ। इस्लामाबाद में हुई एक पत्रकार वार्ता में उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री रहते हुए इमरान खान ने अपने अधिकारों का गलत इस्तेमाल किया। सत्ता की ताकत का फायदा उन्होंने मौजूदा पीएम शहबाज शरीफ समेत अन्य नेताओं को फंसाने के लिए किया। रेडियो पाकिस्तान के मुताबिक मरियम ने कहा कि पीएम के अपने कार्यकाल में इमरान खान ने केवल पीएमएल-एन के खिलाफ मुहिम चलाने के लिए किया। उन्होंने कहा कि ये देश की जनता ही है जिन्होंने अपने चुने गए सदस्यों को ये अधिकार दिया कि वो इमरान खान को बाहर का रास्ता दिखा सकें। इस पत्रकार वार्ता में मरियम से इमरान खान को मिले गिफ्ट के बाबत भी सवाल किए गए। इनके जवाब में मरियम ने कहा कि इमरान खान ने तोशेखाना के महंगे तौहफों को अपने पास रख लिया। इसमें साढ़े दस करोड़ की एक बीएमडब्ल्यू कार भी शामिल है। मरियम के मुताबिक इमरान को एक पिस्तौल भी गिफ्ट की गई थी, जिसका जिक्र तोशेखाना के रिकार्ड में नहीं किया गया। इसको वहां पर रजिस्टर्ड ही नहीं किया गया। उन्होंने आरोप लगाया कि इमरान खान ने पीएम रहते हुए इसको अवैध रूप से अपने पास रखा। सऊदी अरब की मस्जिद ए नबावी में पीएम शहबाज शरीफ के पहुंचने पर लगाए गए चोर-चोर के नारे पर भी मरियम ने इमरान खान को ही दोषी ठहराया। उन्होंने कहा पीएम के खिलाफ नारेबाजी करने वालों को इमरान खान ने ही वहां पर भेजा था। इस मामले में पाकिस्तान पुलिस ने 150 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। इसमें खुद इमरान खान का नाम भी शामिल है। इस मामले को स्थानीय व्यक्ति मुहम्मद नईम ने रजिस्टर्ड कराया है। जियो टीवी के मुताबिक इमरान खान के अलावा इसमें फवाद चौधरी, शहबाज गिल, कासिम खान सूरी, शेख राशिद शफीक, अनील मुसरत समेत अन्य लोगों का नाम शामिल है।

दक्षिण कोरिया में कोरोना के 20,084 नये मामले

एजेंसी

सियोल। दक्षिण कोरिया में पिछले 24घंटे में कोरोना वायरस (कोविड-19) महामारी के 20,084 नये मामले सामने के साथ ही देश में संक्रमितों की संख्या 17,295,733 हो गयी हैं। स्वास्थ्य अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी हैं। स्वास्थ्य अधिकारियों ने बताया कि नये मामलों में से 26 बाहर से आये लोगों के मामले हैं। यह संख्या अब 31,997 हो गई हैं। उन्होंने बताया कि देश में गंभीर मरीजों की संख्या 32 घटकर 461 हो गई हैं। उन्होंने बताया कि इस दौरान 83 लोगों की हुई है। जिससे इस बीमारी से मरने वालों की संख्या बढ़कर 22,958 हो गई। मृत्यु दर 0.13 प्रतिशत है।

पाकिस्तानी सिंगर के आरोप के बाद कनिका ने दिया जवाब, अपने गाने बूहे बारियाँ को बताया ओरिजिनल गाना

बॉलीवुड सिंगर कनिका कपूर का नया गाना रिलीज होते ही विवादों में फंस गया है। कनिका कपूर इंडस्ट्री की सबसे पॉपुलर सिंगर्स में से एक हैं। वह इस समय अपने नए गाने बुहे बरियान की वजह से सुर्खियां बटोर रही हैं। गाने को उनके फैंस का शानदार रिस्पॉन्स मिला है। गाना सारेगामा के प्रोडक्शन में बना है। कनिका का ये गाना पाकिस्तानी सिंगर हदिका कियानी के गाने बूहे बारियाँ से इंस्पायर्ड है लेकिन पाकिस्तानी सिंगर हदिका कियानी ने कनिका पर उनका गाना चुराने का आरोप लगाया है। जिसके बाद कनिका मुश्किल में पड़ गईं। हदीका ने दावा किया कि यह उनकी मूल रचना थी, जिसमें उनकी मां ने कविता लिखी थी। अब कनिका ने गाना चुराने के आरोप के बारे में चुप्पी तोड़ते हुए खुलासा किया है। कनिका का कहना है की ये गाना बिलकुल नया है बस ओरिजिनल गाने के दो बोल लिए गए है। कनिका ने कहा मैं और म्यूजिक इंडस्ट्री का हर वह व्यक्ति जिसे मैं जानती हूँ, हम हमेशा पाकिस्तान, अफगानिस्तान, भारत के उत्तर, पंजाब से आने वाले संगीत के बहुत बड़े प्रशंसक रहे हैं। यह दुख की बात है कि एक विषय पर इतनी नफरत है, जो हम यह भी नहीं जानते कि क्या सही है और क्या गलत। मेरा मतलब है, मेरे लिए, हमने एक मूल गीत बनाया है जुनेजा जी ने गीत लिखा है, श्रुति ने इस गीत को गौरव दासगुप्ता के साथ बनाया है, और एक पुराने पंजाबी लोक गीत की एक पंक्ति का उपयोग किया है जो सुना जा रहा है। कनिका ने आगे कहा मैं या गाने जुड़ा कोई भी व्यक्ति किसी को ठेस नहीं पहुँचाना चाहता है और अगर ऐसा हुआ है तो मैं तहे दिल से माफी मानती हु। अगर कोई उन गाने पर अधिकार का दावा कर रहा है, तो इसमें मैं कुछ नहीं कर सकती। लेकिन मेरा किसी को परेशान करने का कोई इरादा नहीं था। मेरे मन में पाकिस्तान के सभी साथी गायकों के लिए बहुत प्यार और सम्मान है, और मैं उनका अनुसरण करना और प्यार करना जारी रखूंगी। उनका संगीत। साथ ही, मुझे लगता है कि लोगों को धर्म और देश को एक गीत के बीच में नहीं लाना चाहिए। आपको बता दे इससे पहले पाकिस्तानी सिंगर ने बॉलीवुड म्यूजिक इंडस्ट्री पर पाकिस्तानी गानों को चुराते आने का आरोप लगाया था। ये किस्सा कनिका के नए गाने के रिलीज होने के बाद हुआ था।

चीन में इमारत के मलबे से 50 घंटे बाद दो लोगों को बचाया गया

एजेंसी

बीजिंग। मध्य चीन में एक इमारत ढहने के 50 से अधिक घंटे बाद उसके मलबे से दो लोगों को जिंदा निकाला गया, अब भी बड़ी संख्या में लोग मलबे में फंसे हैं या लापता हैं। सरकारी समाचार एजेंसी 'शिन्हुआ' ने बताया कि पुलिस ने इस मामले में इमारत के मालिक सहित नौ लोगों को गिरफ्तार किया है। सरकारी प्रसारक सीसीटीवी द्वारा जारी किए गए एक वीडियो में कुछ बचाव कर्मी रविवार को स्थानीय समयानुसार शाम करीब साढ़े चार बजे एक महिला को 'स्ट्रेचर' पर मलबे से बाहर लाते दिखे, जबकि कुछ लोग अभियान के दौरान राहत कर्मियों का उत्साह बढ़ाने के लिए नारे लगाते दिखे। सीसीटीवी ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि महिला को अस्पताल ले जाया गया है। सरकारी मीडिया ने बताया कि एक और व्यक्ति को मलबे से जिंदा निकाला गया है, लेकिन इस संबंध में कोई विस्तृत जानकारी नहीं दी। दोनों लोगों को रविवार को ही मलबे से बाहर निकाला गया। गौरतलब है कि हुनान प्रांत की राजधानी चांगशा में शुक्रवार दोपहर को गिरी इमारत के मलबे से अभी तक सात लोगों को निकाला गया है। मलबे में अब भी 20 लोग फंसे हुए हैं,वहीं शनिवार देर रात से 39 लोग लापता हैं। पुलिस ने बताया कि इमारत के मालिक के अलावा इमारत का डिजाइन बनाने तथा निर्माण करने वाले तीन लोगों के अलावा पांच उन लोगों को गिरफ्तार किया, जिन्होंने इमारत के चौथे से छठे तल के बीच अतिथि गृह के लिए कथित तौर पर गलत सुरक्षा आकलन रिपोर्ट दी थी।

'काला साड़ी' गीत को मिले 50 लाख से ज्यादा व्यूज

एजेंसी

मुंबई। भोजपुरी इंडस्ट्री में बेहतरीन सिंगर की लिस्ट में शुमार ट्रेंडिंग सिंगर शिल्पी राज का सांग 'काला साड़ी' दर्शकों के बीच बड़ी ही तेजी से रन कर रहा है। ये गीत खाटी भोजपुरी स्टाइल में गाया व फिल्माया गया है। इस सांग को अब तक रिलीज हुए महज 13 दिन हुए हैं और इसे भोजपुरिया दर्शकों ने भी 5 मिलियन यानी 50 लाख से भी ज्यादा व्यूज दिए हैं।

इस सांग में शिल्पी का साथ भोजपुरी इंडस्ट्री की सुपरहॉट एंड बोल्ड अभिनेत्री माही श्रीवास्तव ने दिया है। उन्होंने गाने में एक अलग अंदाज में परफॉर्म करके सबका मन मोह लिया है। 'काला साड़ी' को वर्ल्डवाइड रिकार्ड्स भोजपुरी के ऑफिसियल यूट्यूब चैनल पर देखा व सुना जा सकता है। शिल्पी राज का ये भोजपुरी सांग भी उनके अन्य गानों की तरह ही यूट्यूब पर माहौल बना रहा है। इस गाने को जमकर यूट्यूब पर सर्च किया और देखा जा रहा है। इस गाने के वीडियो में माही श्रीवास्तव नजर आ रही हैं। शिल्पी राज की आवाज और माही की अदाएं भोजपुरिया दर्शकों को अपना दीवाना बना रही हैं। इस गाने को बेहतरीन लोकेशन पर शूट किया गया है। वीडियो में माही की केमिस्ट्री अपने को-स्टार के साथ सुपर से ऊपर वाली है। शिल्पी राज और माही श्रीवास्तव के इस भोजपुरी गाने 'काला साड़ी' को विजय चौहान ने लिखा है और संगीत आर्या शर्मा ने दिया है। इसकेनिर्माता रत्नाकर कुमार हैं। इसका निर्देशन भोजपुरिया ने किया है। इस गाने के वीडियो को गोल्डी जयसवाल और बॉबी जैक्सन ने कोरियोग्राफ किया है और इसे एडिट मीत जी ने किया है। इसके प्रोडक्शन हेड की जिम्मेदारी जुबैर शाह और पंकज सोनी ने निभाई हैं।

जरीन खान ने बताया अपनी शादी का प्लान,बिग बॉस के इस कंटेस्टेंट को कर रही हैं डेट

बॉलीवुड अभिनेत्री जरीन खान इन दिनों सलमान खान के रियलिटी शो बिग बॉस के सीजन 12 के चर्चित कंटेस्टेंट शिवाशीष मिश्रा को डेट कर रही हैं। दरसअल ये दोनों पिछले एक साल से एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं। वही जरीन खान और शिवाशीष मिश्रा को अक्सर साथ में देखा जाता है। वहीं ऐसी भी अफवाह है कि यह दोनों जल्द शादी कर सकते हैं। ऐसे में जरीन खान ने खुद शिवाशीष मिश्रा से शादी को लेकर प्रतिक्रिया दी है।तो क्या कहा हैं जरीन खान ने जानते हैं इस रिपोर्ट में। दरसअल जरीन खान ने हाल ही में एक अंग्रेजी वेबसाइट से बातचीत की। जहां उन्होंने फिल्मों के अलावा अपनी निजी जिंदगी को लेकर भी ढेर सारी बातें कीं। वही जरीन खान ने कहा है कि अभी उनकी शादी का कोई प्लान नहीं है क्योंकि वे दोनों अभी तक एक-दूसरे को समझ रहे हैं। वखि जरीन खान ने यह भी कहा कि वह एक खुश और

सुरक्षित रिश्ते में हैं। साथ ही ब्वॉयफ्रेंड शिवाशीष मिश्रा की तारीफ भी की है। वही अभिनेत्री ने आगे कहा की, कार्ड पर कोई शादी नहीं है। खैर, शिव और मैं एक-दूसरे को जान रहे हैं। एक साल हो गया है और अब जब से हमने एक-दूसरे को जानना शुरू किया हैं,तब तो मैंने महसूस किया है कि शिव मेरे जैसे ही इंसान हैं और मुझे लगता है कि यही कारण है कि उनके साथ जाना आसान हो जाता है। मैं अभी शिवाशीष के साथ मैं बहुत खुश हूंय मैं शादी जैसी किसी भी चीज में अभी कूदना नहीं चाहती हूं। वही जरीन खान ने बताया की, ईमानदारी से कहूं तो मेरी सोचने की प्रक्रिया काफी अलग है। मैं साथ रहने में विश्वास करती हूं, बजाय शादी की मुहर लगाने के। शादी इस बात की गारंटी नहीं देती है कि आपकी जिंदगी में रहने वाला इंसान हमेशा के लिए साथ रहेगा। मैं कोई मजाक नहीं कर रही हूं, यह मेरी निजी राय है। बाकी देखते हैं यह कहां और कैसे होगा। दरसअल जरीन खान और शिवाशीष मिश्रा पिछले साल उस वक्त सुर्खियों में आ गए थे, जब दोनों को गोवा में एक साथ देखा गया था। पिछले साल अगस्त में यह कपल गोवा में वेकेशन मना रहा था। और अपने वेकेशन की तस्वीरों और वीडियो को जरीन खान और शिवाशीष मिश्रा ने सोशल मीडिया पर भी शेयर की थी। जिसके बाद खुलासा हुआ था कि यह दोनों एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं।

अभिनेता यश ने तंबाकू कंपनी के विज्ञापन को ठुकराया

मुंबई। दक्षिण भारतीय फिल्म अभिनेता यश ने तंबाकू कंपनी के लिए विज्ञापन करने से मना कर दिया है। सूत्रों के अनुसार, अभिनेता यश ने पान मसाला और इलायची के विज्ञापन को अस्वीकार कर दिया। यश के लिए विज्ञापन देखने वाली एजेंसी ने कहा कि कुछ दिन पहले ही हमने एक पान मसाला कंपनी के करोड़ों रुपए के विज्ञापन के ऑफ़र को मना किया है। अभिनेता अपने प्रशंसक और चाहने वाले को सही संदेश देना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि पान मसाला और ऐसे उत्पादों से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। यह लोगों के लिए खतरनाक है। यश ने इस ऑफर को ठुकरा दिया है। यह ऑफ़र हालांकि काफी आकर्षक था। गौरतलब है कि हाल ही में रिलीज हुई अभिनेता यश की फिल्म केजीएफ चैप्टर-2 ने बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचाते हुए, 1,000 करोड़ रुपए कमाई करने वाली फिल्मों की सूची में शामिल हुई है। इससे पहले दक्षिण भारत के अभिनेता अल्लु अर्जुन ने भी करोड़ों रुपए के तंबाकू के विज्ञापन को करने से मना कर दिया था।

चेयरमैन एवं प्रधान सम्पादक - राकेश कुमार पाण्डेय कार्यकारी सम्पादक* - अरशद सईद खान सह सम्पादक* - धर्मेन्द्र कुमार गुप्ता

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश कुमार पाण्डेय द्वारा सरस्वती प्रिंटर्स वाटर वर्क्स रोड ऐशबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं सी-46, कृष टॉवर, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ, पिन-226010 से प्रकाशित। * इस अंक में प्रकाशित सभी समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पीआरबी एक्ट के तहत उत्तरदायी।

समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय क्षेत्र के ही अधीन होंगे। फोन नं। 0522-4249333 फैक्स नं.- 4249333 e-mail : info@kanwhizztimes.com RNI NO - UPHIN/2012/42063